एक सी बी टी प्रकाशन

जासूसों का षड्यन्त्र

नीलिमा सिन्हा

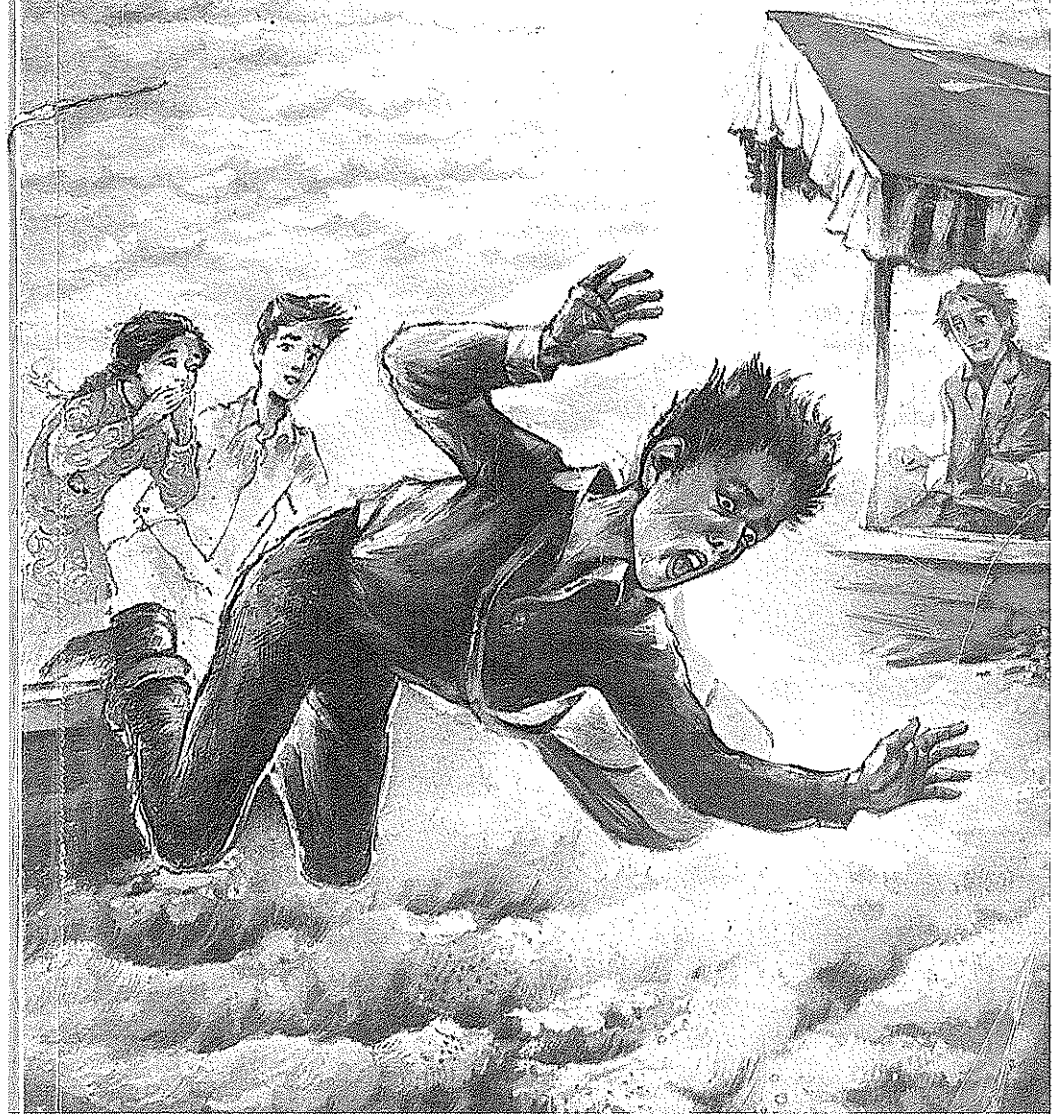

जासूसों का षड्यन्त्र

लेखिकाः नीलिमा सिन्हा
चित्रकारः मृणाल मित्र

चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली

चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट द्वारा आयोजित बाल-साहित्य लेखक प्रतियोगिता में 'एडवेन्चर ऑन दी गोल्डन लेक' को फिक्शन वर्ग में द्वितीय पुरस्कार मिला था।

'जासूसों का षड्यन्त्र' इसका हिन्दी रूपान्तर है। लेखिका नीलिमा सिन्हा को 'दी चांदीपुर जुअल्स' और 'दी वैनिशिंग ट्रिक एट चांदीपुर' नामक पुस्तकों के लिये भी पुरस्कार मिल चुका है।

JASUSON KA SHADYANTRA

© चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट 1991

ISBN 81-7011-336-9

चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट, नेहरु हाउस, ४ बहादुर शाह ज़फर मार्ग, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित और ट्रस्ट के मुद्रणालय इन्द्रप्रस्थ प्रेस, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित।

पर्वतीय पदयात्रा

"वह देखो। वह रहा गांव। आखिर आ ही गया।" दूर, पर्वतीय ढलानों पर खतरनाक तरीके से टिकी झोंपड़ियों के समूह की ओर संकेत करते हुये अजीत चिल्लाया।

नीना के पांव दर्द कर रहे थे। वह रुक कर सुस्ताने लगी। वह थककर चूर हो गई थी और हांफ रही थी। तीनों बच्चे दुर्गम चढ़ाई तथा घुमावदार पहाड़ी रास्ते पर नौ किलोमीटर पैदल चल चुके थे।

"अहा, कितना सुंदर दृश्य है" अपने भाई, अजीत तथा आनंद को कुछ क्षण रोकने की आशा से नीना ने कहा। अजीत ने लापरवाही से कंधे उचका दिये, पर आनंद ने मुड़ कर बेचैनी से कहा, "उफ् नीना, जल्दी करो! इस समय दृश्य निहारने की किसको फुर्सत है?"

"हमें जल्दी ही आरू पहुंचना चाहिये," अजीत ने समझाते हुये कहा, "बारिश होने ही वाली है। देखा नहीं, कैसे घने बादल छाये हैं? हमें बचाव के लिये तुरंत स्थान ढूंढ़ना होगा।"

नीना ने गहरी सांस ली और पुनः साहस बटोरा। अजीत ने ठीक ही कहा था। उन्हें उस गांव तक शीघ्र पहुंच जाना चाहिये अन्यथा वे तूफान में बुरी तरह फंस जायेंगे। वह चट्टान पर से धीरे-धीरे उठी। उसके जुड़वां भाई फिर फुर्ती से कदम बढ़ाते आगे बढ़ गये थे। राह में एक छोटा-सा बरसाती नाला बह रहा था। उन्होंने छलांग मार कर बड़ी सरलता से उसे पार कर लिया। नीना ने सावधानी से किनारे-किनारे रास्ता निकाला। उसे डर था कहीं पांव फिसलने से वह पानी में गिर कर भीग न जाये।

लड़के फिर अदृश्य हो गये। नीना ने भी दृढ़ता से कदम बढ़ाये। उसकी टांगें दुख रहीं थीं। घुटने तथा पांव लोहे के समान भारी प्रतीत हो रहे थे। परंतु भला वह हार कैसे मानती? आखिर इस पदयात्रा पर आने के लिये उसने स्वयं ही तो आग्रह किया था।

मेहता परिवार लंबी छुटिट्यां बिताने कश्मीर आया था। एक पुराने दीर्घकालीन रोग के पश्चात् डॉक्टरों ने मां को मौसम बदलने की सलाह दी थी। पहलगाम के एक हरे-भरे स्थान में, देवदार वृक्षों के बीच बना छोटा-सा घर पिताजी ने किराये पर लिया था। श्रीमती मेहता में अब भी इतनी शक्ति नहीं थी कि वह घर से बाहर निकल सकें। उनके पति उनकी सेवा शुश्रूषा में व्यस्त थे। तीनों बच्चे घर ही में रहने को लाचार हो गये। दोनों जुड़वां भाइयों को खेलकूद तथा दौड़ना-भागना अधिक भाता था। वे ऊब उठे। उन्होंने पिता से आग्रह किया कि उन्हें किसी निकटतम पहाड़ी स्थान तक पैदल घूमने की अनुमति दी जाये। श्री मेहता को यह स्वीकार करना ही पड़ा। आरू जाने का निश्चय किया गया। कोलाहाई ग्लेशियर (धीरे-धीरे सरकती बर्फ की चट्टान) के रास्ते पर आरू पहला पड़ाव पड़ता था। उस छोटे कस्बे में रात बिताने के लिये पहले से ही कमरे की व्यवस्था कर दी गई थी।

नीना ने भी जाने की जिद पकड़ी। दोनों भाइयों ने आनाकानी की। अपनी छोटी बारह वर्षीय बहन को वे अपने साथ नहीं ले जाना चाहते थे। नीना के आने से उनकी गति धीमी हो जायेगी। परंतु नीना ने अपने सुंदर गुलाबी होंठ इस दृढ़ता से भींचे कि उन्हें मानना ही पड़ा।

तीनों प्रातः ही नाश्ता करके निकल पड़े थे। आरम्भ में सब कुछ सुहावना लगा था। हवा शीतल व लुभावनी थी। राह के प्रत्येक मोड़ पर नवीन व अद्भुत दृश्य दीख पड़ते। कहीं ऊंची बर्फीली हिमालय की चोटियां आकाश को छूती मिलतीं तो कहीं दूर-दूर तक हरे-भरे मैदान फैले दिखते। नीचे, बहुत दूर एक गहरी घाटी थी। यहां लिड्डर नदी बल खाती, फेन उगलती, राह में आई बड़ी-बड़ी चट्टानों को लुड़काती और शां-शां का शोर मचाती बह रही थी। चारों ओर के पेड़ों से भरी घनी चीड़ पर्वत की ऊंची-ऊंची श्रृंखलायें थीं।

बच्चे आपस में बातचीत तथा हंसी-ठट्ठा करते फुर्ती से आगे बढ़ते गये। राह में अन्य यात्रीगण भी मिले। नीना ने देखा उनमें अनेक लड़कियां भी थीं। वे अधिकतर विदेशी थीं। पीठ पर नैपसैक (थैला) लादे वे दो या तीन की टोलियों में दृढ़ गति से चल रहीं थीं। अगर वे इस कठिन सफर को तय कर सकती थीं तो वह भी कुछ कम नहीं थी। इस विचार ने नीना को एक नई स्फूर्ति दी।

जैसे-जैसे वे अधिक ऊंचाई तथा पर्वतीय श्रृंखलाओं में घुसते गये, नीना अपने चौदह वर्षीय जुड़वां भाइयों के मुकाबले पिछड़ती गई। और अगले मोड़ पर नीना ने दोनों को अधीरता से प्रतीक्षा करते पाया।

"क्यों कछुए की चाल से चल रही हो?" आनंद ने उसे देखते ही जोर से कहा, "तुम जल्दी-जल्दी कदम नहीं उठा सकतीं क्या?"

"चलो, अब दूर नहीं रहा," अजीत ने प्रोत्साहित किया। "हमें गांव तो नजर आ ही गया है। क्यों नजर नहीं आया क्या?"

"पर हर बार वह और भी दूर खिसक जाता है," नीना ने शिकायत की, "हम जितना आगे बढ़ते हैं, गांव उतना ही दूर लगता है। उफ्, मैं तो थक गई हूं।"

"गलती किसकी है," आनंद ने डांट लगाई। वह आगे बढ़ा, "तुम्हें किसने कहा था हमारे साथ आने को?"

"अब रहने भी दो," अजीत बोला, "कोई कम साहस नहीं दिखाया नीना ने! चलो, बारिश में भीगना है क्या?"

"न...नहीं।"

नीना ने दृष्टि ऊपर उठाई। आकाश में अंधेरा घिर आया था। घनी काली घटाओं के आंचल में सूर्य ने मुंह छिपा लिया था। पर्वतों ने भी पूर्व परिचित हरी-भरी व लुभावनी आकृति छोड़ काला व भयावना रूप धारण कर लिया था। हवा बंद और वातावरण घुटनभरा (उमसपूर्ण) प्रतीत हो रहा था। कैसा बदल गया था मौसम। नीना कांप उठी।

"लगता है तूफान आ रहा है," नीना ने सहमे स्वर में कहा।

"सही कह रही हो," अजीत ने हामी भरी, "बात कुछ गंभीर है आनंद, क्या करें हम?"

"जल्दी के सिवाय कर भी क्या सकते हैं? हमें अब भागना होगा। केवल चलने से काम नहीं चलेगा।" आनंद के स्वर में भय का पुट था।

अजीत ने बहन के संग कदम मिलाये। नीना को एक-एक पग उठाना कष्टदायक व भारी लग रहा था। किसी प्रकार वे अगले मोड़ तक पहुंच पाये। जिस गांव ने उन्हें अब तक अपनी ओर आकर्षित किया था वह फिर अदृश्य हो गया था। दोनों भाई रुक गये। कहीं उन्होंने गलत मोड़ तो नहीं ले लिया?

तभी आनंद की दृष्टि एक अन्य यात्री पर पड़ी। वह जल्दी-जल्दी पग बढ़ा रहा था।

"क्या यही है आरू का रास्ता?" उसने पूछा।

"हां," उत्तर मिला, "तुम्हें लगभग एक किलोमीटर और चलना होगा। अच्छा होता यदि तुम वहां जल्दी पहुंच जाते। अन्यथा पहाड़ी तूफान के चपेट में आ जाओगे।" आगन्तुक ने घिरते अंधकार पर दृष्टि डाली, अपने फिरन (कश्मीरी वस्त्र) को कस कर शरीर से लपेटा और तेजी से चलता बना।

नीना का दिल धड़क उठा। पहाड़ी तूफान? उसमें फंसना अत्यन्त खतरनाक होगा। उसने भी कदम तेज किये।

पांच मिनट बाद ही बारिश की प्रथम मोटी बूंदें उसके गाल पर गिरीं। साथ में हवा का एक तेज झोंका आया। अगले ही क्षण नीना को लगा जैसे किसी ने उसे ऊपर हवा में उछाल दिया है। वह आंधी के तेज झोंके में फंस गई थी। गहरी घाटी, चारों और ऊंचे पर्वत—उनके बीच फंसी हवा पागल व क्रोधित हो पहाड़ों से टकराती तथा फुफकारती रही। नन्हें कंकड़, धूल व सूखी पत्तियां आंधी की लपेट में आकर ऊपर उड़ते, चक्कर खाते और फिर धरती पर आ गिरते।

नीना का फ्राक उसकी टांगों के चारों ओर फड़फड़ा रहा था। काले बाल टोपी से निकल कर चेहरे पर लहराने लगे। उसने उड़ते धूल कणों से चेहरे को बचाने के लिए दोनों हथेलियों से चेहरा ढांप लिया।

तूफान में पैर बढ़ाना असम्भव हो गया। तीनों असहाय से खड़े रह गये। आंधी ने सब तरफ से घेर लिया। हवा के बाद ओले बरसने लगे। ठंडे-ठंडे श्वेत बर्फीले टुकड़े उन पर गोलियों की बौछार की तरह पड़ने लगे।

"आगे बढ़ें," अजीत ने साहस किया। उसने नीना का हाथ थामा और खींचा, "आओ साथियो आओ। सर उठाओ, कदम बढ़ाओ।"

किसी तरह तीनों ने दो-चार डग और लिये।

आंधी और तेज हो गई। दोनों भाइयों ने बहन की बांहों को थाम कर उसे अपने साथ आगे खींचा।

"हमें... बचाव... के लिये... स्थान... ढूंढ़ना चाहिये," आनंद ने कहा, "अब... ऐसे... काम नहीं चलेगा।"

मगर कहीं कुछ नजर नहीं आ रहा था। एक तरफ ऊंची, पथरीली चट्टानें खड़ी थीं तो दूसरी ओर थी गहरी, अंधेरी खाई।

एक-दूसरे को सहारा देते, हांपते, किसी प्रकार बच्चे आगे बढ़ते गये। तूफान के थमने के कोई लक्षण नजर नहीं आ रहे थे। सड़क भी वर्षा से कीचड़ होने के कारण खतरनाक हो गयी थी। एकाएक नीना का पांव फिसला। वह चीखी और गिरने लगी। पर भाग्यवश गिरने से पहले ही उसे अजीत ने सम्भाल लिया।

"अ... अब नहीं चला जाता।" नीना की आंखों में आंसू छलक आये। वह रोने लगी। वह उन्हें रोकने का प्रयत्न करने लगी। दोनों भाई यह देखकर ज़रा घबरा गये।

"अरे हिम्मत करो, हार मत मानो," अजीत ने ढारस दिया और आनंद ने उसकी पीठ थपथपाई।

"घबराओ मत, जल्दी ही सब ठीक हो जायेगा।"

पर ठीक कुछ नहीं हुआ। हवा फुफकारती तथा टकराती रही और ओले वैसे ही शरीर को बेधते रहे।

एकाएक आनंद ने एक हाथ उठाया, "अजीत, तुमने सुना?"

"नहीं!" अजीत चिल्लाया, "मुझे तो केवल आंधी का शोर ही सुनाई देता है।"

"फिर सुनो! किसी की आवाज! जैसे कोई पुकार रहा हो!"

नीना ने भी कान खड़े किये। आवाज कानों में आई, परन्तु धीमे-धीमे।

"ह...लो! हलो!"

स्वर लड़की का था। अचंभित हो नीना ने दृष्टि घुमाई। इस बियावान, आंधी-तूफान से घिरे स्थल में भला कौन हो सकता था? कुछ फीट ऊपर, चट्टानों में छिपी एक छोटी-सी गुफा थी। एक पत्थर ऊपर छत की तरह टिका हुआ था। गुफा सुरक्षित तथा सूखी लग रही थी। यहां नीली बरसाती पहने दो आकृतियां सिमट कर बैठी थीं। एक ने बांह हिलाकर उनका ध्यान आकर्षित किया। दूसरी लड़की ने फिर पुकारा।

"ह... ल... लो।"

आनंद ने भी हाथ हिला कर उत्तर दिया, "हलो!"

"मुसीबत में हो?" लड़की ने अंग्रेजी में कहा, "ऊपर आ जाओ।"

लड़के झट मान गये। वे सम्भल-सम्भल कर पांव रखते हुये ऊपर चढ़ने लगे। आनंद ने फिसलने से बचने के लिये मजबूत डालियों तथा जड़ों का सहारा लिया और पीछे-पीछे अजीत भी चढ़ने लगा। ऊपर पहुंचते ही उसने झुक कर नीना की सहायता के लिये हाथ बढ़ाये। कुछ ही क्षण में तीनों गुफा के अंदर थे—आंधी तथा वर्षा से दूर व सुरक्षित।

गुफा में बैठी आगन्तुक लड़कियों ने नीना का मुस्कराकर स्वागत किया, "बेचारी लड़की।" एक ने सहानुभूति प्रकट की, "बड़ी परेशानी रही। लेकिन तुम जल्दी ही ठीक हो जाओगी।"

"चिन्ता मत करो," दूसरी बोली, "तूफान शान्त हो जायेगा। पहाड़ी तूफान अधिक देर नहीं टिकते। कुछ ही क्षण में सूरज फिर चमकने लगेगा।"

आरू में

लड़कियों ने ठीक कहा था। सूर्य दस मिनट बाद पुनः प्रकट हो गया। पर्वत ऐसे शांत तथा मौन हो गये जैसे तूफान कभी आया ही न हो। इस विश्राम ने बच्चों को एक नई ताजगी दी। आगन्तुक लड़कियों ने उन्हें चाकलेट, बिस्कुट खाने के लिए तथा थर्मस से गर्म-गर्म कॉफी पीने को दी। नीना ने कृतज्ञता प्रकट की।

"इसकी क्या आवश्यकता है?" छोटे-छोटे सुनहरे केश तथा नीली आंखों वाली लड़की ने हंसते हुए अंग्रेजी में कहा। "मेरा नाम है ऐन। इंग्लैंड की ऐन ब्राऊन।"

"और मैं हूं जेन फिलिप्स। विशाल शहर लंदन की। अवश्य ही उस बुरे शहर का नाम तुमने सुना होगा," दूसरी लड़की मुस्कराई। उसके बाल काले तथा आंखें हरी थीं।

नीना भी शर्माते हुये मुस्कराई। "मेरा नाम नीना मेहता है।" उसने मैत्री का हाथ बढ़ाया। उसके भाई संकोच में डूबे चुप खड़े थे। नीना ने उनका परिचय कराया, "ये हैं मेरे भाई अजीत और आनंद।"

"मिल कर खुशी हुई," पदयात्रियों ने कहा। वे चलने की तैयारी में थीं। "अब चलें। गुडबाई।"

उन्होंने अपना थैला उठा कर पीठ पर लादा, फिर शीघ्रता से पहाड़ से नीचे उतर गईं। कुछ ही क्षणों में मोड़ से आगे निकल वे आंखों से ओझल हो गईं।

अब कहीं आनंद का मुंह खुला। "देखा, क्या तेज चाल है? और इधर हम हैं, नीना की कछुआ गति पर चलने को लाचार।"

"क्यों नीना चलें कछुए की चाल या घोड़े की चाल!" अजीत ने बहन को चिढ़ाया।

नीना भाइयों के पीछे द्रुत गति से चलने लगी। उसने निश्चय किया अब वह भी उन अंग्रेजों की तरह चुस्त तथा फुर्तीली बनेगी।

मौसम सुबह की भांति फिर सुहावना हो गया था।

कुछ समय पश्चात् उन्होंने एक लकड़ी का पुल पार किया। पुल एक मचलते, शोर मचाते झरने पर बना था। कुछ गज दूर एक लकड़ी की तख्ती पर लिखा मिला—'आरू'। आगे हरे-भरे, ऊंचे नीचे मैदान थे। उनमें यहां-वहां कच्चे घर बिखरे हुए थे। एकाध ईंट-पत्थर के मकान भी बीच-बीच में दिखाई दे रहे थे। पीछे नील गगन में हिम से लदी श्वेत चोटियां गर्व से मस्तक ऊंचा किये दृष्टिगोचर हो रहीं थीं।

"पहुंच गये, पहुंच गये।" आनंद चिल्लाया। वह आगे दौड़ा।

"हिप हिप हुर्रे!" अजीत भी झूम उठा।

रास्ता बाईं ओर एक आधुनिक ईंट चूने के पक्के होटल की दिशा में मुड़ गया। बच्चों का भी मन हुआ कि वे उधर ही जा कर आराम करें, किन्तु उनके लिये डाक बंगले में कमरा सुरक्षित था। उन्होंने डाक बंगले का रास्ता पूछा। लकड़ी का वह छोटा-सा बंगला एक हरी-भरी पहाड़ी पर बना हुआ था। आनंद दौड़ कर वहां पहुंच गया। बाकी दोनों के आगमन से पूर्व ही उसने चौकीदार से बातचीत आरम्भ कर दी थी। उनके लिये एक कमरा खोला गया। यद्यपि वहां ऐसी कोई विशेष साज-सामग्री नहीं थी फिर भी उन थके-हारे पथिकों को उस समय वह स्वर्ग समान लग रहा था। नीना खुशी-खुशी बिस्तर पर जा गिरी। लड़के आराम से आरामकुर्सियों पर डट गये और गीले मोजे-जूते उतारने लगे।

चौकीदार ऊंचे कद का हंसमुख व्यक्ति था। उसने नीना से चाय तथा रात्रि के भोजन के विषय में पूछा। चावल-दाल व अंडे की तरकारी का आर्डर देते समय नीना को खूब मजा आया। जैसे वह भी बड़ों की गिनती में आ गई हो।

"पहले चाय बनाऊं?" चौकीदार ने पूछा, "चाय और बिस्कुट। ठीक है मेमसाहब?"

नीना ने प्रसन्नतापूर्वक सिर हिला कर सहमति दी।

"मेरा नाम गुलाम रसूल है," चौकीदार ने बताया। "पहलगाम से खबर आयी—बच्चों का खयाल रखना। हम सब करेगा। तुम खाली बताना।"

"बहुत अच्छा!" आनंद ने कहा, वह उछल कर उठा और बंगले का निरीक्षण करने लगा। "कितना आरामदेह है यह स्थान। सोचता हूं..."

तभी एक स्वर कानों में पड़ा, "हलो? कोई है?"

गुलाम रसूल बाहर निकला और पूछा, "क्या मांगता?" बच्चों ने उसका प्रश्न सुना।

"कमरा। है?" किसी ने अंग्रेजी में पूछा।

"नहीं, भर गया।"

"हमें सोने के लिये स्थान की आवश्यकता है। बिस्तर खाट न होने से भी चलेगा। केवल सिर छिपाने के लिये छत चाहिये। अन्धेरा हो चला है और कहीं जगह खाली नहीं है।"

नीना ने स्वर पहचान लिया। यह वही लड़कियां थीं जिन्होंने तूफान में उनकी सहायता की थी।

"नो रूम, सॉरी," रसूल ने दोहराया।

"ओ गॉड, हम अब कहां जायें?" जेन के स्वर में घबराहट थी।

अजीत तथा नीना ने एक-दूसरे को देखा।

"हमें उनकी मदद करनी चाहिये," अजीत बोला।

"बिलकुल करनी ही चाहिये!" कहते हुये नीना बाहर भागी।

"आप हमारे साथ ठहरें।" उसने विदेशियों से आग्रह किया।

"सच? यह तो बहुत अच्छा होगा।" ऐन ने कृतज्ञता प्रकट की। "हम पहले उस बड़े होटल में गये। परन्तु वह अधिक महंगा लगा। इस कारण हम यहां आ गये।"

खुश होकर दोनों यात्रियों ने अपने नैपसैक नीचे रखे। उस बड़े कमरे में पांचों आराम से जम गये। कुछ क्षणों में लड़कों का आरम्भिक संकोच दूर हो गया। लड़कियों ने भी अपनी गम्भीरता छोड़ दी। सब घुल-मिलकर गपशप मारने लगे।

"मेरे जुड़वां भाई बिलकुल एक से लगते हैं, क्यों?" नीना ने पूछा। अब तक ऐन तथा जेन नामों का सही उच्चारण करने में सफल हो गई थीं।

प्रथम दृष्टि में अजीत तथा आनंद सचमुच हूबहू एक लगते थे। पर ध्यान से पुनः देखने पर अनेक भेद नजर आते। दोनों ही लंबे तथा दुबले थे। दोनों के बाल भी लंबे तथा घने थे। और दोनों के ही एक गाल पर मुस्कराते समय गड्ढे खिल उठते थे। नाक-नक्शा भी उनका एक समान था। परन्तु इस समानता का यहीं अन्त हो जाता था, क्योंकि उनके चेहरों पर उनके व्यक्तित्व के अनुसार बिलकुल भिन्न भाव थे।

अजीत का शौक था फोटोग्राफी। वह एक शान्त, गम्भीर तथा विचारशील लड़का था। इसके विपरीत आनंद एक तेज व अत्यन्त चंचल लड़का था। उसके व्यक्तित्व में चंचलता का भाव दिखाई देता था। वह झट संतुलन खो बैठता और क्रोधित हो जाता। उसे हर प्रकार के खेल-कूद में रुचि थी और उनमें कुशलता भी प्राप्त थी।

नीना ने सब बातें अपने नये मित्रों को बताईं। उत्तर में उन्होंने भी अपने विषय में जानकारी दी। वे डॉक्टरी पढ़ रही थीं। नौकरी करने से पूर्व उन्होंने संसार देखना चाहा और सैर करने निकल पड़ीं। यूरोप, टर्की, ईरान आदि से होते हुये वे अंत में भारत आईं। निचले मैदानी क्षेत्र में भीषण गर्मी थी। इस कारण उन्होंने कश्मीर घूमने का निश्चय किया। वे हिमालय के पहाड़ों पर पदयात्रा करने आ गईं, और अब वे कोलाहाई नामक ग्लेशियर को देखने जा रही थीं।

लड़कियों की साहसिक भावना ने दोनों भाइयों को बेहद प्रभावित किया। मन ही मन दोनों ने भी इस प्रकार कुछ करने की योजना बनाई।

अजीत को ऐन का कैमरा बहुत पसन्द आया। उसने हिचकते हुये पूछा, "क्या मैं इसे देख सकता हूं?"

"हां, हां, क्यों नहीं?" ऐन ने उत्तर दिया, "यह नवीनतम मॉडल है। लाओ मैं बताऊं इससे कैसे फोटो खींचते हैं।"

नीना की इच्छा हुई कि वह उनके सोने के बैग (स्लीपिंग बैग) में रात्रि बिताये। उसने और जेन ने स्थान बदले। जेन बिस्तर पर सोई तो नीना स्लीपिंग बैग में।

आरू की प्रभातवेला अत्यन्त सुहानी थी। यात्रीगण सुबह-सुबह जाग गये। फिर बाहर बैठ उन्होंने सूर्य देवता का आगमन निहारा। उगते सूर्य के हलके प्रकाश ने ऊंचे-नीचे शिखरों को एक सुनहली दीप्ति से आलोकित कर दिया।

नाश्ते में उन्होंने आलू के गरम-गरम परांठे खाये। फिर सब बाहर आ गये। अजीत को चित्र खींचने को कहा गया। ऐन के कैमरे से उसने पूरी टोली का, डाक बंगले के सम्मुख चित्र खींचा।

और फिर विदाई की बेला आ गई।

"मुझे आशा है हम फिर मिलेंगे," जेन ने विदा लेते हुये कहा।

"आप श्रीनगर कब लौटेंगी?" नीना ने उत्सुकता प्रकट की, "शायद हम फिर उधर मिलें।"

आनंद को कोलाहाई ग्लेशियर के विषय में विशेष रुचि थी। "मैं भी देखना चाहता था, पर पिताजी ने उतनी दूर अकेले जाने की अनुमति नहीं दी।"

"कोई बात नहीं," ऐन ने उत्तर दिया, "हम ढेर सारे चित्र लायेंगे। यदि तुम हमारे घर श्रीनगर आओ तो मैं तुम्हें वे चित्र दिखाऊंगी।"

"सच?" दोनों भाइयों ने एक स्वर में पूछा।

"अवश्य।" जेन बोली, "हम दोनों हाउसबोट (नाव जिनमें रहा जाता है) में रहेंगी। वह श्रीनगर की डल झील पर स्थित है। नाम है 'रोजबड' (गुलाब की कली)। अवश्य आना।"

"समय निर्धारित कर लिया जाये," ऐन ने सुझाव दिया, "चार तारीख को शाम चार बजे। कैसा रहेगा? हम साथ बैठ कर चाय पीयेंगे।"

उन्होंने एक-दूसरे से विदा ली। दोनों पदयात्री चले गये।

"कितनी भाग्यशाली हैं," आनंद ने कहा, "कोई रोकटोक लगाने वाले माता-पिता नहीं है।

रोजबड

कुछ दिन पश्चात् मेहता परिवार श्रीनगर आ गया। बच्चे अंग्रेज लड़कियों से मिलने की बात प्रायः भूल ही गये थे। इस नये स्थान में काफी कुछ करने को था। श्रीनगर में उनका निवास स्थान डल झील पर खड़ा एक हाउसबोट था। चारों ओर पानी ही पानी था। जब भी उन्हें बाहर जाने की अथवा सैर करने की इच्छा होती उन्हें नाव द्वारा झील पार करनी पड़ती। तभी वे सड़क पर पहुंचते। उन्हें वहां खूब मजा आता। वे नाव खेने का प्रयास करते या सड़क के किनारे लगी दुकानों का चक्कर काटते। जब अचानक नीना को मुलाकात की बात याद आई तब चार तारीख की दोपहर हो चुकी थी।

आनंद ने रशीद को पुकारा। रशीद उनके हाउसबोट के मालिक का ग्यारह वर्षीय पुत्र था। था तो वह छोटा ही पर नाव खेने में वह किसी भी वयस्क की बराबरी कर सकता था। बच्चों को उस पार खेने तथा लौटा लाने का काम उसी को सौंपा गया था। वह एक हंसमुख तथा उतावला लड़का था। उन्हें नाव में सैर कराने के लिये वह सदैव तत्पर रहता, क्योंकि उनका साथ उसे उतना ही भाता जितना मेहता परिवार को रशीद का।

आनंद ने भोजन कक्ष में लगे लकड़ी के दरवाजे सरका कर खोले। "रशीद!" उसने पुकारा।

ढीला-ढाला फिरन पहने एक लड़का दौड़ा आया। हाउसबोट के पिछवाड़े दूसरी बोट में हाउसबोट का मालिक सपरिवार रहता था। बोटों के बीच लगी लकड़ी की तख्तियां पुल का काम देती थीं। रशीद ने दौड़ कर पुल पार किया।

"जी? तुम बुलाया?" उसने पूछा। वह एक गोरा, दुबला लड़का था जिसके बाल भूरे तथा आंखें हलकी स्लेटी थीं।

"शिकारा ले आओ, रशीद।"

रशीद ने अपना छोटा-सा शिकारा (गद्दियों आदि से सजी नाव) हाउसबोट के सामने लकड़ी की सीढ़ी के निकट लाकर खड़ा कर दिया। तीनों शिकारे में बैठ गये।

"आज मैं चलाऊंगा।" अजीत ने कहा। उसने रशीद के हाथों से चप्पू ले लिया।

"नहीं, मैं," आनंद चिल्लाया। "कल तुमने चप्पू चलाया था। आज मेरी बारी है।"

उसने उछल कर चप्पू अजीत से छीनना चाहा। शिकारा डगमगा गया। नीना गिरते-गिरते बची। वह भयभीत हो चीखी।

"लड़ाई नहीं," रशीद हंसा। झुक कर उसने नीचे से एक दूसरा जोड़ा चप्पू उठाया। "देखो, मेरे पास दो और हैं।"

नीना व रशीद एक छोर पर बैठे। दोनों भाई दूसरे छोर पर। चप्पू पानी में डाल उन्होंने ठीक वैसा ही खींचा जैसा रशीद को करते देखा था। पर आगे बढ़ने के बजाय नाव लेकिन केवल चक्कर खाने लगी।

"ऐसे नहीं," हंसते हुये रशीद ने समझाया, "पीछे धक्का देना। दायां हाथ उठाना। हां, ऐसा!"

इस बार शिकारा तेजी से लपकते हुये झील में गड़े एक कुंडे से जा टकराया। नीना ने शिकारे के दोनों किनारे कस के थाम लिये।

"इस तरह हम खाक पहुंचेंगे।" उसने कहा, "हम ऐसे ही चक्कर काटते या आगे-पीछे डोलते रहेंगे। रशीद को चलाने दो शिकारा।"

लड़कों ने उसे खिन्न दृष्टि से देखा और चप्पू छोड़ने से इनकार कर दिया पर कुछ मिनट बाद उन्हें नीना की बात माननी पड़ी, क्योंकि शिकारा जहां का तहां खड़ा रह गया था।

रशीद के कुशल हाथों में शिकारा तेजी से सरक चला। नीना की जान में जान आई। वह आसपास तैरते शिकारों को देखने लगी। उनके नाम देख वह मुस्करा उठी। 'सागर जीवन', 'रानी शेबा', 'सुनहला मधु', 'सागर महाराज', 'राजा का कैमरा', इत्यादि नाम उसने शिकारों पर लटकी तख्तियों पर पढ़े।

आते-जाते शिकारों में लोग ठाठ से गद्दियों पर विश्राम कर रहे थे। बाजू से एक मोटरबोट धड़धड़ाती हुई निकली। पानी को चीरती हुई जब वह निकट से गुजरी तो उनका नन्हा-सा शिकारा लहरों में ऊपर-नीचे हिचकोले खाने लगा।

संकरी झील कुछ देर में अधिक चौड़ी हो गई। एक किनारे हाउसबोटों की पंक्ति थी। प्रत्येक हाउसबोट में नक्काशीदार लकड़ी की दीवारें थीं। खिड़कियों में रंग-बिरंगे पर्दे लटके थे। ऊपर रंगीन तख्तियों पर हाउसबोट के नाम लिखे थे। झील के दूसरे तट पर एक चौड़ी सड़क थी। इस पर यातायात और लोगों की भीड़भाड़ थी। सड़क के बाजू में दुकानें थीं। पीछे घने वृक्षों से सजा शंकराचार्य पर्वत सर ऊंचा किये खड़ा था। पर्वत की चोटी पर विराजमान था एक पुराना मंदिर।

"वह शिव मंदिर है," रशीद ने नीना को बताया। आसपास लगे हाउसबोटों की भी उसे पूरी जानकारी थी। वह उन्हें रोजबड (गुलाब की कली) नामक हाउसबोट की ओर ले चला।

दो विशाल हाउसबोटों के बीच डटा वह एक छोटा-सा रंगीन हाउसबोट था।

अगल-बगल के बोट उससे कहीं अधिक भव्य तथा सुसज्जित थे। रोजबड में सामने एक छोटा-सा बरामदा था जहां गमलों में खिले गुलाब सजावट में चार चांद लगा रहे थे। सामने छत पर बड़ी तख्ती थी। उस पर लिखा था: "हा॰ बो॰ रोजबड। सुपर डीलक्स। गर्म तथा ठंडा पानी। मालिक-गुलाम कादिर।" नीना ने पढ़ा।

"वह रहा," उत्तेजित स्वर में आनंद चिल्लाया। वह ऊपर उछला।

"सावधान!" अजीत ने कहा। अचानक उछलने से शिकारा जोरों से डगमगाया। हाउसबोट की खिड़कियां बंद थीं तथा पर्दे गिरे थे। "लगता है यहां कोई नहीं है," अजीत को आश्चर्य हुआ। "ठीक याद है? उन्होंने चार तारीख को बुलाया था?"

"हां, समझ नहीं आता, इधर इतनी शांति क्यों है?" नीना ने उत्तर दिया।

रशीद ने शिकारा सीढ़ी के पास लगाया। जब तक वे ऊपर चढ़ें वह दृढ़तापूर्वक शिकारा थामे रहा।

"कोई है? अंदर है कोई?" आनंद ने आवाज़ दी। बरामदे का चक्कर लगा वह खिड़कियों की दरारों से भीतर झांकने का प्रयास करने लगा।

"कोई नहीं। अजीब मामला है। क्या वे पहलगाम में ही रह गयीं? या किसी दूसरी जगह चली गयीं?" उसने पूछा।

"ठहरो।" रशीद बोला, "हम पीछे जायेगा। मालिक को बुलायेगा।"

बगल में लगी लकड़ी की पटरियों पर दौड़ते हुये वह रोजबड के पिछवाड़े गया। पीछे एक मामूली हाउसबोट जिसे डूंगा कहते हैं में नाव का मालिक कुटुम्ब सहित रहता था। रशीद एक ढीला-ढाला काला फिरन पहने व्यक्ति के साथ लौटा। वह ऊंचे कद का था। उसके बाल अधपके थे। नाक लंबी व टेढ़ी थी।

"गुलाम कादिर, हाउसबोट का मालिक," उनको बताया गया।

"हां, क्या चाहिये?" आवाज रूखी थी। उस व्यक्ति ने अपनी भूरी, खिन्न आंखों से उन पर संदेहपूर्ण दृष्टि डाली।

आनंद ने अंग्रेज लड़कियों से भेंट की बात बताई। व्यक्ति अब भी संशय से उन्हें देख रहा था। नीना को ताज्जुब हुआ।

"कोई लड़की-वड़की नहीं।" अंत में उत्तर मिला, "दिखता नहीं? अब जाओ।"

"पर उन्होंने आप के बोट का नाम बताया था," आनंद ने जोर देकर कहा, "क्या यह रोजबड नहीं है? वे यहां नहीं आई क्या?"

"नहीं मालूम। हम बोला, "यहां कोई नहीं!" कादिर ने उत्तर दिया।

"पर वे यहां आई थीं या नहीं?" आनंद उत्तेजित हो रहा था, "या आकर फिर चलीं गई?"

"वो नहीं आया" कादिर बोला।

"तुम्हें खूब पता है हम किसके बारे में पूछ रहे हैं," अजीत ने चतुराई से अनुमान लगाया, "ठीक बताओ। पहलगाम जाने से पहले वे लड़कियां इधर ठहरी थीं या नहीं?"

अन्त में बड़ी अनिच्छा से उस व्यक्ति ने स्वीकार कर ही लिया। विदेशी युवतियां उसके ही बोट में ठहरी थीं। कुछ दिन पूर्व वे पहाड़ों पर सैर करने चली गई थीं। उन्होंने लौट कर पुनः यहीं ठहरने को कहा था। उनके लिये बोट रिजर्व (सुरक्षित) भी रखा गया था।

"पर वो नहीं लौटा!" कादिर बोला, "पता नहीं क्यों। अब जाओ।"

इससे पहले कि वे और प्रश्न पूछते कादिर ने मुड़कर सामने का दरवाजा खोला और वह अंदर चला गया। अजीत निकट ही खड़ा था। द्वार पुनः बंद होने से पूर्व उसे कमरे के अंदर की झलक साफ दिखाई दे गई।

कमरा सुन्दर व पुष्पों से सुसज्जित था। अंदर गलीचे और सोफे बिछे थे। सामने दीवार से सटा एक दीवान था। अजीत की निगाह दीवान पर पड़ी। उस पर एक नीला बरसाती कोट पड़ा था। बगल में पड़ी वस्तु को अजीत ने झट पहचान लिया।

वह था लाल कपड़े में सुरक्षित कैमरा। कुछ ही दिन पहले आरू के डाक बंगले में अजीत ने उसे देख कर सराहा था।

एक रहस्य

दीवान पर पड़े कैमरे का महत्व अजीत को तब समझ आया जब वे पुनः शिकारे में बैठ चुके थे। अचानक बात समझ में आते ही उसके हाथों से चप्पू छपाक् से पानी में जा गिरे। अजीत ने माथे पर हाथ मारा। "कैमरा!" चिल्लाते हुये वह उछल पड़ा।

"सावधान!" रशीद चिल्लाया। शिकारा फिर डगमगाया। रशीद ने चतुराई से दूर बहते चप्पू को लपक कर पकड़ लिया।

"ध्यान से," आनंद चिल्लाया, "देखो भला। आज मस्ती किसे सूझ रही है? लोग बेकार ही मुझे 'जंगली' कहते हैं।"

"सॉरी!" अजीत ने क्षमा मांगी, "सुनो, तुमने कैमरा देखा?"

"कैसा कैमरा? वह रहा, सीट के नीचे," आनंद ने अजीत के कैमरे की ओर संकेत किया।

"मैं उस के बारे में नहीं कह रहा," अजीत बोला, "मैं तो दूसरे कैमरे की बात कर रहा था।"

"चारों ओर तुम्हें कैमरे ही कैमरे नजर आते हैं," आनंद भुनभुनाया, "किस के विषय में कह रहे हो?"

"मेरा तात्पर्य ऐन के कैमरे से है। मैंने उसे हाउसबोट के दीवान पर पड़ा देखा। कैसे आया वहां? जब वे लड़कियां लौटी ही नहीं?" अजीत के माथे पर बल पड़ गये।

"यह कैसे मालूम कि उसका कैमरा है?" आनंद ने पूछा, "उस कैमरे से मिलते-जुलते हजार कैमरे होंगे।।"

"न...नहीं। मैंने उस लाल कवर को पहचान कर ही कहा है। मत भूलो, मैं काफी देर तक कैमरे को हाथ में लिए था," अजीत ने जोर देते हुये कहा।

आनंद ने बेचैनी से कंधे उचकाये। "भूल भी जाओ। तुम अकारण ही उसे रहस्यमय बना रहे हो। संभव है, लड़कियों ने मिलने का इरादा बदल दिया हो। उन्होंने कादिर को कहा हो वे किसी से मिलना नहीं चाहतीं। छोड़ो हम क्यों चिन्ता करें? हम भी उन अशिष्ट लड़कियों को भूल जायें, जिन्होंने स्वयं बुलाया, फिर मिलने से इनकार कर दिया। रशीद, लाओ नाव मुझे खेने दो।"

मगर नीना को विश्वास नहीं हो रहा था। "लड़कियों ने भला इरादा क्यों बदला होगा? वे इतनी भली थीं। उन्होंने इतनी दोस्ती दिखाई," उसने धीमे, दुखी स्वर में कहा। "वे भला मिलने से इनकार क्यों करेंगी? आखिर उन्होंने स्वयं हमें न्योता दिया था।"

"आनंद ठीक ही कह रहा है," अजीत ने नीना को सान्त्वना देनी चाही, "हो सकता है वे दूसरे काम में व्यस्त हो गई हों या थकी हों और अंदर आराम कर रही हों।"

"उफ्, बहुत हुआ। रोजबड को भूल जाओ। उन बेवकूफ लड़कियों को भी," आनंद का सुझाव था। "चलो, सामने की दुकान से कुछ ठंडा पिया जाये।"

शिकारा घाट पर रोक दिया गया। तीनों ने उतर कर दुकान में शर्बत पिया। अजीत को याद आया कि पिताजी ने समाचार पत्र लाने को कहा था। अखबार लेकर वे घाट लौटे।

लौटते समय आनंद ने चप्पू थामे। नीना आसपास के शिकारों को देखती रही।

अजीत ने समाचार पत्र में आखें गड़ा लीं।

अचानक वह सीधा उठ बैठा। तीसरे पन्ने में एक समाचार छपा था। लिखा था— 'यात्रा के दौरान लड़कियां लापता' अजीत ने बाकी पंक्तियों पर झट-पट दृष्टि दौड़ाई। 'लड़कियां जिनके नाम थे ऐन ब्राऊन तथा जेन फिलिप्स, अंतिम बार आरू में दिखाई दी थीं। आरू पहलगाम के निकट है। उनके परिवार को खबर भेजी जा रही है।'

समाचार पढ़ते ही अजीत चीख पड़ा। "अब क्या हुआ?" आनंद ने पूछा, "क्या हुआ है आज तुम्हें?"

अजीत ने समाचार पढ़ कर सुनाया। आनंद ने एक लम्बी सांस ली। नीना चकित तथा भौचक्क-सी हो गई। आखिर नीना धीमे स्वर में बोली, "बेचारी लड़कियां। क्या हुआ होगा?"

"वे कितनी भली थीं," आनंद ने अब स्वीकार किया, "हम घोर मुसीबत में थे, जब उन्होंने हमारी मदद की। पता नहीं, वे खो कैसे गईं?"

"हो सकता है वे फिर किसी भयंकर तूफान में फंस गई हों," अजीत ने अपने विचार प्रकट किये, "या किसी खतरनाक खाई में गिर गई हों।" अचानक उसे कुछ सूझा, "पर सुनो, वह कैमरा वहां कैसे आया? जब लड़कियां आरू से लौट कर आई नहीं तो उनका सामान रोजबड में कैसे आया?"

तीनों चकित आंखों से एक-दूसरे का मुंह देखने लगे। बात अवश्य चौंका देने वाली थी। आखिर आनंद ने कहा, "मैंने कहा न, कैमरा उनका था ही नहीं।" वह हंसा।

"पर मुझे पूरा विश्वास है कि कैमरा ऐन का ही था।

"तुम्हें भ्रम हो रहा है।"

"बिलकुल नहीं। वहां कैमरा था अवश्य, एक ठोस वस्तु। इस तरह का भ्रम भला कैसे हो सकता है?"

"मैंने कहा न, वह किसी और का था?"

"नहीं। मैं बताऊं हमें उस बोट पर फिर जाना चाहिये। कादिर से ठीक से पूछताछ करने के लिए।"

"नहीं, नहीं।" नीना ने घबरा कर कहा, "वह बहुत बुरा व अशिष्ट आदमी था। मैं फिर उससे कदापि मिलना नहीं चाहूंगी।"

भाइयों ने अगली सुबह रोजबड लौटने की योजना बनाई। इस बार नीना के बगैर। गुलाम कादिर हाउसबोट के सामने बरामदे में खड़ा होकर खिड़कियों पर नीले

सफेद धारियों वाला तिरपाल डालने में व्यस्त था। बोट आकर्षक लग रही थी। दरवाजे व खिड़कियां पूरी खुली थीं और अंदर के सजे कमरों की झलक दिखाई दे रही थी। बोट नये मेहमानों के स्वागत की प्रतीक्षा में खड़ी थी। सामने एक ओर 'खाली' की तख्ती लगी थी।

"तुम फिर आया?" लड़कों पर दृष्टि पड़ते ही कादिर की त्योरियां चढ़ गईं, "अब क्या चाहिये?"

"हमें कुछ सवाल पूछने हैं," अजीत ने शिष्टता से उत्तर दिया।

आनंद बोट पर चढ़ गया। वह कमरों के अंदर झांकने लगा। क्या कैमरा व बरसाती अब भी दीवान पर पड़े होंगे? लेकिन वे वहां नहीं थे।

अजीत द्वारा अगला प्रश्न पूछने से पूर्व ही आनंद ने चटपट समाचार पत्र कादिर के सामने बढ़ाया, "इसे पढ़िये।" वह बोला।

व्यक्ति घबरा कर पीछे हटा, "क्यों, क्या है?"

"इसमें लिखा है दो लड़कियां, ऐन ब्राऊन तथा जेन फिलिप्स कोलाहाई की राह से गायब हो गईं।"

अजीत उस व्यक्ति के चेहरे पर दृष्टि जमाये था। कादिर मुड़ कर बोट की लकड़ी की दीवार पर से धूल झाड़ने लगा। उसने कोई उत्तर नहीं दिया।

"तब? आपका क्या विचार है? क्या हुआ होगा उन लड़कियों का?" आनंद ने जानना चाहा।

"पहाड़ पर एक्सीडेंट (दुर्घटना)," कादिर का उत्तर था, "हम इन्तजार करता। अब मालूम लड़की क्यों नहीं आता।"

आनंद ने उस पर कठोर दृष्टि डाली। फिर स्पष्ट शब्दों में उसने पूछा, "मेरे भाई ने ऐन का कैमरा और कोट आपके बोट में देखा। वे यहां कैसे आ पहुंचे?"

एक क्षण के लिये कादिर के नेत्रों में घबराहट की झलक दिखाई दी। पर फीकी-सी मुस्कान चेहरे पर लाते हुये वह बोला, "यहां नया मेहमान आया। अभी यहां नहीं है। तुम उनका कैमरा देखा।"

इस बार अजीत ने कहा, "नहीं। मैं ऐन का कैमरा खूब अच्छी तरह पहचानता हूं। कुछ ही दिन पहले मैंने उससे चित्र खींचे थे।"

"तुम गलत बोलता।" वह अचानक बौखलाते हुये बोला। ओंठ बिचका कर तथा आंखें भींच वह चिल्लाया, "जाओ! हम काम करता। बात का टाइम नहीं। जाओ।"

हाउसबोट के मालिक ने अपना संतुलन खो अजीत को एक धक्का दिया। फिर

चीखा, "बोला न वह नहीं आया? जाओ। नहीं तो हम पुलिस बुलायेगा।"

अजीत गिरते-गिरते बचा। बरामदे के चारों ओर लगे जंगले को पकड़ उसने अपने को सम्भाला। वह हक्का-बक्का हो देखता रहा। पर भाई के प्रति इस दुर्व्यवहार को आनंद सह नहीं सका। वह भी लाल-पीला हो गया। हाउसबोट के मालिक को घूंसा दिखाते हुये वह चिल्लाया, "पुलिस? मैं भी पुलिस बुला सकता हूं। मेरे भाई को धक्का दोगे? तुम्हारी यह हिम्मत?"

"छोड़ो आनंद।" अजीत ने भाई को रोका। वह आनंद को खींच कर एक तरफ ले गया। "चलो, लड़ने से कोई फायदा नहीं।"

अपने जुड़वां भाई को उसने शिकारे में ले जा कर बिठाया, "रशीद, चलो।"

आनंद अब भी क्रोध में बड़बड़ा रहा था और विरोध कर रहा था। लेकिन शिकारा आगे बढ़ गया।

"चलो, हम सड़क पर टहलें," अजीत ने सुझाव दिया, "बाजार से चेरी खरीदें। रशीद शिकारा उस ओर ले चलो।"

रशीद ने शिकारे को तट पर लगाया। अजीत भाई को सड़क की ओर ले चला। तेजी से चहलकदमी करने के पश्चात् आनंद का क्रोध शांत हुआ। उन्होंने रास्ते में खाने के लिये लाल रसीली चेरी का एक पैकेट खरीदा।

घाट पर लौटने पर उन्होंने रशीद को एक छोटे से अजनबी से बातचीत करते पाया। वह बगल के शिकारे में खड़ा था। लड़कों के निकट पहुंचने पर दोनों नाविकों ने सिर उठाये। नन्हीं, झुकी आकृति ने अपना चेहरा उनकी ओर घुमाया। दोनों लड़के उस चेहरे को देख ठगे से खड़े रह गये। अजीत के हाथ से चेरी का पैकेट गिरते-गिरते बचा।

उस नन्हें शरीर पर एक हंसमुख परंतु झुर्रीदार चेहरा था। होठों के ऊपर बड़ी-बड़ी मूंछें थीं। वह एक छोटा-सा बौना व्यक्ति था।

एक सूत्र

लड़कों को हक्का-बक्का देखकर उस छोटे मनुष्य की आंखों में हंसी की चमक आ गई। रशीद ने भी हंसते हुए अपने नन्हें मित्र के दुबले कंधे थपथपाये।

"मेरा दोस्त छोटू," उसने बताया, "बच्चे जैसा बदन का आदमी। देखा? जो मूंछ देखता वह घबराता। हा हा!"

उनके चकित चेहरे देख दोनों कश्मीरियों की हंसी रोके न रुक रही थी। अजीत व आनंद की भी हंसी फूट पड़ी। जब वे फिर शिकारे में बैठ गये तब बौना उनकी ओर झुका। अब उसके चेहरे पर गम्भीरता थी, मुस्कराहट गायब हो गई थी। बारीक, ऊंचे स्वर में उसने पूछा, "साब, तुम दो विदेशी लड़की खोजता?"

आनंद ने आंखें उठाते हुए पूछा, "क्या तुम उनके बारे में कुछ जानते हो?"

बौने ने अपने नन्हें सिर को जोरों से हिलाया। ओठों पर उंगली रखते हुये उसने सावधान रहने को कहा, "शशश," फिर दोनों को निकट खिसकने को कहा।

"सुनो," वह फुसफुसाया, "हम जो देखा वो बताता। उस रात दो लड़की आया। हम देखता। हमारा बोट कादिर के पास, सो हम सब सुना। हम बाहर झांका। दो मेमसाब आता। शिकारे में कादिर के साथ सवेरे बोट में कोई नहीं हम पूछा, कादिर, रात को जो लड़की देखा, नया मेहमान—वो किधर गया? कादिर बोला, कौन मेहमान? हम बोलता, लड़की। और वह हमको मारा। समझाया? कोई नहीं। वह फिर बोलता और हमारा बांह मरोड़ता। कोई लड़की नहीं अच्छा, हम बोला। हम मुंह बंद किया, बोला, रोजबड में कोई लड़की नहीं।"

अजीत बौने और उनकी बातों में खोया चुपचाप सुनता रहा। मगर आनंद से शांत नहीं रहा गया, "मैं जानता था। उसने झूठ बोला। पर क्यों?"

"शशश," बौने ने फिर चुप कराया। आंखों की पुतलियों को ऊपर-नीचे नचाते हुये उसने इधर-उधर देखा। कहीं किसी ने सुना तो नहीं। निश्चित होने पर उसी बारीक व अजीब फुसफुसाहट से उसने कहा, "पर साब। हम लड़की खुद देखा। अपनी आंखों से। लेकिन हम डरता। कादिर बड़ा ताकतवाला। इसलिये साब, हम चुप रहता, ठीक न?"

"तुमने पुलिस को क्यों नहीं कहा?" आनंद ने पूछा।

बौने ने आंखों को फिर आकाश की ओर नचाया। जोर से बांह हिलाते हुये वह बोला, "पुलिस? नहीं साब, कभी नहीं। वो आता हाउसबोट में। सवाल पूछता। हम पसंद नहीं करता। टूरिस्ट (पर्यटक) डर के भागता। हाउसबोट के वास्ते टूरिस्ट बहुत जरूरी, साब।"

उसने ठीक कहा था, अजीत जानता था। पर्यटक इसी मौसम में आते थे और उनके आने से हाउसबोट के मालिकों की अच्छी आमदनी होती। इसी पैसे से वे शरद ऋतु के कठिन दिन काटते। जाड़े में पर्यटक नहीं आते थे। पर्यटक उनके जीवन निर्वाह के लिये अति आवश्यक थे। इस कारण सब हाउसबोट मालिक बदनामी से दूर रहना चाहते थे।

एकाएक रशीद उछला और खड़ा हो गया। झट से चप्पू उठा वह जल्दी-जल्दी खेने लगा।

"क्या हुआ?" आनंद चिल्लाया, "क्यों तुम..."

अजीत ने बीच में टोका, "चुप। वह देखो कादिर। वह हमें छोटू से बात करते पकड़ न ले।"

आनंद ने एक लाल व सफेद शिकारे को घाट की ओर आते देखा। चप्पू कादिर के हाथों में थे।

"कहीं उसने देखा तो नहीं?" वह बुदबुदाया।

"लगता तो नहीं। रशीद ने बचा लिया। उसने समय पर शिकारा वहां से हटा लिया।"

"कादिर यदि यह जान जाये कि छोटू हमसे बातें कर रहा था तो छोटू की शामत आ जायेगी। बेचारा। उस हृष्टपुष्ट कादिर से वह कितना डरता है।"

थोड़ी देर बाद वे अपने हाउसबोट पर लौट आये। भोजन का समय हो चुका था। नीना मां और पिताजी के साथ खाने की तैयारी में थी।

"क्या हुआ। इतनी देर कहां हुई?" उसने चिन्तित स्वर में पूछा।

अजीत ने मुंह बंद रखने का संकेत दिया। लड़कियों के गायब होने की खबर देकर वह मां को परेशान नहीं करना चाहता था।

"कुछ नहीं। हम सैर करने चले गये थे," उसने बताया, "हमने चेरी खरीदी। बड़ी स्वादिष्ट है। तुम भी चखो।"

"अभी नहीं। पहले खाना खा लो," मां ने कहा।

आनंद बर्तनों के ढक्कन खोलने लगा। वह देखना चाहता था कि आज बोट मालिक ने भोजन में क्या बनाया था।

"आज 'गुश्तबा' बना है," श्रीमती मेहता मुस्कराते हुये बोलीं। "मैंने खास कश्मीरी व्यंजन पकाने के लिये कहा था। हमारे कीमे के कोफ्ते की ही तरह है, परंतु उनसे कहीं अधिक स्वादिष्ट हैं। इसको दही और मसालों में पकाया गया है। चखकर देखो।"

आनंद ने गर्म-गर्म भात पर कीमे की गोलियां परोसीं। चम्मच से उठा कर उसने एक कौर बड़े चाव से मुंह में डाला। "वाह!" वह खुशी से चिल्लाया, "क्या स्वाद है।"

"मुझे करमकल्ला का साग पसंद आया," नीना ने हरी पत्तियों की सब्जी लेते हुये कहा, "देखने में यह पालक की तरह लगता है जो मां घर में बनाती थीं। पर

खाने में कहीं ज्यादा चटपटा है। मां, तुम क्यों नहीं ऐसा साग पकातीं?''

''यह वह पालक नहीं है,'' पिताजी ने बताया, ''यद्यपि देखने में मिलता-जुलता है। यह एक दूसरी जाति की हरी पत्ती है। दिल्ली में नहीं मिलती है।''

बच्चे खाने में जुट गये।

भोजन के पश्चात् मां तथा पिताजी सोने चले गये। बच्चे सामने बैठक में एकत्र हुये।

''अब मुझे सब कुछ बताओ,'' नीना ने अपनी मांग पेश की। अजीत ने सुबह की घटनाओं के बारे में बताया।

''हमें मां-पिताजी को बता देना चाहिये,'' नीना बोली।

''नहीं,'' अजीत बोला, ''वे पुलिस को खबर देना चाहेंगे। बेचारा छोटू मुसीबत में फंस जायेगा। दूसरी बात, मां भी घबरा उठेंगी।''

''फिर क्या करें?'' नीना ने जानना चाहा। ''हमें उन लड़कियों की मदद करनी चाहिये। वे मुसीबत में होंगी।''

''बशर्ते की वे अब भी जीवित हों।'' आनंद ने बात कुछ अधिक ही स्पष्ट करनी चाही।

इस बात से नीना घबरा गई। ''नहीं नहीं। ऐसा मत कहो। वे जरूर जीवित होंगी। पर जहां भी हैं, वे खतरे में हैं। हमें जरूर कुछ करना चाहिये।''

''मगर हम कर भी क्या सकते हैं?'' अजीत विचार में डूबा था। ''उनके हाउसबोट में आने का हमारे पास कोई सबूत नहीं है। छोटू की बताई बात छोड़ हमारे पास कुछ नहीं है। वे लड़कियां उसकी बोट में आईं, यह कादिर कभी नहीं मानेगा।''

''चलो, सबूत ढूंढ़े,'' आनंद आवेश में आ गया, ''उनके पहुंचने के कुछ संकेत जरूर होंगे।''

''सबूत अवश्य हैं,'' अजीत ने टोका, ''तुम कैमरा भूल गये।''

''तो चलो, ले आयें,'' आनंद ने कहा। वह आतुरता से उछल कर खड़ा हो गया, ''यदि हम किसी तरह हाउसबोट की तलाशी लें तो हमें अनेक सबूत मिल जायेंगे। कौन जानता है, शायद लड़कियां 'रोजबड' में ही बंदी हों।''

''छोड़ो भी। असम्भव बात है।'' अजीत ने विरोध किया, ''देखा नहीं, बोट नये अतिथियों के स्वागत में खुली थी?''

''उससे क्या? हमारी बोट की ही तरह रोजबड भी तरह-तरह की साज-सामग्री से भरी होगी। वहां भी दराज, तख्तें तथा बंद अलमारियां होंगी। क्या पता, किसी गुप्त कोने में उनका सामान भी छिपाकर रखा हो।''

''हां,हां! और वे लड़कियां भी किसी गुप्त अलमारी में बंद मिलेंगी। वैसे ही जैसे ब्लू बीयर्ड नामक राक्षस अपनी बीवियों को बंद रखता था।'' अजीत ने बात हंसी में उड़ानी चाही। ''छोड़ो भी आनंद। तुम्हारे भी अजीब विचार हैं। मुझे हाउसबोट की तलाशी लेने की कोई जरूरत नहीं दिखाई देती।''

लेकिन आनंद ने मन ही मन तलाशी लेने की ठान ली थी। उसने औरों को नहीं बताया। चुपचाप जाकर उसने रशीद से सलाह की। छोटू से बात करने को कहा। छोटू को रोजबड पर निगरानी रखने को कहा गया। रास्ता खाली होते ही वह रशीद को सूचित करे ताकि आनंद तलाशी ले सके।

तलाशी

अगली सुबह ही मौका मिल गया। रशीद ने दबे पांव आकर आनंद के कानों में कहा, ''कादिर बाहर गया। तुम आयेगा?''

आनंद ने हामी भरी। उसने चारों ओर देखा। नीना अपने कमरे में व्यस्त थी। अजीत पत्र लिख रहा था। पिताजी बाहर गये थे और मां अंदर विश्राम कर रही थीं। वह भी दबे पांव निकल कर रशीद के शिकारे में जा बैठा। दोनों रोजबड की ओर रवाना हो गये।

छोटू अपने हाउसबोट के बरामदे में खड़ा था। उसने हाथ हिला कर उनका स्वागत किया।

''शिकारा इधर लाओ,'' उसने पुकारा, ''उसे पीछे छिपायेगा। फिर रोजबड जायेगा।

''हम घुसने का रास्ता जानता,'' अपने ऊंचे बारीक स्वर में छोटू चहका। खिड़की की दो तख्तियों के बीच एक छोटी दरार थी। झुक कर उसने अंदर उंगली डाली और भीतर लगे खटके को टटोलने लगा।

''हो गया!'' दो मिनट बाद वह खिड़की को सरकाते हुये खुशी-खुशी चिल्लाया। दरार संकरी थी पर उस छोटे व्यक्ति के लिये काफी थी। छोटू ने किसी प्रकार कठिनाई से अपने शरीर को अंदर ठेला। फिर आनंद के लिये उसने दरवाजा खोला।

''रशीद, बाहर निगरानी रखना।'' आनंद ने चेतावनी दी और झटपट छोटू के पीछे-पीछे अंदर चला गया।

अधिकतर हाउसबोटों का एक ही नकशा होता है। आनंद को रास्ता ढूंढ़ने में कोई

कठिनाई नहीं हुई। कमरे एक पंक्ति में थे। सामने की बैठक भोजन कक्ष में खुलती थी। भोजन कक्ष से जुड़ा एक छोटा-सा कमरा था जिसमें छत पर जाने के लिये लकड़ी की सीढ़ी थी। सीढ़ियों के पीछे बर्तन वगैरह के लिये छोटा भंडार था। आगे था एक लंबा संकरा गलियारा जिसमें दो या तीन शयनकक्ष खुलते थे। प्रत्येक शयनकक्ष के साथ स्नान व शौचघर भी थे। वे दोनों अनाधिकार प्रवेश कर गलियारे में उतरे थे। वे पहले बड़े बेडरूम में गये। वह एक सुंदर व सुव्यवस्थित कमरा था। फर्श पर बेल-बूटे कढ़े कश्मीरी नमदे बिछे थे। पलंग पर रंगीन चादर पड़ी थी। उस पर गुलाब व चिनार के पत्ते गुलाबी व हरे रेशम से कढ़े थे। यही डिजाइन खिड़कियों पर टंगे पर्दों पर भी था।

आनंद ने अलमारियों के दरवाजे खींचकर खोले। फिर बड़ी उत्सुकता से भीतर झांका। उन्हें खाली देख उसे निराशा हुई। बड़ी आशा लिए उसने ड्रेसिंगटेबल के दराज खोले और पलंग के नीचे झांका। स्नानघर की भी उसने तलाशी की। पर्यटकों की उपस्थिति का कहीं कोई संकेत नहीं मिला। वह दूसरे कमरे की ओर लपका कि शायद उधर से कुछ हाथ लग जाये। यह भी उतना ही सुंदर व साफ-सुथरा था। आनंद ने झटपट तलाशी ली, पर बेकार। फिर भी आशा लगाये वह भोजन कक्ष की तरफ दौड़ा।

इधर एक गोलमेज थी। ऊपर बारीक कढ़ाई किया हुआ मेजपोश बिछा था। बीच में एक फूलदान में सुंदर लाल गुलाब सजे थे। आनंद ने उनकी ओर ध्यान देना आवश्यक नहीं समझा। वह दीवार से सटी एक ऊंची, नक्काशीदार, कांच लगी अलमारी की तरफ मुड़ा। उसने उसके दरवाजे खोले। अंदर केवल प्लेटें, कप, जैम से भरी बोतलें, चटनियां और कार्नफ्लैक रखे मिले। "कितनी बेकार चीजें लोग रखते हैं।" चिढ़कर आनंद बुदबुदाया। यही सब सामग्री जब उसे अपने हाउसबोट में रखी मिलीं थीं तो उसे खूब प्रसन्नता हुई थी। यह बात वह बिलकुल भूल ही गया था।

आनंद सामने बैठक की ओर दौड़ा। लकड़ी का फर्श कीमती कश्मीरी कालीनों से ढका था। उसके अपने हाउसबोट की बैठक से वह कमरा मिलता-जुलता था। यहां भी अखरोट की लकड़ी से बनी कॉफी रखने हेतु नक्काशीदार मेज, गद्देदार सोफे तथा लकड़ी व पेपर मैशी की छोटी-मोटी साज-सामग्री थी। दीवान के ऊपर दीवार पर एक लंबे, नक्काशीदार फ्रेम में आईना लगा था।

"वाह, यही वह जगह है जहां अजीत ने कैमरा देखा था।" आनंद को याद आया, "कैमरा तो अब है नहीं, पर यहां पड़ी अलमारी की जांच की जाये।" लिखने

की मेज की ओर बढ़ उसने निचले दरवाजे खोले। अंदर एक रजिस्टर तथा कुछ कागज मिले।

"उफ्!" आनंद निराश हो गया था। उसने अन्य दराज तथा दरवाजे खोले और उन पर लात मार कर अपना क्रोध उतारा।

"कैमरा गायब है। कहां गया? कितना अच्छा होता अगर मुझे मिल जाता।"

पीठ सीधी कर वह वापस मुड़ने लगा। तभी उसकी दृष्टि सामने किवाड़ में लगे कांच पर पड़ी। बाहर का दृश्य देखते ही उसकी छाती धक-धक करने लगी।

एक लाल व सफेद शिकारा धीरे-धीरे रोजबड के निकट आ रहा था। अगले भाग में हाथ में चप्पू थामे खड़ा था—कादिर।

एक क्षण आनंद ठिठका खड़ा रहा। फिर वह पीछे भोजन कक्ष की ओर भागा। फिर आगे सीढ़ी वाले कक्ष की ओर छोटू को ढूंढ़ा। उसे तुरंत चेतावनी देनी होगी।

छोटू भंडार की अलमारी के सम्मुख झुका हुआ था। "बाहर कादिर है।" आनंद ने हांफते हुये कहा, "अरे, यह क्या कर रहे हो?"

"हम ताला खोलता," वह फुसफुसाया। वह ताले के अंदर पिन डाल कर घुमा रहा था।

"छोड़ दो। अंदर और प्लेटे होंगी। चलो, भागें।" घबरा कर छोटू के कंधे को झकझोरते हुये उसने कहा।

"रुको। अभी खुलता।" छोटू का उत्तर था। एक झटके से उसने आनंद का हाथ हटाया और फिर काम में जुट गया।

बाहर की आवाज आनंद के कानों में फिर आई।

"ठक! ठक! ठक!" यह रशीद था। वह खिड़की पर खटका देते हुये उन्हें सावधान कर रहा था। कादिर आ रहा था।

"चलो! जल्दी!" आनंद ने फिर कहा। लेकिन छोटू अपनी ही धुन में मस्त था। उसकी उंगलियां बड़ी कुशलता और तेजी से ताले में पिन घुसा कर उसे घुमाने में व्यस्त थीं। आखिर एक धीमा-सा 'क्लिक' स्वर हुआ। आनंद धड़कते दिल से ताले के खुलने की प्रतीक्षा में खड़ा रहा। छोटू ताला उतार कर चिटकनी सरकाने लगा।

बाहर दीवार पर खटके तेज हो गये।

"जल्दी चलो," आनंद ने छोटू को खींचते हुये कहा।

"एक सेकंड!" उसका दोस्त फुसफुसाया।

तभी आनंद के तेज कानों ने बाहर सीढ़ी पर किसी के पैरों की आहट सुनी। अब तक छोटू ने अलमारी के किवाड़ खोल लिये थे। आनंद ने अंदर अंधेरे में झांका।

उसकी चकित आंखें नीले बरसाती कोट और कैमरे पर पड़ीं। वे सामने ही रखे थे।

उसने एक गहरी सांस ली। फिर झट से कैमरा उठाया।

"चलो भागें।" उसने छोटू को गलियारे की ओर धकेला।

वे खिड़की से बाहर लपके। उसे सरका कर बंद किया। बंद करते समय जो आहट हुई उससे बाहर खड़ा बोट का मालिक सावधान हो गया।

"कौन है?" उन्होंने सुना। भारी पैर लकड़ी के फर्श पर ठपठप करते सुनाई पड़े। आनंद जानता था छोटू अधिक खतरे में था। वह रोजबड के निकट ही बगल में रहता था। कादिर का समूचा क्रोध उस पर ही उतरेगा।

"छिप जाओ!" उसने धीमे से कहा और छोटू को बोट के पिछवाड़े की ओर धकेला। कादिर का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिये आनंद संकरी पटरियों पर से दौड़ते हुये बगल के हाउसबोट की तरफ लपका। फिर वह हाउसबोट के बरामदे में जा पहुंचा। उसको भागते देख कादिर ने आवाज दी। आनंद दौड़ते हुये शिकारे के निकट गया और उसमें कूद गया।

"रुको! ऐ लड़के! हम बोला रुक जाओ!" गुस्से से लाल-पीले होते हुये कादिर ने मुक्का दिखाया। पर रशीद ने नाव खेना आरंभ कर दिया था। आनंद ने कैमरे को पैरों के नीचे छिपाया और रशीद को जल्दी-जल्दी हाथ चलाने को कहा। उसे भय था कि कादिर उनका पीछा करेगा। लेकिन कादिर ने केवल गालिया बकीं। फिर दरवाजा खोल वह हाउसबोट के भीतर चला गया।

खतरे में

अपनी बहादुरी पर आनंद बहुत प्रसन्न था। उस दोपहर उसने बड़े गर्व से अपने भाई को कैमरा दिखाया। उसकी पीठ ठोंकने के बदले अजीत कुछ अप्रसन्न ही दिखाई दिया। आनंद को इस बात से आश्चर्य हुआ।

"इस तरह चोरी-छिपे तुम्हें हाउसबोट में नहीं जाना चाहिये था," अजीत ने आनंद को फटकारा।

"मगर मैं कितना जरूरी सबूत ले आया हूं," आनंद ने कहा। "अब इस कैमरे को अच्छी तरह से देखो। क्या सचमुच यह ऐन का नहीं है?"

"हां, है! मुझे यह ढीला बटन साफ याद है। फोटो लेने के बाद मैंने इस पट्टे को बंद किया था। तब भी यह बटन ऐसे ही ढीला था। हां, यह वही कैमरा है।"

"तब तो यह साबित हो गया कि वे लड़कियां उस रात वहीं थीं, जैसा कि छोटू ने हमें बताया।"

"हां, परन्तु...," अजीत चुप हो गया। उसका चेंहरा गम्भीर व विचारशील था।

"पर क्या?"

"तुम्हें एक बात समझ आई? अब चूंकि कादिर को मालूम है कि उसकी पोल हमारे सामने खुल गई है, वह हाथ धोकर हमारे पीछे पड़ जायेगा। वे लड़कियां कोलाहाई से लौट कर फिर हाउसबोट में आईं—इस बात का हमारे पास पूरा सबूत है। इस तथ्य को मानने को वह तैयार नहीं है। अब वह कैमरा वापस लेने की पूरी कोशिश करेगा। वह हमारा काम तमाम करना चाहेगा—ठीक वैसे ही जैसे फिल्मी कहानियों में होता है।"

अपने भय को स्वर देते हुये अजीत इतना गम्भीर लग रहा था कि आनंद की हंसी छूट गई। "छोड़ो भी अजीत। वह हमारा क्या बिगाड़ेगा? हम भला उससे क्यों डरे? और उसे हमारे बारे में कुछ मालूम भी तो नहीं। यह भी नहीं कि हम कौन हैं या कहां रहते हैं।"

"घबराओ मत। वह जल्दी ही पता लगा लेगा," अजीत ने चेतावनी दी। "हो सकता है वह हमारे पीछे लग भी चुका हो। तुम्हें पता भी नहीं चलेगा।"

आनंद की हंसी फीकी पड़ गई। सचमुच, बोट मालिक से पुर्नमिलन की उसे कतई इच्छा नहीं थी।

"हां, शायद तुम ठीक कह रहे हो," उसने सहमे हुए स्वर में कहा, "अब मैं क्या करूं?"

"हमें बाहर बिलकुल नहीं निकलना चाहिये," अजीत ने उत्तर दिया, "हम आज घर के भीतर ही रहेंगे। बाद में हम पुलिस स्टेशन जाकर सब बता देंगे।"

"पर छोटू की आपत्ति?"

"हम उस विषय में कुछ नहीं बोलेंगे। केवल अपने अनुभव बतायेंगे। सबूत के लिये कैमरा है ही। वही काफी होगा।"

"ठीक है।"

"हमें नीना को भी नहीं बताना चाहिये। कहीं वह मां के सामने पोल न खोल दे।"

"हां।"

आनंद जैसे चंचल बालक के लिये इतना समय भीतर बिताना जैसे एक दण्ड था। कुछ देर वह भाई के साथ शतरंज खेलता रहा। एकाग्रचित अजीत प्रत्येक बारी जीतता गया। आनंद ने चिढ़ कर मैदान छोड़ दिया। अजीत खुशी-खुशी किताब में

लीन हो गया। मगर आनंद बेचैनी से इधर-उधर चहलकदमी करता रहा। वह क्या करे? इसी उधेड़बुन में वह लकड़ी की सीढ़ी चढ़ ऊपर छत पर चला गया। वहां सुनहली धूप खिली थी। पड़ोसी हाउसबोटों के कमरों में झांकते हुये आनंद ने अपना मन बहलाया। उनमें विदेशी पर्यटक ठहरे थे। अंत में इस फीके मनोरंजन से भी ऊब वह नीचे बैठक में लौट आया। अजीत ने उसे मुस्कराकर देखा।

"लो, यह किताब पढ़ो। यह काफी रोमांचक है," उसने सुझाव दिया।

आनंद ने बेमन से पुस्तक के पन्ने पलटे फिर किताब बंद कर दी। उसने एक दीर्घ निश्वास छोड़ी।

श्रीमती मेहता, नीना के साथ मेजपोश पर बेलबूटे काढ़ने में व्यस्त थीं। बेटे की अधीर दशा ने उनका ध्यान आकर्षित किया।

"बाहर सैर कर आओ आनंद, तुम्हें अच्छा लगेगा," उन्होंने कहा।

"मैं ठीक हूं।" आनंद ने उत्तर दिया और दीवान पर जा लुढ़का।

"अरे, तुम क्या बीमार पड़ने वाले हो?" श्रीमती मेहता ने चिन्तित स्वर से उस पर तीखी दृष्टि डालते हुये पूछा। "तुम्हारी तबीयत ठीक है न?"

"और क्या?"

"चलो, हम कहीं बाहर चलें।"

"रशीद के साथ चली जाओ," आनंद ने कहा, "मैं घर में ही ठीक हूं।"

इस उत्तर ने मां को और भी चकित किया। "आज तुम्हें क्या हो गया है?"

"अरे, घर में रहने में भी क्या हानि है? तुम सब क्यों इसके पीछे हाथ धोकर पड़े हो?" अजीत ने भाई का पक्ष लिया।

श्रीमती मेहता उनके उत्तर से असंतुष्ट ही रहीं। वह उन सबको घूमने के लिये राजी करने लगीं।

"मुझे एक विचार सूझा है," उन्होंने कहा, "सुना है शालीमार बाग में 'प्रकाश तथा ध्वनि' का शो देखने लायक है। तुम सब पिताजी के साथ जाकर देख आओ। मैं घर पर आराम करूंगी।"

यह सुन नीना खुशी से उछल पड़ी। अजीत ने भी हामी भरी। उसने आनंद को एक किनारे ले जाकर चलने की सलाह दी। वे एक वयस्क की उपस्थिति में सुरक्षित रहेंगे क्योंकि तब कादिर उनको हानि पहुंचाने का साहस कभी नहीं करेगा।

शाम को उन्होंने पिता के संग स्कूटर में शालीमार बाग की ओर प्रस्थान किया। सड़क डल झील के किनारे-किनारे थी। झील के चारों ओर मस्तक उठाये, ऊंचे शिखरों के पीछे सूर्य अस्त हो चला। किरणों की सुनहली परछाइयां झील के जल में

थिरकने लगीं। वे मुगल बादशाहों द्वारा निर्मित दोनों बाग, चश्माशाही तथा निशात के बगल से निकले। फिर डल के किनारे एक मनोरम स्थल पर बने विशाल आधुनिक होटल को उन्होंने पार किया।

कुछ समय पश्चात् वे प्रसिद्ध शालीमार बाग में थे। श्री मेहता ने उन्हें बाग के विषय में बताया। खूबसूरत प्रिय बेगम नूरजहां के लिये जहांगीर ने यह बगीचा बनवाया था। शालीमार का मतलब था, 'प्यार का घर'। इस सुहावने स्थान में बादशाह ने अनेक गरमियां बिताईं।

वे टिकट खरीद बाग के अंदर सामने लगी कुर्सियों पर जा बैठे। अब तक सूर्यास्त हो चुका था और अंधेरा घिर आया था। गोधूलि के आकाश की पृष्ठ भूमि में प्राचीन चिनार के वृक्षों की काली परछाइयां और भी काली लग रही थीं। अठारहवीं सदी का बना संगमरमर का मंडप भी अंधकार में था।

शो आरंभ हुआ। हलकी, स्याह आकृतियां सजीव हो उठीं। चिनार के वृक्षों पर कांपती सुंदर पत्तियां, कृत्रिम ताल में खेलते फव्वारे और क्यारियों में हंसते पुष्प प्रकाश में जगमगाने लगे। रोशनी प्रत्येक ऐतिहासिक स्थल पर पड़कर उसे हलके रंगीन प्रकाश से आच्छादित कर देती। एक बीते हुये युग के राग-रंग ने वातावरण को प्रफुल्लित कर दिया। शहनाई की धुन व नृत्यांगनाओं के ठुमकते पैरों में घुंघरुओं की छनन-छनन एक बार फिर कानों में गूंजने लगीं। दरबारियों और दासियों की फुसफुसाहट, शायरों के ओठों पर गजल और धीमे स्वरों में वार्तालाप। उनके सम्मुख मुगल जीवन का जीता-जागता चित्र खिंच गया। जिस जगह नूरजहां से जहांगीर ने मीठी-मीठी बातें की थीं तथा जिस स्थान में वह रोग-शय्या पर लेटा था वह सब बच्चों की आंखों के सामने चित्रित हो गया।

गहरी सांस ले आनंद उछल खड़ा हुआ। "कितना अद्भुत था तमाशा।" उसने कहा। "मैं इसे एक बार फिर देखना चाहूंगा।"

"जिस समय मुगल बादशाह इन बगीचों में आते होंगे, उस समय क्या शान-शौकत होती होगी," नीना ने कहा।

अजीत चुप रहा। उसके पास भाव व्यक्त करने के लिये कोई भी शब्द पर्याप्त नहीं थे। लौटते समय वे बस में आये। बस अंधकार को चीरते हुये आगे बढ़ी। वह बीच-बीच में यात्रियों के लिये रुकती गई। यात्री अधिकतर फिरन पहने कश्मीरी ग्रामीण थे। वे आपस में उच्च स्वर में बातचीत कर रहे थे।

बस ने उन्हें उनके घाट के निकट उतारा। रशीद शिकारा लिये उन्हें पार ले जाने की प्रतीक्षा कर रहा था। झील पर चांदनी फैली थी। नाव खेते समय रशीद ने आगे

झुक कर अजीत के कानों में कहा, "साब, कादिर आया। वो हमें देखा और पूछा आप कहां रहता?"

अजीत घबरा गया। उसे यह याद नहीं रहा था कि कादिर ने उन्हें रशीद के शिकारे में बैठे देखा था। वह उनका पता आसानी से लगा सकता था—रशीद से पूछताछ करके। क्यों उसने रशीद को सावधान नहीं किया? यह उसकी ही गलती थी।

"तुमने क्या कहा?" उसने व्याकुलता से पूछा, "क्या तुमने बता दिया कि हम तुम्हारे हाउसबोट में हैं?"

रशीद ने एक शरारतभरी मुस्कराहट से कहा, "नहीं, साब। हम बेवकूफ नहीं। हम बोला, सब श्रीनगर से बाहर गया। हमको मालूम नहीं किधर।"

अजीत की घबराहट दूर हो गई। वह मुस्करा उठा। इस नन्हें दुबले कश्मीरी लड़के का दिमाग कोई कम तेज न था। अजीत खुश हो गया। रशीद की बांह को प्यार से दबाते हुये वह बोला, "शुक्रिया, रशीद। तुमने बड़ी चतुराई दिखाई।"

कादिर ने बदला लिया

दोनों भाइयों ने दूसरे दिन सुबह ही पुलिस स्टेशन जाने की योजना बनाई। इस बात को उन्होंने नीना से भी छिपाये रखा, किन्तु रशीद को उन्हें बताना पड़ा क्योंकि उसे ही उन्हें किनारे पर ले जाना था। उसको सुबह आने को कहा गया ताकि वह उन्हें पुलिस स्टेशन तक पहुंचा दें।

मगर नीना के मन में कुछ और ही विचार था। जब उसने उन दोनों को बाहर जाने की तैयारी करते देखा तब नीना ने उन्हें बताया कि वह पिकनिक पर जाने की तैयारी कर रही है।

"पिकनिक!" आनंद ने खिल्ली उड़ाई, "कौन एक बेकार की पिकनिक में जाना चाहेगा? वह भी एक लड़की के संग। हम क्या करेंगे वहां? एक बगीचे में बैठकर गिलगिले और फीके सैंडविच डिब्बे से निकाल कर खाने में भला कोई मजा है?"

नीना का चेहरा उदास हो गया। "मगर मैंने सब इन्तजाम कर लिया है। मां ने खाने का सामान भी तैयार कर दिया है। वह उनको डिब्बों में पैक कर रही हैं। तुम्हें चलना होगा। तुम अच्छी तरह से जानते हो कि मां मुझे अकेले नहीं जाने देंगी। तुम दोनों के साथ ही मैं जा पाऊंगी।"

अजीत ने बहन को समझाने की कोशिश की। "हम फिर कभी चलेंगे। आज हमें दूसरी जगह जाना है।"

नीना की भौंहें सिकुड़ गई थीं और चेहरा तन गया था। अब आगे क्या गुल खिलेगा यह लड़के भली भांति जानते थे। उनकी प्रिय बहन, जिसे माता-पिता ने खूब बिगाड़ रखा था, दौड़ी-दौड़ी मां के पास जायेगी और उनकी शिकायत करेगी। एक हंगामा खड़ा हो जायेगा। उन पर यह अभियोग थोपा जायेगा कि वे बेचारी लड़की को अलग रखना चाहते हैं। परिणाम एक ही होगा। अंत में उन्हें नीना की बात माननी पड़ेगी। होशियारी इसी में थी कि इन झंझटों से छुटकारा पाने के लिये वे नीना का प्रस्ताव चुपचाप स्वीकार कर लें।

"ठीक है, ठीक है," दोनों ने हथियार डाल दिये। घर से निकलने के बाद उन्होंने मन ही मन भाग जाने की योजना भी बना ली।

नीना खुशी-से मुस्कराने लगी। उसका क्रोध रफूचक्कर हो गया। "तब देखना जब मैं पिकनिक का सामान खोलूंगी।" उसने उत्साहपूर्वक बताया, "कितनी चटपटी चीजें रखी हैं हमने। तुमने इरादा बदल कर कितना अच्छा किया, यह तब पता चलेगा।"

अजीत के चुस्त दिमाग में विचार उमड़-घुमड़ रहे थे। बाहर जाते ही वे नीना तथा रशीद को पुलिस चौकी के निकट किसी रमणीक स्थान पर बिठा स्वयं पुलिस को सूचित कर आयेंगे। उसने आनंद को कैमरे की याद दिलाई। कैमरा थैले में डाल आनंद ने कंधे से लटका लिया। जाने से पहले उन्होंने रशीद से पूछा, "क्या पुलिस चौकी के निकट कोई पिकनिक स्थान है?"

नन्हा बालक मुस्कराया, "घबराना नहीं साब। हम बेस्ट (सबसे अच्छा) जगह ले जाता। हम कादिर से नहीं मिलाता।"

सुबह नाश्ते के बाद पिकनिक यात्री निकल पड़े। लोग शिकारों में आ-जा रहे थे। रंगीन फूलों से लदे शिकारे एक हाउसबोट से दूसरे में जा रहे थे। इनमें बैठे मुस्कराते बच्चे फूल बेच रहे थे। अन्य शिकारों में हर प्रकार का सामान बिक रहा था। इनमें बिस्कुट व शीतल पेय से लेकर कीमती कश्मीरी शालें तथा हीरे जवाहरात भी थे।

रशीद शिकारे को हाउसबोटों के पिछवाड़े ले चला। "हम तैरता बगीचा दिखाता। टूरिस्ट देखना मांगता। वो बहुत सुंदर।" उसने बताया।

चारों, एक शांत छायादार जगह पहुंचे। वे लंबी घास की ओट में थे। नीना को बहुत भला लग रहा था। कितनी स्थिर, शांत जगह थी। वे हरे-भरे द्वीपों के बाजू से

निकले। तट पर खड़ी वृक्षों की डालियां सरोवर पर ऐसे झुकी थीं मानो उसका चुंबन ले रही हों। किसी-किसी नन्हें द्वीप पर विचित्र ढंग की लकड़ी से बनी पुरानी और जर्जर झोंपड़ियां थीं। इनमें से छोटे-छोटे बच्चे बाहर दौड़े आये और रशीद को सलाम वालैकुम कहा। सब रशीद से परिचित थे। घाटों पर कपड़े निचोड़ती महिलायें कौतूहलपूर्वक उन्हें देख रही थीं।

"वह देखो! तैरता बगीचा!" उनके मार्गदर्शक ने दिखलाया। सामने गहरे बादामी रंग की भूमि पर हरे-हरे पौधों की बहार थी। "देखो, टमाटर के पौधे और वह है तरबूज। इधर है खीरा।"

"मगर पौधे पानी में कैसे उग रहे हैं?" अजीत ने जानना चाहा।

"पानी में नहीं। वह देखो लकड़ी का कुंदा। वो पानी में तैरता। और उधर देखो दो आदमी मिट्टी और मोथा (झील में मिलने वाली घास) झील से निकालता। सब लकड़ी पर रखता। उसमें बीज बोता। उससे अच्छा खाद बन जाता।"

"कैसी अद्भुत बात है।" अजीत बोला, "इस बेकार चीज का भी अच्छा उपयोग हो रहा है।"

नीना शीतल जल में उंगली डुबोये थी। हरे-भरे सब्जी के बाग, कमल-पुष्पों से भरा स्थिर और शान्त जल, और सरपतों के नीचे अंधेरी परछाइयां उसका मन मोह रही थीं। उसने हाथ बढ़ाकर जल में तैरते बड़े-बड़े गोल पत्तों के बीच से ऊपर झांकते एक पीले कमल-पुष्प को तोड़ा। फिर वह मुस्कराई। "क्वैक-क्वैक" करती बत्तखों की पंक्ति झूमती-झामती बाजू से गुजरी। बत्तखों के पीछे छूटने के बाद फिर शांति छा गई। इस निर्जन क्षेत्र में दूसरे शिकारे नहीं थे।

"कितना शांत और सन्नाटा है," नीना ने धीमे से कहा।

उसके मुंह से जैसे ही यह शब्द निकले वैसे ही हरियाली की ओर से एक बड़ा शिकारा आता दीख पड़ा। शिकारा तेजी से निकट आ पहुंचा।

"अन्य दर्शक भी हैं!" अजीत ने कहा। लाल और सफेद शिकारे में कौन था, यह देखने के लिये अजीत ने आंखें उठाईं।

आनंद भी मुड़ गया। वह भी देखने की कोशिश में था। निकट आते शिकारे की ओर उसकी पीठ थी। वह घूम कर देखने लगा। फिर वह उत्तेजित होकर झट मुड़ा।

"शिकारा पहचाना-सा लगता है।" वह बोला, "क्या यह..." फिर वह चुप हो गया। उसने सांस रोक ली। बड़ा शिकारा पास आ पहुंचा था। बहुत ही पास। रशीद ने फुर्ती से वहां से अपना शिकारा हटाया।

"आनंद! सावधान!" अजीत आते शिकारे को देख कर चिल्लाया।

एकाएक एक जोर की आवाज हुई। रशीद ने शिकारा हटाने की भरपूर कोशिश की। परंतु दूसरे शिकारे ने उनको बहुत जोर से टक्कर मार दी थी। उनका हलका और कमजोर शिकारा कुछ क्षणों तक जोरों से डगमगाता रहा।

आनंद शिकारा देखने के लिये आगे झुका हुआ था। वह संतुलन खो बैठा। उसका शरीर दायें फिर बायें झूमा। उसने स्वयं को सीधा रखने की कोशिश की। नीना ने चीखते हुये नाव को कसकर थामा। केवल तख्ती पर बीच में बैठा अजीत ही स्थिर रह पाया।

एकाएक एक तेज छपाक की आवाज आई। उनकी भयभीत आंखों के सामने ही, एक तेज चीख के साथ आनंद नाव से नीचे पानी में गिर गया।

"आनंद!" नीना चीखी। "डूब गया! बचाओ! कोई है? बचाओ!"

अजीत घबरा कर चिल्लाया, "ठहरो, मैं आ रहा हूं।" उसने एक टांग नाव से बाहर निकाली। भाई की सहायता के लिये वह पानी में डुबकी लगाने के लिये तैयार था।

"नहीं साब!" रशीद ने कहा, "हम बचाता।"

डगमगाती नाव को उसने स्थिर कर लिया था। जल्दी-जल्दी खेते हुये वह नाव को ठीक उस स्थान पर ले गया जिधर आनंद गायब हुआ था।

"फिर ऊपर आता। हम उसको पकड़ता।" उसके स्वर में पूरा आत्मविश्वास था।

झील में

झील में डूबते आनंद ने अपने शरीर को चारों ओर से ठंडे-ठंडे पानी द्वारा जकड़े हुए महसूस किया। उसने हड़बड़ाकर सहज प्रेरणा से ओंठ भींच लिये।

कुछ सेकंड के लिये आनंद अपना होशोहवास पूरी तरह खो बैठा था। फिर उसने महसूस किया कि यदि वह अपना बचाव नहीं करेगा तो वह डूब जायेगा। सांस नहीं लेनी चाहिये, सर्वप्रथम यही विचार उसे आया।। सांस लेने पर फेफड़ों में पानी घुस जायेगा। उसने मुंह कस कर बंद किया और सांस रोके रखने की पूरी कोशिश की। यद्यपि आनंद ने तैरना नहीं सीखा था फिर भी उसे इस बात का थोड़ा बहुत ज्ञान था कि ऐसी स्थिति में उसे क्या करना चाहिये।

पानी की सतह पर लौटने के लिये आनंद ने व्याकुलता से टांगें मारीं। जब झील

में उगी घास और पौधों की मोटी डंडियों को उसने टांगों में लिपटते पाया तब उसके भय की सीमा न रही। लंबी, कीचड़ सनी डंडियां उसके चेहरे व बांह में लिपट गईं थीं। वह जितना ही अपने आप को छुड़ाता वे उतना ही उसके बदन से लिपटती जातीं।

भय व आतंक ने आनंद को घेर लिया। उसे तत्काल इस कीचड़ और पौधों से अपने को आजाद करना होगा, अन्यथा वे लिपटती डंडिया उसे झील की गहराइयों में खींच ले जायेंगी। फिर वह किसी तरह भी ऊपर नहीं उठ पायेगा।

आनंद एक साहसी बालक था। उसने दांत भींचे और दृढ़ निश्चय किया कि आसानी से हार नहीं मानेगा। समूची शक्ति से वह उन चिपचपी कीचड़ सनी डंडियों पर पिल पड़ा। उसने क्रोध व आवेश में भर जोरों से हाथ पांव मारे। छूटने के लिये उत्सुक हो उसने घबरा कर पांव पटके। वह पूरी कोशिश कर के अपनी सांस रोके था। उसे लगा जैसे उसके फेफड़े फटने जा रहे हों, फिर भी उसने सांस नहीं ली। तभी अचानक, न जाने किस प्रकार, उसने डंडियों की पकड़ को ढीला होते पाया। वह समझ गया। उन गीली मोथे की डंडियों से छुटकारा पाने में वह सफल हो गया था। उसने पैर मार कर शरीर ऊपर धकेला।

"आनंद! हिम्मत रखो!" एकाएक अजीत का स्वर सुन पड़ा। आनंद का सिर पानी की सतह से ऊपर आ गया था।

"वह रहा!"

"बचाओ!" आनंद ने हांफते हुए चीख मारी।

उसने पागलों की तरह हाथ हिलाये। हाथ एक ठोस व रूखी सतह से टकरा गये। आनंद की खुशी का ठिकाना न था। यह तो शिकारा था। उसने शिकारे के निकट ही मस्तक उठाया था। उसकी उंगलियां शिकारे के किनारे पर कस गईं। वह मजबूती से शिकारे को पकड़े रहा, जिससे फिर न डूब जाये।

सबने राहत की सांस लेकर सहायता के लिये हाथ बढ़ाये। अजीत तथा रशीद ने मिल कर किसी प्रकार छटपटाते हुये आनंद को वापस शिकारे पर खींच लिया।

"ओह, आनंद! तुम ठीक हो। भगवान का लाख-लाख धन्यवाद।" नीना की आंखों से खुशी के आंसू छलक आये। उसके भाई के चेहरे पर फीकी मुस्कराहट झलकी, फिर वह उसके पैरों के निकट ही ढेर हो गया। उसके शरीर से पानी टपक रहा था।

"तुम कैसे हो?" अजीत ने निकट झुक कर पूछा, "बाप रे, बाल-बाल बचे!"

आनंद अब भी भौचक्का व सुन्न अवस्था में था। सिर हिलाकर उसने आंखें बंद

कर लीं। नीना ने झट पिकनिक की टोकरी से तौलिया निकाला। उसने आनंद का चेहरा पोंछा। फिर उसके बाल मल कर सुखाये। अजीत ने टपकती कमीज को निचोड़ने में मदद की। फिर जूते खींच कर उतारे।

"लो, अब तुम्हें आराम मिल जायेगा।"

"बेचारा। कहीं तुम्हें चोट तो नहीं लगी?" नीना ने हमदर्दी दिखाई।

आनंद ने उठने का प्रयास किया। "हां, हां, मैं बिलकुल ठीक हूं। इतना झंझट मत करो, नीना। मुझे कुछ नहीं हुआ है।"

नीना मुस्कराई। उसे खुशी थी कि उसका भाई फिर अपनी स्वाभाविक एवं सामान्य स्थिति में आ गया था। अब वे फिर सुरक्षित हो गये थे। नीना को इधर-उधर देखने का समय मिल गया।

"वह देखो!" वह चिल्लाई। उसने एक लाल व सफेद शिकारे की ओर उंगली उठाई। तेजी से बढ़ता शिकारा अब मुड़ने लगा था और थोड़ी ही देर में आंखों से ओझल हो जाता।

"कौन...कौन हैं वे?" अजीत ने पूछा, "मेरे खयाल में यह कोई साधारण दुर्घटना नहीं थी।"

"हां," आनंद ने स्वीकार किया, "नहीं तो वे जरूर नाव रोककर मदद करते। उन्होंने देखा नहीं, हम कितनी मुसीबत में फंसे थे?"

"शिकारा कादिर के शिकारे की तरह लगता है," अजीत बुदबुदाया, "पर...पर यह कैसे हो सकता है? रशीद ने उसे बताया था कि हम चले गये हैं।"

अब तक आनंद अपने भयानक अनुभव तथा गीले कपड़ों को भूल चुका था। वह उठ बैठा और उत्तेजित स्वर में बोला, "रशीद! उन लोगों को जाने मत दो। हमें देखना होगा वे कौन हैं, शिकारे का पीछा करो।"

"हां साब।" बालक इस अवसर पर पीछे नहीं रहा। दोनों चप्पू जल में झटपट अंदर बाहर चलने लगे। रशीद पीछा करने लगा। झुके सरपतों के एक झुरमुट के पीछे शिकारा ओझल हो चुका था। पर नन्हा मल्लाह उस क्षेत्र से भली भांति परिचित था। तैरते द्वीपों के किनारे एवं संकरी नहरों में वह शिकारा अत्यन्त दक्षता से खे रहा था। वह मिट्टी के काले तट, पीताम्बर कमल-पुष्पों और लंबी नरकटों के झुरमुटों के अगल-बगल नाव घुमाकर ले जा रहा था। वह अनेक छोटी-छोटी नहरों, जल राहों से परिचित था। वे शिकारे के निकट आने में सफल हो गये।

अब दोनों व्यक्ति स्पष्ट दिखाई देने लगे। वे लाल गद्दियों पर आराम कर रहे थे। मल्लाह की पीठ उनकी ओर थी। चेहरा नहीं दिखता था। फिर भी कंधों के आकार

तथा श्वेत अधपके केशों से स्पष्ट था कि वह कादिर ही था, रोजबड का मालिक।

उन्होंने अन्य व्यक्तियों को भी देखने का प्रयास किया। उनकी वेशभूषा अच्छी थी। एक ने हलके बादामी रंग की टी-शर्ट तथा काली पतलून पहनी हुई थी। उसके केश लाल और रंग गोरा था। दूसरे ने स्लेटी कमीज व काली पतलून पहनी हुई थी। उसका सिर गोल और गंजा था। इन दोनों के चेहरे दूसरी ओर थे।

लाल केशवाले मनुष्य ने घूम कर कादिर को कुछ निर्देश दिये। मल्लाह ने शीघ्रता से नाव की दिशा बदली। वे चौड़े जलमार्ग से फैली झील की ओर बढ़ चले। एक बार खुली, विस्तृत जल राशि में आ जाने पर शिकारे के निकट जाना उनके लिये असंभव हो जायेगा, यह अजीत जानता था। तैरते द्वीपों के अगल-बगल पतली नहरों में उनका छोटा शिकारा ही अधिक तेज चल सकता था।

यही हुआ भी। लाल-श्वेत शिकारा शीघ्रता से चौड़ी नहर में निकल गया। कुछ ही क्षणों में वह खुली, विशाल झील में पहुंच गया। रशीद ने भरपूर प्रयास किया परन्तु ताकतवर कादिर द्वारा संचालित शिकारे की बराबरी वह नहीं कर पाया।

"हमें हार माननी होगी," अजीत ने तय किया, "उन्हें उधर पकड़ना असंभव है। और निकट जा कर ही हम कौन-सा तीर मार लेंगे?"

आनंद चुप था। भीगे वस्त्रों में वह ठिठुर गया था और ठंड से उसका शरीर कांप रहा था। यह दयनीय अवस्था नीना से नहीं देखी गई, "हम लौट चलें," उसने कहा, "अन्यथा आनंद बीमार पड़ जायेगा। अरे मुझे याद आया, पिकनिक की टोकरी में चाय भी है।"

उसने थर्मस निकाल आनंद को एक गिलास गर्म चाय दी। आनंद ने तीन मग गर्म-गर्म पेय पीया। तब कहीं उसे आराम मिला।

"यह भीगी कमीज उतार डालो।" नीना ने आज्ञा दी। उसने आनंद को ओढ़ने के लिये शाल पकड़ाया, "अब हमें झटपट घर चलना चाहिए।"

"क्या हमें पहले पुलिस चौकी नहीं जाना चाहिये?" अजीत ने पूछा। उसे उनकी बनाई पूर्व योजना याद आ गई थी।

आनंद अचानक सीधा उठ बैठा। उसने शाल अलग फेंका। उसने उत्तेजित हो अपने हाथ चेहरे पर फेरे।

"कैमरा?" वह चिल्लाया, "ऐन का कैमरा कहां है?"

"यहां नहीं है क्या?" अजीत ने पूछा। उसे समय रहते याद आया कि उछलने से नाव डगमगा उठेगी। "कहां है?"

"कैसा कैमरा?" नीना को पहेली समझ नहीं आई। उसे कोई उत्तर नहीं मिला।

दोनों लड़के घबराये हुए से कैमरा ढूंढ़ने में लगे थे। कुछ क्षणों की विफल खोज के पश्चात् वे लकड़ी की पटरी पर बैठ एक-दूसरे का मुंह ताकने लगे। चेहरों पर घोर निराशा अंकित थी।

"नहीं है यहां," अजीत ने बुझे स्वर में कहा, "कहां चला गया?"

"मैंने थैला कंधे से लटकाया हुआ था," आनंद ने फीकी हंसी हंस कर कहा, "अब शायद वह इस मनहूस झील के तल पर पड़ा है।"

"तुम क्या समझते हो कादिर ने कैमरा पा लिया होगा?"

"बिलकुल नामुमकिन।" आनंद ने दृढ़ता से कहा, "नहीं। कैमरा झील की गहराई में कहीं पड़ा है और अब हमारे पास कोई सबूत नहीं है।"

"सबूत? कैमरा? अजीत, बताओ न मुझे। तुम किसके बारे में बोल रहे हो?" नीना ने पूछा।

अजीत समझाने लगा। आनंद ने शाल को अपने चारों ओर कस कर लपेट लिया।

बदले की शपथ

वे चुपचाप, दबे पांव घर लौटे। जब मां और पिताजी ने इस घटना के विषय में सुना तो उन्हें बड़ा शॉक लगा। श्रीमती मेहता ने तीनों को ऊपर छत पर भेज दिया ताकि आनंद धूप में शरीर सेक सके। पिकनिक की टोकरी भी उन्होंने ऊपर भेजी। फिर वे गंभीरतापूर्वक पति से बात करने लगीं।

उधर बच्चे भी गुप्त सलाह में व्यस्त थे। आनंद का मिजाज इस समय अत्यन्त गर्म था। झील में लगी डुबकी ने उसे भय तथा अपमान से भर दिया था। यही भावनायें अब भी उसके मन में उबल रहीं थीं। जिस आतंक और निराशा ने उसे उन चिपटती-लिपटती डंडियों से भिड़ते समय घेर लिया था उन्हें वह कैसे भूल सकता था। वह छत पर चहलकदमी कर रहा था। उसकी मुट्ठियां भिंची हुई थीं। माथे पर गहरी रेखायें खिंच गई थीं।

"मैं दिखा दूंगा कादिर को।" क्रोध से तमतमाया आनंद आवेश में बोला, "उसकी यह हिम्मत। हमारे शिकारे को टक्कर मारे?"

अजीत और नीना उसका बड़बड़ाना चुपचाप सुनते रहे। उन्हें अच्छी तरह पता था कि एक बार आनंद का पारा चढ़ जाये तो उसके शब्दों की बाढ़ को रोकना

असम्भव था। अच्छा यही था कि उसके क्रोध को आप ही शांत होने दिया जाये।

"वह... वह बदमाश, कायर, गंदा, लंबी नाक वाला, चील-सी आंखों वाला, बेहूदा आदमी। मैं उसका शिकारा तोड़ डालूंगा। उसके रद्दी पर्दों को फाड़ दूंगा और सब खचड़ी मेज-कुर्सियों को डल झील में फेंक दूंगा...मैं, मैं उन फटीचर कालीनों और गलीचों को जला डालूंगा, और उस बदमाश को भी जलती लपटों में फेंक दूंगा... मैं..." और इसी प्रकार और भी बहुत कुछ आनंद बोलता रहा। वह तब तक बोलता रहा जब तक उसके क्रोध का अंत तथा उसका मन पुनः शांत हो गया।

"लो यह केक का टुकड़ा खाओ, आनंद।" नीना ने केक आगे बढ़ाते हुये नम्रता से कहा। उसने टोकरी से पैकेट निकाला।

"अरे... हां... धन्यवाद!" उसके भाई ने प्रसन्न हो टुकड़ा ले लिया, "और क्या है खाने के लिये?"

काफी कुछ था। श्रीमती मेहता ने भोजन देने में पूरी उदारता दिखाई थी, जैसा नीना ने सुबह बताया था। अंडे व सलाद के पत्तों के सैंडविच थे, एक तंदूरी मुर्गी थी, सब्जी के कटलेट औरथा एक बड़ा-सा चॉकलेट केक जिसे नीना और मां ने मिल कर पकाया था। एक पैकेट ताजी चेरी भी अंदर रखी थी। तीनों ने जमकर खाया और टोकरी कुछ क्षण में खाली कर दी। केवल एक भाग बचा जिसे नीना ने अलग रखा था।

"रशीद के लिये," उसने बताया। "उसे केक जरूर पसंद आयेगा। मैं चाहती हूं वह भी इसका मजा ले।"

अजीत ने फिर बात छेड़ी। झील में हुई दुर्घटना ने उसे भी बहुत प्रभावित किया था। अपने भाई को झील की सतह से नीचे गायब होते देख वह भी आतंकित हो गया था। उन भयानक क्षणों की याद आते ही उसका दिल फिर धड़कने लगा। उसका जुड़वां भाई आज खोते-खोते बचा था।

"हमें इस रहस्य को सुलझाना ही होगा," उसने दृढ़ स्वर में कहा, "उन लड़कियों को भी कादिर के हाथों से छुड़ाना होगा। अब हमें सब पता चल गया है। उनके गायब होने के पीछे किसका हाथ है।"

"केवल कादिर का ही नहीं, इस रहस्य में दूसरों का भी हाथ है। आनंद बोला, "बदमाश, गुंडे, अपराधी।"

"उनको पुलिस के सिपुर्द करके लड़कियों को बचाना होगा," अजीत बोला, "पर कैसे? अब हमारे पास कोई सबूत नहीं है, कैमरा गायब हो गया है।"

"पर वह बरसाती कोट? मैंने जल्दी में उसे नहीं उठाया। लेकिन वह भी कैमरे

के साथ वहां पड़ा था हम फिर जायें और उसे ले आयें।''

''कोई फायदा नहीं। सबसे प्रथम, उस प्रकार के सैकड़ों बरसाती कोट हैं, जिन्हें विदेशी पहनते हैं। फिर क्या तुम समझते हो, वह अभी वहीं होगा? कादिर ने उसे पहले ही वहां से खिसका दिया होगा।''

''हम मां और पिताजी को सब बता दें,'' नीना ने भाइयों को सहमत कराने की कोशिश की। ''हमने आनंद के गिरने की बात को केवल एक दुर्घटना बताया है। पर अब लगता है कि उन्हें सब बता देना ही अच्छा रहेगा। क्यों, मैंने ठीक कहा न?''

''नहीं, नहीं।'' दोनों लड़कों ने सुझाव को दृढ़ता से नकार दिया।

''हम मां को परेशान नहीं करना चाहते,'' अजीत ने भौंहे सिकोड़ी।

''और फिर इस रहस्य को खुद सुलझाने में कितना मजा आयेगा,'' यह आनंद का विचार था।

''खबरदार जो तुमने किसी को कुछ बताया,'' अजीत ने दृढ़ता और कठोरता से कहा।

''अगर बताया तो हम तुम पर कभी विश्वास नहीं करेंगे,'' आनंद ने चेतावनी दी।

''ठीक है, ठीक है,'' नीना ने उत्तर दिया। यह आनंद की धमकी का असर था।

''क्या हम सब इस बात से सहमत हैं कि उन दुष्टों का पीछा किया जाये?'' आनंद ने पूछा, ''चाहे कुछ भी हो, हम उन बेचारी लड़कियों को उनके हाथ से जरूर छुड़ायेंगे। जहां तक मेरा सवाल है, मैंने तय कर लिया है। जब तक उन दुष्टों को न पकड़ लूंगा मैं चैन से नहीं बैठूंगा। मैं... उनका पीछा करूंगा...जब तक कि मैं उन्हें जेल नहीं पहुंचा देता...और...'' आनंद फिर आपे से बाहर हो रहा था।

''यह मत भूलो कि हमारे पास समय बहुत कम है।'' अजीत के शब्दों ने उसके भाई को पुनः धरातल पर ला खड़ा किया। ''अरे हां!'' वह निराश हो कर बोला। ''हां, हमारे दिल्ली वापस लौटने का समय हो चला है।''

''कोई बात नहीं,'' अजीत ने ढारस देते हुये कहा, ''जो भी समय हमारे पास बचा है उसका हम पूरा उपयोग करेंगे। मैं भी शत-प्रतिशत तुम्हारे संग हूं। मेरा भी यही विचार है। हम मिल कर दुष्टों को पकड़ने का पूरा प्रयास करेंगे।''

''मैं भी तुम्हारे साथ हूं,'' नीना ने कहा, ''मुझे भी अपनी सब योजनाओं और बातचीत में साथ रखना। जब तुम मुझसे बात छिपाते हो तो मुझे बहुत बुरा लगता है।''

''तुम माता-पिताजी को मत बताना।''

''नहीं, मैं नहीं बताऊंगी। मैं और भी मदद कर सकती हूं। मैं संदेश पहुंचाऊंगी, लोगों से बातचीत करूंगी और... बहुत कुछ कर सकती हूं।'' वह चुप हो गई क्योंकि उसे समझ नहीं आया कि उसे आखिर करना क्या था।

''ठीक है। तुम्हारे लायक काम के बारे में सोचा जायेगा। मगर याद रखना, हमें अनेक खतरनाक परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा। तुम्हें बहुत हिम्मत रखनी होगी,'' अजीत ने बहन को सावधान किया। नीना ने गम्भीरतापूर्वक सिर हिलाया। तीनों ने अपने कार्य को गुप्त रखने का निश्चय किया। आनंद ने इस निश्चय को पक्का करना चाहा।

''हम शपथ लें,'' उसने कहा, ''हम बदला लेने का वादा करते हैं। सब प्रण लें।'' बाकी दोनों ने भी हाथ उठा कर वादा किया।

इस नाटकीय कार्य से आनंद को शांति मिली। ''चलो, नीचे चलें,'' उसने प्रसन्न भरे स्वर में कहा।

छत पर भी पिकनिक के बाद बचा हुआ सामान समेटने में भाइयों ने नीना का हाथ बंटाया। नीचे वापस जाने पर श्रीमती मेहता ने उनसे कहा, ''बेटी नीना। तुम्हारे पिता और मैंने यह स्थान छोड़ने का फैसला किया है।''

''नहीं, हम यहीं रहना चाहते हैं। हमें कहीं नहीं जाना।'' आनंद ने कहा। रहस्य सुलझाने की योजना में बाधा पड़ रही थी।

''यहां रहने का विचार बदल क्यों दिया?'' अजीत ने पूछा।

बच्चों की इस प्रतिक्रिया ने श्रीमती मेहता को चकित कर दिया। ''भई, तुम्हारी बात मुझे समझ नहीं आई। आनंद के साथ घटी दुर्घटना से हमें यह अहसास हुआ कि यहां रहना कितना कठिन है। तुम्हारे जैसे चंचल व शैतान लड़कों का मन इधर कैसे लग सकता है? खेल-कूद व भागदौड़ यहां असंभव है। इसीलिये अच्छा है हम खुले स्थान पर धरती पर रहें।''

''मगर यह जगह हमें पसंद है।'' आनंद ने विरोध किया, ''हम शिकारा चलाना सीख रहे हैं। यहां बहुत कुछ करने को है। हम डल झील पर सुरक्षित क्षेत्र में तैरना सीख सकते हैं, सर्फ-राइड (तरंगों पर सवारी) कर सकते हैं या मोटर-बोट पर घूम सकते हैं। हम यह जगह छोड़ना नहीं चाहते।''

''वह दुबारा नहीं गिरेगा,'' अजीत ने भाई की ओर से वादा किया। ''उस...उस बार तो केवल एक दुर्घटना हो गई थी। मुझे पक्का यकीन है कि उसको सबक मिल चुका है। वह आगे से सावधान रहेगा। हमें यहीं रहने दो, मां।''

श्रीमती मेहता ने सिर हिलाया। ''सब तय हो चुका है। तुम्हारे पिता दूसरी जगह

घर देखने गये हैं।''

''हम क्या श्रीनगर छोड़ देंगे?'' अजीत ने चिन्तित स्वर में पूछा।

''नहीं, केवल निवास स्थान बदलेंगे। शायद एक होटल या 'काटेज' (कुटीर) जैसा पहलगाम में था।''

अजीत ने शान्ति की सांस ली। वह शहर में तो रहेंगे ही। बस वह दिल ही दिल में यह चाह रहा था कि नया निवास स्थान डल झील पर खड़े हाउसबोटों से ज्यादा दूर न हो।

एक शक

वृक्षों से भरी ढलान, और उस पर टिका एक छोटा-सा सुंदर कुटीर जिसका सामने का हिस्सा डल झील की दिशा में खुलता था—यह था उनका नया निवास स्थान। यह घर चश्माशाही के निकट था। शाहजहां द्वारा बनवाया चश्माशाही बाग एक झरने के चारों ओर बना हुआ था। कहा जाता था कि इस बर्फीले जल में औषधीय गुण हैं। बड़ी-बड़ी खिड़कियों से हरे-भरे पर्वतों के बीच घिरा विशाल नील सरोवर, उस पर तैरते नन्हें द्वीप तथा दूर खड़े हाउसबोटों की पंक्तियों का दृश्य सब को सम्मोहित करता था।

लेकिन अजीत तथा आनंद को दृश्य निहारने में दिलचस्पी नहीं थी। सामान जमाने के बाद उन्होंने हाउसबोट लौट आने की ठानी। नीना ने इनकार किया क्योंकि घर बदलने के काम ने उसे थका दिया था। दोनों भाई निकल पड़े। उन्होंने मां को बताया कि वे आसपास के क्षेत्र में घूमने जा रहे हैं।

जिस घाट पर रशीद उनकी प्रतीक्षा किया करता था वह काफी दूर था। दुर्घटना के बाद से कुछ प्रश्न अजीत के मन को विचलित कर रहे थे। वह अपने मल्लाह रशीद से उनके विषय में पूछना चाहता था। उसने भाई से भी इन प्रश्नों के बारे में बातचीत नहीं की थी। पर अपना शक वह मिटाना अवश्य चाहता था।

कादिर को उनका अता-पता कैसे मिला? रशीद ने कहा था कि उसने कादिर को उनके श्रीनगर छोड़ जाने की बात बताई थी। क्या रशीद ने झूठ कहा? क्या उसने ही उनके इरादों की पोल खोली? क्या वह जानबूझ कर उन्हें एकांत में ले गया ताकि कादिर उनकी नाव में टक्कर मार सके?

वह इस बात को मानना नहीं चाहता था, मगर लगता यही था कि रशीद ने उनके

साथ विश्वासघात किया। यदि नहीं, तब कादिर को उनकी योजना का कैसे पता चला?

अजीत ने इस संदेह को दूर हटाने का प्रयास किया। रशीद केवल एक बालक था। वह इस तरह की गहरी चाल नहीं चल सकता था, न ही वह अपने भले के लिये उनको धोखा दे सकता था। लेकिन संदेह फिर भी बना रहा।

अपने संदेह के विषय में बता कर अजीत अपने भाई का मूड नहीं बिगाड़ना चाहता था। उसने आनंद को आगे बढ़ने को कहा। रोजबड के सामने वाले अगले घाट पर उसने उसे प्रतीक्षा करने को कहा। वह कुछ समय पश्चात् वहां पहुंच जायेगा।

आनंद के जाने के पश्चात् अजीत वहीं ठहर गया। वह रशीद की प्रतीक्षा करने लगा। नाव में घूमाने के लिये ग्राहक ढूंढ़ने रशीद अकसर उस घाट पर आता था। कुछ ही देर पश्चात् उस छोटे मल्लाह का पहचाना चेहरा दिखाई पड़ा।

अजीत ने एक खम्भे की आड़ में छिप कर रशीद पर नजर रखी। लड़का घाट के निकट शिकारा खड़ा कर पर्यटकों की प्रतीक्षा करने लगा। उसकी दृष्टि आते-जाते राहगीरों पर बड़ी आशा से जाती। परन्तु छोटे से शिकारे में कोई नहीं बैठा। अधिकतर पर्यटक बड़े व गद्देदार शिकारों को ही चुनते।

बेचारे रशीद ने लंबी प्रतीक्षा की पर उसके शिकारे में कोई ग्राहक नहीं आया। अंत में अजीत ने उसे चकित करने की सोची।

''रशीद!'' वह पुकार उठा।

नाव चलानेवाले ने ऊपर ताका। घाट की सीढ़ियों पर नीचे उतरते अजीत ने देखा—रशीद की स्लेटी आंखें खुशी से चमक उठी थीं।

''साब, तुम? हम बहुत खुश हुआ, तुम को देखकर।''

''मैं भी! तुम मुझे नाव में ले चलोगे?''

''हां। तुम किधर जायेगा?''

''कहीं भी। ऐसे ही इधर-उधर भटकने में मजा आयेगा।'' अजीत ने रशीद का दोस्ती भरा चेहरा देखा। उसे किसी भी तरह से विश्वास नहीं हो रहा था कि रशीद कभी उनसे झूठ भी बोल सकता था, परंतु...

कादिर ने उनकी प्रतीक्षा की थी, उनका पीछा भी किया और फिर उनकी कमजोर नाव को पलटने का प्रयास किया। शायद वह उनको दूर रहने की चेतावनी दे रहा था। यह सब उसने किया, जबकि उसे यह बताया गया था कि वे शहर से बाहर चले गये थे। कैसे?

अजीत को इसकी छानबीन करनी ही होगी। "क्या तुम्हारे हाउसबोट में नये मेहमान गये हैं?" उसने बातें करने का प्रयास किया। रशीद ने सिर हिलाया।

"तुम्हारी कादिर से भेंट हुई क्या?"

"नहीं।"

"और छोटू?"

"वह ठीक है। हम नहीं देखा उसको।"

अजीत चुप हो गया। उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह किस प्रकार अपने सवाल पूछे। अंत में उससे नहीं रहा गया। वह बोल उठा, "मुझे यह बताओ रशीद, तुमने उस रात कादिर को क्या बताया था?"

रशीद ने चकित होकर पूछा, "किस रात की बात कह रहे हो?"

"जिस रात हम शालीमार बाग गये थे।"

"मगर हम बताया तुम गया। हमको मालूम नहीं, किधर..." रशीद ने कहना आरम्भ किया। अचानक वह रुक गया। उसकी आंखों में एक प्रश्न उभर आया जैसे उसे बात समझ न आई हो। फिर उसने धीरे-धीरे सोचते हुये पूछा, "अरे, कैसे? हम बोला, तुम गया। फिर वो कैसे आया? कैसे टक्कर मारा?" उसने आश्चर्यपूर्वक सिर हिलाया।

अजीत पैनी निगाहों से उसका चेहरा देख रहा था। आश्चर्य और प्रश्न बनावटी नहीं लग रहे थे। लड़का वास्तव में उतना ही चकित था जितना अजीत।

"क्या तुम कादिर से फिर कभी मिले?"

"नहीं। हम कादिर को नहीं देखा।"

"अगली सुबह जब हमने तुम्हें पुलिस चौकी चलने के लिये तैयार रहने को कहा?"

"हम बोला ना। हम उस आदमी को फिर नहीं देखा।"

अजीत की चिन्ता मिट गई। वह खुश हो कर मुस्कराया। रशीद का आमतौर पर प्रसन्न रहनेवाला चेहरा गम्भीर व विचारशील था। माथे पर अब भी बल थे। अजीत को लगा कि वह सच में चकित था तथा यह बात उसके लिये भी एक अजीब पहेली थी। नहीं, रशीद दोषी नहीं था।

अजीत के हृदय का बोझ हलका हो गया। वह आनंदित हो गीत गुनगुनाने लगा।

"अब मुझे नाव चलाने दोगे?" उसने पूछा।

मगर रशीद की स्लेटी आंखें अब भी परेशान थीं।

"कादिर कैसे मालूम किया?" वह फिर बोला, "जब हम बोला तुम गया?"

"चलो कोई बात नहीं। हो सकता है उसने तुम्हारी बात का विश्वास नहीं किया और हम पर स्वयं निगरानी रखी। या उसने हमें अचानक देखकर हमला करने की ठानी। खैर, अब क्या अंतर पड़ता है? लाओ, चप्पू मुझे पकड़ाओ।"

"दोनों अगले घाट पर गये। वहां उन्होंने आनंद को छोटू से बातचीत करते पाया। उसने हाथ हिलाकर उनका स्वागत किया।

"कादिर आसपास कहीं नहीं है," उसने बताया,"मैं कुछ देर पहले यहां आया, पर रोजबड में कोई नजर नहीं आया। फिर मुझे यह मिला," उसने छोटू की ओर इशारा किया, "इसने बताया कि कादिर सुबह से ही कहीं बाहर गया है।"

"मालूम है कहां?"

"नहीं।"

अजीत ने छोटू की बांह को छूआ। छोटू ने उनकी पूरी मदद की थी। रोजबड के मालिक को वह भी नहीं चाहता था।

"हमारी सहायता करोगे, छोटू?" उसने पूछा। "हमारी इच्छा है कि तुम कादिर के आने-जाने पर नजर रखो। हमें यह बताओ कि वह कब जाता है, किससे मिलता है। क्या तुम हमारे लिये यह काम करोगे?"

"हां। पर हम तुमको कैसे मिलता? हम नहीं चाहता कादिर हमको तुमसे बात करते देखता।"

उन्होंने नन्हें मानस से मिलने का समय तथा स्थान अगले दिन के लिये निश्चित किया।

अगली सुबह वे छोटू से एक छोटे बाग में मिले। बाग शंकराचार्य पर्वत के रास्ते में था।

"तुमने देखा कुछ?" उन्होंने पूछा। छोटे आदमी ने बेंच पर बैठते हुये कहा, "आज कादिर फिर जाता। उसी टाइम पर। हाथ में थैला होता।"

"अकेले?"

"हां।"

"उसे क्या कोई मिलने आया?"

"नहीं।"

"वह कब लौटा?"

"बहुत टाइम बाद—दो या तीन घंटा।"

"क्या वह फिर बाहर गया?"

"नहीं। वह घर रहता—फैमिली के साथ।"

लड़कों ने छोटू को धन्यवाद दिया और कादिर की गतिविधियों पर दृष्टि रख उससे उन्हें अवगत कराने को कहा। उसके जाते ही जुड़वां भाइयों ने एक-दूसरे की ओर उत्तेजित होकर देखा।

"मैं जानता हूं तुमने क्या तय किया है।" अजीत ने हंस कर कहा, "अब तुम यह सोच रहे हो कि कादिर का पीछा करोगे। जब वह नित्य की भांति कल फिर निकलेगा।"

"बिलकुल सही। तुम्हें कैसे पता चला?" आनंद आश्चर्य चकित हो पूछा।

"टैलीपैथी, दूसरे के मन की बात जानने की शक्ति। तुम्हें पता नहीं, जुड़वां लोग एक दूसरे के विचार जान सकते हैं?"

"अच्छा, ऐसा? तब यह बताओ, मैं अब क्या करने की सोच रहा हूं?"

"तुम इस पर्वत पर चढ़ना चाहते हो।"

"तुमने ठीक कहा।" आनंद और भी चकित हुआ। बहुत पहले से ही उसकी हार्दिक इच्छा थी कि वह पहाड़ पर चढ़े।

"तब चलो, देखें शिखर पर कौन पहले पहुंचता है," अजीत चिल्लाया। वह आगे लपका और इससे पहले कि आनंद एक भी कदम लेता वह सड़क पर जा पहुंचा।

"देखना, मैं जीतूंगा।" आनंद चिल्लाया और पर्वत पर सीधा ऊपर चढ़ने लगा। अजीत ने सपाट, अलकतरा पुती किन्तु घुमावदार सड़क चुनी। तो आनंद ने शार्टकट (छोटे पहाड़ी कच्चे रास्ते) लेने की कोशिश की। गिरते-पड़ते वह चढ़ाई पर सीधा चला। उसने कांटों व झाड़ियों के बीच से रास्ता बनाया। खतरनाक व फिसलनी चट्टानों को भी वह फांदता चला गया।

मंजिल कितनी दूर है, इस बात का लड़कों को अंदेशा नहीं था। शिखर के निकट पहुंचते-पहुंचते उनकी हालत बुरी हो गई। जब वे चोटी पर पहुंचे तब उन्होंने अपने सामने एक सीढ़ियों की पंक्ति खड़ी देखी। सीढ़ियां ऊपर नीले नभ को छू रही थीं।

"बाप रे!" अजीत ने हांपते हुये कहा। वह सीढ़ियों के नीचे खड़ा आराम कर रहा था। "हमें अभी इन्हें भी चढ़ना है।"

समूची शक्ति बटोर उन्होंने सीढ़ियों पर धावा बोला। दोनों करीब-करीब साथ ही पहुंचे। थके,हारे परन्तु अति प्रसन्न, वे चारों ओर दौड़ कर भिन्न-भिन्न कोण से दृश्य का आनंद लूटने लगे। कितना अद्भुत दृश्य था। समूचा श्रीनगर शहर, उसकी झील तथा पुल, झेलम नदी समतल मैदानों पर चक्कर काटती, रेंगती, हरि पर्वत तथा अन्य छोटे पहाड़—सब उनके सम्मुख नीचे फैले थे।

"वाह! पता है, यह मंदिर दो हजार वर्ष ईसा पूर्व बना था," अजीत ने गाइड बुक में से पढ़ते हुए अचम्भे से कहा।

"इसे सांदीमान नामक शासक ने बनवाया था।"

"हां, और कुछ समय बाद राजा गोपदित्य ने इसको फिर बनवाया। ईसा जन्म से चार सौ साल पूर्व। सच, यह पूजास्थल अति प्राचीन है। चलो, मंदिर देखें।"

पत्थर की ऊंची सीढ़ियां चढ़ते समय उनके मस्तक श्रद्धा व विस्मय से झुक गये। कितने प्राचीन व ऐतिहासिक थे वे पत्थर। सैकड़ों वर्षों से आते श्रद्धालुओं के पैरों से घिस कर पत्थर चिकने हो गये थे। उन्होंने काले पत्थर के बने शिवलिंग के सम्मुख झुक कर प्रणाम किया और मंदिर की परिक्रमा की। फिर वे सीढ़ी से नीचे उतरे।

घर लौटते समय कहीं जाकर आनंद को अपनी लगाई शर्त याद आई।

"देखा, पहुंचा ना मैं पहले? मैंने कहा था न कि मैं ऊपर पहले पहुंच जाऊंगा।"

"क्या?" अजीत को गुस्सा आया। "कौन कहता है कि तुम पहले पहुंचे? पहले मैं पहुंचा था। याद नहीं तुम्हें? जब मैं सबसे ऊंची सीढ़ी पर था तुम दो सीढ़ी नीचे थे।"

"बिलकुल उलटी बात बोल रहे हो। मैं ऊपर पहुंच गया था और तुम अभी दृश्यों का अवलोकन कर रहे थे।"

"क्यों बेकार की बात करते हो।"

रास्ते भर दोनों बहस करते रहे। एक घंटे पश्चात् जब वे घर पहुंचे तब भी बहस जारी थी।

लीक पर

जब नीना को पता चला कि लड़के शंकराचार्य पर्वत पर चढ़ कर आये हैं तो उसके क्रोध की सीमा न रही। उसकी भी वहां जाने की बड़ी इच्छा थी।

अजीत ने समझा-बुझा कर उसे शांत किया। उसने छोटू से प्राप्त जानकारी के विषय में उसे बताया। नीना का क्रोध कुछ कम हुआ।

"अच्छा, जब तुम उसका पीछा करोगे तब मैं भी चलूंगी," उसने दृढ़ स्वर में कहा।

मिलजुल कर काम करने की बात अजीत भूल गया। उसने विरोध किया, "तुम कैसे जाओगी? काम खतरे से खाली नहीं है। भूलो मत, वे अपराधी हैं। उन्होंने

लड़कियों का अपहरण किया है और आनंद को झील में धकेलने की भी कोशिश की थी।"

आनंद ने भाई का समर्थन किया, "नहीं, तुम्हें नहीं ले जायेंगे। तुम्हें ले जाने का प्रश्न ही नहीं उठता।"

नीना फिर लाल-पीली हो गई। सिर पीछे झटक उसने होंठ भींचे। "भूल गये न अपना वादा?" उसने याद दिलाया, "यदि काम मेरे लिये खतरनाक है तो तुम दोनों के लिये भी है।" फिर उसने तुरुप की चाल चली, "मैं मां को तुम दोनों की सब बदमाशी बता दूंगी।"

बात बन गई। अजीत और आनंद ने बहन को साथ ले जाने की बात झटपट स्वीकार कर ली।

झील का जल सुबह के उजाले में झिलमिल कर रहा था। तीनों बच्चे रोजबड के सामने वाले घाट की ओर चल दिये। नीना के लिये इतनी दूर पैदल चलना कठिन था। तीनों उस ओर जाने वाली बस में चढ़ गये।

वे घाट के निकट उतरे। कुछ दूर खड़े हो वे कादिर के आने की प्रतीक्षा करने लगे। साथ ही साथ वे आगे की योजना पर भी विचार कर रहे थे।

"हमें उसकी निगाहों से दूर रहना होगा," अजीत ने समझाया, "जैसे ही वह खड़ा हो जाये या आसपास देखने लगे, हमें आड़ में हो जाना होगा। खाली या सुनसान जगह में हमें अपने शिकार से काफी दूरी रखनी होगी।"

"कहना आसान है, करना उतना आसान नहीं," आनंद हंसा, "उसकी निगाह से बचना सचमुच कठिन होगा। यदि मैं भेष नहीं बदलता या फिर मास्क नहीं लगाता तो वह मुझे जरूर पहचान लेगा।"

"मुझे भी," अजीत ने फीकी मुस्कराहट के साथ स्वीकार किया, "हम दोनों एक ही समान लगते हैं।"

"पर तुम वास्तव में एक जैसे नहीं लगते," नीना ने विरोध किया, "तुम दोनों मुझे एकदम भिन्न लगते हो। मैं तुम्हें पहचानने में कभी गलती नहीं कर सकती।"

"नहीं कर सकती?" आनंद हंसा। उसने अपनी मुखाकृति गम्भीर बनाई, चेहरे पर शांत-धीर भाव लाया और धीमे नर्म स्वर में पूछा, "नहीं पहचानतीं मुझे? मैं हूं अजीत।"

"एकदम नहीं।" नीना ने मना किया, "तुम आनंद लगते हो, अजीत की नकल करने में बिलकुल असफल।"

इस बीच अजीत ने एक टांग पर चक्कर काटा। अपनी बांह जोर से हिलायी।

बालों को एक गाल पर लापरवाही से झटकते हुये वह उत्तेजित स्वर में चिल्लाया, "देखो। मैं... मैं जैसा चाहूंगा, वैसा ही करूंगा। मुझे कोई नहीं रोक सकता। है कोई माई का लाल, जो मुझसे लड़ने की हिम्मत करे?"

नीना हंसी से लोटपोट हो गई। "मुझे बुद्धू नहीं बना सकते, अजीत। तुम बिलकुल अपने जैसे ही लगते हो, किसी अन्य की भांति नहीं। मैं बताऊं चूंकि वह तुमको खूब पहचानता है, उसका पीछा मुझे करने दो। उसने मुझे दूर से ही देखा है। मैं समझती हूं, मुझे पहचानना उस के लिये कठिन होगा।"

दोनों लड़कों ने आपत्ति की। नीना जानती थी कि वे ऐसा करेंगे।

"क्या समझती हो स्वयं को?" आनंद हंसा, "नैन्सी ड्रू? (एक अंग्रेज जासूस लड़की)।"

"क्यों नहीं? और भी अनेक महिला जासूस हैं।"

"जैसे कि...?"

"जैसे जेन मारप्ल। वह एक साधारण वृद्ध भद्र महिला है, पर वह जटिल से जटिल हत्या का रहस्य सुलझा लेती है।"

"भद्र वृद्ध महिला?" आनंद जोर से हंसा, "भला एक वृद्ध महिला रहस्य कैसे सुलझायेगी?"

"ठीक तो कहा नीना ने," अजीत बोला। "मैं बताऊं? पीछा वही करे। पर हम भी नीना के पीछे रहेंगे। बीच में काफी दूरी रहेगी। अगर नीना पर कोई मुसीबत आई तो हम दौड़ कर उसकी सहायता करेंगे।"

"चुप," नीना ने टोका, "देखो, वह रहा तुम्हारा अपराधी।"

बातों-बातों में उन्हें ध्यान न रहा, कादिर नाव में आ गया था। यह तो अच्छा हुआ कि नीना की पैनी दृष्टि उसकी ऊंची आकृति पर समय रहते पड़ गई थी।

आनंद आगे बढ़ा, पर अजीत ने उसे रोक दिया।

"रुको। पहले वह जायेगी।"

उसने झट से उन्हें एक छोटी-सी गली में खींच लिया।

हाथ में थैला लिये कादिर ने रास्ता पार किया और मुड़ कर दूसरी दिशा में चल दिया।

"जाओ, नीना," अजीत फुसफुसाया, "डरना मत। हम तुम्हारे पीछे रहेंगे, परंतु कुछ दूरी पर।"

नीना ने सिर हिला कर हामी भरी। वह कुछ झिझकते हुये आगे बढ़ी। अब उसे थोड़ी घबराहट हो रही थी लेकिन उसने दृढ़ता से साहस बटोरा। कादिर पर नजर

रखना कठिन नहीं था। वह लंबा-चौड़ा व्यक्ति था और दूर से ही दिखाई दे जाता था। नीना ने नीली टोपी पर नजर गड़ाये रखी। सड़क की भीड़भाड़ के बीच से उन्होंने रास्ता बनाया। तट की दुकानों के सामने से, फिर डल झील पर बने पुल के पार, अनेक अनजानी सड़कों तथा गलियों के बीच में से वे गुजरे। नीना थक गई। अब कितनी दूर चलना होगा? क्या और आगे जाना खतरनाक नहीं था? पीछे एक नजर मुड़ कर देखने के पश्चात् उसे जरा ढारस बंधा। उसकी दृष्टि अजीत पर पड़ी। कला-कृतियों की एक दुकान के निकट वह डाक-डिब्बे के पीछे छिपा था। आनंद भी पास ही छिपा बैठा था। सड़क पर रखे एक बड़े विज्ञापन पट्ट की आड़ से उसने उन की एक झलक देखी।

अब वे एक संकरी गली में आ गये थे। गली में दोनों ओर दुकानें तथा ऊंचे भवन थे और वहां काफी अंधेरा था। क्या वह अंदर जाने की हिम्मत करे? गली शांत व एकाकी थी। नीना हिचकिचाई। यदि कादिर को ज्ञात हो गया कि कोई उसका पीछा कर रहा है तो वह अवश्य आग-बबूला हो जायेगा।

मगर अगले ही क्षण वह पुनः चल दी। कुछ नहीं होगा। यदि कादिर कुछ करने का प्रयत्न करेगा भी तो उसके दोनों भाई झट बचाव हेतु आ जायेंगे। नीना ने सहज आकृति अपनाई और अपने और कादिर के बीच की दूरी बढ़ने दी।

लगभग दस मिनट पैदल चलने पर वे एक खुले स्थल पर पहुंच गये जहां नरम हरी घास थी और चिनार के वृक्षों का एक छोटा-सा कुंज। कादिर, जो अब भी बच्चों की उपस्थिति से अनभिज्ञ था, अब वृक्षों की ओर मुड़ गया। कुछ ही क्षणों में वह पेड़ों को पार करके दृष्टि से ओझल हो गया।

नीना रुक गई। उसे समझ नहीं आ रहा था कि कादिर कहां था? कुछ आगे बढ़ने पर वह पुनः दृष्टिगोचर हुआ। वह झट आगे भाग एक मोटे, काले तने की ओट में जा छिपी।

यह पीछा और लुका-छिपी का अजब खेल तब तक चला जब तक वे चिनार उपवन से बाहर न निकल गये। नीना ने देखा कि वे एक नदी के किनारे थे।

शहर की भीड़भाड़ और हल्ले-गुल्ले से दूर वह स्थान शांत व रमणीक था। नदी में एक डूंगा (नाव में बना घर जिस पर अनेक कश्मीरी रहते भी हैं) बंधा था। कुछ दूरी पर एक पुराना टूटा कुटीर था जिसके दीवार ढह रहे थे। छत मोटी काली बल्लियों पर टिकी थी। घर खंडहर जैसा लगता था। नदी तट की ओर वह ऐसे झुका था मानों वह भी जल को छूना चाहता हो। अहाते को घेरने वाला जंगला भी जगह-जगह से टूटा हुआ था। पोस्ते के ढेर सारे जंगली फूल तथा आड़ू व सेब के वृक्ष उस बेतरतीब

बाग में मानों बहार ले आये थे। नीना इस मनमोहक दृश्य को प्रशंसा की दृष्टि से देखती रही।

कादिर पुनः गायब हो गया था। नीना एक वृक्ष की आड़ में खड़ी कादिर के आने की प्रतीक्षा करने लगी।

वन के भीतर

काफी समय बीतने पर भी कादिर नहीं लौटा। वह कुटीर के भीतर होगा। नीना ने निष्कर्ष निकाला। दृश्य निहारने में व्यस्त उसकी आंखों ने उसे खो दिया था। अचानक नीना के दिल में भय समा गया। वह एक नये स्थान में बिलकुल अकेली थी। वह भाइयों को खोजने लगी। क्या वे पीछा कर पाये थे? उपवन शांत था, केवल पक्षी चहचहा रहे थे। अजीत व आनंद का कोई नामोनिशान वहां दिखाई नहीं दे रहा था। नीना को ताज्जुब हो रहा था। लगता था कुंज में से वे उसका पीछा करने में असफल रहे थे।

कादिर गायब था। वह क्या करे? शायद वापस लौटना ही ठीक रहेगा। कादिर के पीछे-पीछे कुटीर में घुसने का उसका कोई इरादा नहीं था। वहां अन्य व्यक्ति भी होंगे। पर क्या वह अकेली लौट पायेगी? वहां तक वह गलियों के जिस चक्रव्यूह से कादिर का पीछा करती आई थी उनमें वह आसानी से राह भूल सकती थी।

बालों पर गिरी पत्तियों को उसने अधीरता से हटाया। एक बार फिर वह झांक कर देखने लगी। कादिर अब भी नजर नहीं आ रहा था। कुटीर में ऐसा लगता था जैसे वहां कोई न हो। खिड़कियों पर पर्दे नहीं थे। वे अच्छी तरह से बंद थीं। क्या कोई उधर रहता है? या क्या वह केवल एक मिलन स्थल था? नीना की व्यग्रता सीमा पार कर गई। कुछ भी नहीं हो रहा था। उसने निश्चय किया कि वह जिस रास्ते से आयी थी उसी रास्ते से वह लौट जायेगी।

घने वन में कहीं वह भटक न जाये, नीना यह सोचते हुए, राह में जाने-पहचाने स्थानों को याद करते, पूरी सावधानी से चलने लगी। मार्गदर्शन के लिये स्पष्ट पगडंडी नहीं थी, पर उसकी स्वाभाविक प्रकृति तथा दिशाज्ञान उसे ठीक राह पर ले जा रहा था।

कुछ समय पश्चात् वह चिनार कुंज से बाहर निकल आयी। रास्ता पार करने के लिये मुड़ते समय उसे आवाज सुनाई दी, "वह रही।" कोई उसकी ओर दौड़ता हुआ

आया। वह आनंद था। उसे देख वह बहुत प्रसन्न हुआ।

"तुम किधर गायब हो गई थीं?" उसने पूछा, "अजीत और मैं कब से तुम्हें ढूंढ़ रहे हैं।"

नीना भी उसे देख उतनी ही प्रसन्न हुई।

"तुमने मुझे ढूंढ़ लिया, भगवान का धन्यवाद है," वह बोली "मुझे डर था कहीं मैं वापस लौटने का रास्ता न खोज पाई तो! अजीत कहां है?"

"वह तुम्हारी खोज में सड़क के दूसरी ओर गया है। हम दोनों ने तय किया कि अलग-अलग दिशा में जाकर तुम्हारी खोज करें। कादिर कहां है?"

नीना ने उसे कुटीर के विषय में बताया। "हां, वह उधर ही गया होगा," आनंद ने माना, "चलो, अब हम उसका पीछा करके देखें कि वह किस काम में लगा हुआ है।"

"अजीत को भी आ जाने दो। नहीं तो वह हमें खोज नहीं पायेगा," नीना ने सुझाया।

मगर आनंद उतावला हो रहा था। उसमें भला इतना धैर्य कहां कि वह किसी की प्रतीक्षा करे।

"तुम उसे बताने के लिये इधर ठहरो," वह चिल्लाया, और जिस दिशा से नीना आई थी उधर चल पड़ा।

"रुको!" नीना ने अपने दुःसाहसी भाई को अकेले जाने से रोकने की कोशिश की। "हम सब साथ चलेंगे। अकेले जाना ठीक नहीं रहेगा। बस अजीत को आने दो।"

लेकिन आनंद तो पहले ही दूर निकल चुका था। उसने नीना की बात सुनी ही नहीं।

"हे भगवान।" नीना ने कंधे उचकाये और भाई की प्रतीक्षा करने लगी।

अजीत को लौटने में काफी देर हुई। उसे देखते ही नीना खुशी से पुकराते हुये दौड़ी।

"अरे। तुम यहां हो?" अजीत चिल्लाया, "और हम तुम्हें ढूंढ़ते हुये कहां-कहां भटके। कहां गई थी? तुम ठीक हो? क्या तुम कादिर का पीछा कर पाई?"

आखिरी प्रश्न के उत्तर में नीना ने सिर हिलाया और सब कुछ विस्तार से बताया। "आनंद छानबीन करने चला गया है। मैंने रुकने को कहा, पर वह नहीं माना।"

"तुम्हें अकेले छोड़ कर उसे नहीं जाना चाहिये। चलो चलें, देखें क्या हो रहा है?" उसका सुझाव था।

कुटीर की दिशा में जाते हुए उनके कानों में तेज चुस्त पदचापों की आहट आई। फिर भारी जूतों के नीचे सूखी पत्तियों के कुचले जाने की आवाज आई। दोनों एक-दूसरे का मुंह ताकने लगे। कौन था? यह आनंद की हलकी पदचाप नहीं थी। तो क्या वे काम समाप्त कर लौटते हुये कादिर के पदचाप थे?

दोनों झट घनी झाड़ियों के पीछे झुक कर छिप गये और पदचापों के निकट आने का इन्तजार करने लगे।

वह कादिर ही था। वह कुटीर से लौट रहा था। जब तक नाविक आंखों से ओझल नहीं हो गया भाई-बहन झाड़ी के पीछे ही छिपे रहे। फिर दो सिर झाड़ियों के पीछे से उठे। दोनों फुर्ती से खड़े हुये।

"अब हम आराम से कुटीर में जा सकते हैं।" अजीत ने बहन को अपने साथ खींचते हुए कहा।

"अन्य लोग भी वहां हो सकते हैं," नीना ने सावधान किया।

"देखेंगे," अजीत ने उत्तर दिया।

जल्दी ही वे उस स्थान पर जा पहुंचे जहां से नीना ने कुछ समय पूर्व दृश्य निहारा था। उन्होंने आनंद को ढूंढ़ने के लिये इधर-उधर दृष्टि दौड़ाई पर वह कहीं नजर नहीं आया।

"वह जरूर कहीं छिपा होगा," अजीत बोला, "हमें देख सामने आ जायेगा।"

"कहीं वह कुटीर के भीतर न चला गया हो," नीना डरते हुये बोली, "मुझे विश्वास है कि उधर कुछ गोलमाल चल रहा है। कादिर अवश्य किसी से मिलने आया होगा। आनंद को वहां जाने में इतनी हड़बड़ी नहीं दिखानी चाहिये थी।"

"डरने की कोई बात नहीं है," अजीत ने आश्वासन दिया। जगह काफी वीरान लगती है। मुझे तो लगता है कि वहां कोई नहीं है।"

"अजीत, सावधान रहना," नीना ने सचेत किया, मुझे विश्वास नहीं होता कि कुटीर में कोई नहीं है।"

"जरूर, हम पूरी सावधानी बरतेंगे। वहां धड़धड़ाते हुये घुसने का मेरा कोई इरादा नहीं है। हम केवल आसपास निरीक्षण करेंगे।"

"आश्चर्य है, आनंद कहां गायब हो गया।"

"होगा कहीं आसपास। शायद वह कुटीर के पिछवाड़े हो या फिर कहीं कमरों में इधर-उधर छानबीन करता घूम रहा हो," अजीत हंसा।

नीना भाई के पीछे चलते-चलते डर रही थी। उसे भय था कि कहीं खिड़कियों में से कोई उन्हें देख न रहा हो।

घास उगी हुई पगडंडी से वे सामने के फाटक की ओर चल दिये। फाटक के निकट आने से पहले ही अजीत ने नीना को रोका। वह उसे बाग के बाजू में उधर ले गया जहां जंगले का एक भाग झाड़ियों से ढका था।

"फाटक से नहीं," वह फुसफुसाया, "लोग हमें देख लेंगे।"

टूटे जंगले के बीच से वे अंदर घुस गये। अब वे पिछवाड़े फूलों व वृक्षों के मध्य खड़े थे। अजीत ने घर की तरफ देखा। क्या उन्हें कोई देख रहा था? भाग्यवश सामने की दीवार पर कोई खिड़की नहीं थी। उसने चैन की सांस ली और आगे बढ़ा। पीछे-पीछे नीना चली। वह बेहद घबराई हुई थी।

सूर्य अचानक बादलों के पीछे चला गया। एक सुहावना सुनहरी धूपवाला दिन एकाएक काला और मनहूस लगने लगा। जब वे अंदर घुसने का रास्ता ढूंढ़ रहे थे, नीना भय से कांप रही थी।

आनंद का साहस

मगर आनंद था कहां? नीना को अजीत की प्रतीक्षा करते छोड़ वह भागते-भागते चिनार के वृक्षों के छायादार कुंज में जा पहुंचा।

पुराना कुटीर सामने ही था। नीना के बताये वर्णन से वह झट उसे पहचान गया। वह नदी के निकट था। कुछ गज दूर एक नाव नदी में बंधी थी।

अपनी व्यग्रता के बावजूद आनंद ने सावधानी बरती। वह नहीं चाहता था कि वापस लौटते कादिर से उसका सामना हो जाये। रास्ता खाली था और घर भी खाली दीख रहा था। आनंद फाटक की ओर दौड़ा और अंदर भागा। अब उसे पता लगेगा कादिर वहां किस कारण आता था। शायद वह किसी से मिलने आया था। शायद वे गायब लड़कियां भी इधर हों, और कादिर उनका भोजन लाता हो। यदि वह उन लड़कियों को खोजने में सफल हो जाये तो उसके लिये कितनी अद्भुत विजय होगी। इस विचार ने उसके कदमों में तेजी ला दी और वह सामने द्वार की ओर बढ़ा। यहां वह रुक कर विचार करने लगा। क्या वह किवाड़ खोलने का साहस करे? अंत में विवेक ने वीरता पर विजय पाई और आनंद कुटीर की बगल की ओर लपका। दीवार में ऊपर लगी खिड़की पर दृष्टि गई। पहले अंदर झांका जाये, शायद वही ठीक रहेगा। परन्तु खिड़की बहुत ऊंची थी।

आनंद पिछवाड़े दौड़ा। उधर कोई खिड़की नहीं थी। वह तीसरी तरफ गया।

इधर खिड़की थी। परंतु वह भी उतनी ही पहुंच के बाहर थी जितनी की पहली खिड़की।

पर इधर परिस्थितियां अधिक अनुकूल थीं क्योंकि कुटीर की दीवार से सटा एक वृक्ष इधर था। यदि वह पेड़ के तने पर चढ़ डालियों पर पहुंच जाये तब अंदर झांकने में वह सफल हो जायेगा। वह झटपट पेड़ पर चढ़ गया। फिर डाली पर रेंगते हुये आगे बढ़ने लगा। उसने पूरी सावधानी बरती और शांत रहने का प्रयास किया। परन्तु वृक्ष के तने पर बूटों की रगड़ तथा डालियों पर पत्तों की फड़फड़ाहट वह रोक नहीं पाया।

वह भीतर झांकने में सफल हो गया।

पर काश! कोई फायदा नहीं। खिड़की की कांच के सामने कोरी काठ की दीवार के सिवाय कुछ नहीं दीखा। संभव था खिड़की के सम्मुख एक अलमारी खड़ी कर दी गई थी। यह भी कोई अक्लमंदी थी? रोशनी के लिये खिड़की बनाओ और फिर सामने अलमारी रख प्रकाश रोक दो।

पेड़ के तने पर फिसल आनंद नीचे उतरा और सामने के दरवाजे की ओर बढ़ा। वह किसी न किसी प्रकार अंदर अवश्य जायेगा। आसपास शांति छाई थी। आनंद पुनः किवाड़ के सम्मुख था। कहीं बंद तो नहीं है, यह सोच उसने सहमे हाथों से द्वार धकेले। उसके आश्चर्य की सीमा न रही, जब किवाड़ को उसने वास्तव में खुलते पाया। भाग्यवश किवाड़ के पाट बंद नहीं थे।

इस अचानक घटना से आनंद प्रसन्न था। अति अधीर, कौतुक आनंद ने अंदर खतरे की संभावना पर कोई ध्यान नहीं दिया।

वह बेधड़क अंदर घुस गया। जैसे ही पांव भीतर पड़े, किसी की मजबूत बांहों ने उसे जकड़ लिया।

"पकड़ लिया!" कोई चिल्लाया और आनंद किसी की बांहों में घिर गया जो उसे इतना कस कर पकड़े थी कि उसका दम घुट रहा था। अपने को छुड़ाने के लिये उसने व्यग्रता से हाथ-पांव पटके, परंतु मजबूत बांहों का बंधन उस के चारों ओर और कस गया।

"तो तुम हमारे पीछे आता? जासूसी करता?" स्वर कादिर का था, "इधर आओ अब हमारे साथ।"

इन घटनाओं से चकित आनंद विरोध न कर सका। वह चुपचाप उस व्यक्ति के पीछे चल दिया।

कमरे के अन्धकार में आनंद को कुछ सूझ नहीं रहा था। दीवार से लगी धुंधली

आकृतियों का उसे आभास मिला। शायद वे कुर्सी-सोफे थे। एक ऊंची आयाताकार आकृति खिड़की के सामने प्रकाश रोके खड़ी थी। यह शायद एक अलमारी थी जिसे जानबूझ कर बाहरी आदमियों की पैनी दृष्टि से कमरे को बचाने के लिये खड़ा किया गया था।

कादिर ने कमरे के दूसरे छोर पर एक दरवाजा खोला और वे एक अन्य कमरे में प्रवेश कर गये। यहां बिजली की रोशनी में उसने एक मेज देखी जिसके सामने तीन व्यक्ति बैठे थे। आनंद ने दो को पहचाना। वे उस दिन सुबह तैरते बाग के निकट शिकारे में थे। आनंद ने लाल केश व गोरे चेहरे वाले मनुष्य तथा गंजे व्यक्ति को पहचान लिया। तीसरा व्यक्ति एक नवयुवक था। उसके लंबे पीले बाल कंधों तक लटके थे और मूंछें झुकी हुईं थीं।

"क्या यह वही लड़का है?" लाल बालोंवाला व्यक्ति एक अजीब विदेशी उच्चारण से बोला। "जिधर देखो उधर पहुंच जाता है, खोटे सिक्के की तरह।"

"इससे हमेशा के लिये एक ही बार छुटकारा पा लेना चाहिये," गंजा व्यक्ति बोला, "अन्यथा यह पुलिस को सब बता देगा।"

"नहीं, नहीं, क्या मतलब?" पीले बालोंवाले नवयुवक ने विरोध किया, "बच्चा है, इसके साथ इतनी सख्ती नहीं करनी चाहिये।"

दूसरे दोनों व्यक्तियों ने आनंद को देर तक ध्यान से घूरा। उनकी सब योजनाओं पर पानी फेरने के लिये आये इस अजीब लड़के का क्या किया जाये, लगता था वे यही सोच रहे थे।

"तुमने क्या कहा, स्टीफन?" लाल बालवाले ने पूछा, "हम इसका क्या करें?"

स्टीफन ने सिर हिलाया, "इसे हम लौटने नहीं दे सकते। संभव है यह जान गया है कि हमारा उन दो यात्रियों से सम्बंध है, हालांकि मुझे नहीं लगता यह हमारे दूसरे काम के बारे में कुछ भी जानता हो। हां अच्छा रहेगा कार्ल, यदि हम इसे इधर ही रखें।"

कार्ल ने सिर हिलाते हुये हामी भरी और उसकी तरफ गम्भीर दृष्टि से देखने लगा। आनंद का दिल बैठ गया। क्या करेंगे ये उसका?

उसे जानने में देर नहीं लगी।

"ले जाओ इसे बोट पर बांध कर रखो," स्टीफन गरजा, "सावधान, भागने न पाये। बोट वाले को इस पर कड़ी नजर रखने को कहो।"

अब तक कादिर आनंद का हाथ कस कर थामे था। अब वह उसे कमरे से बाहर ले चला। जैसे ही वे कुटीर से बाहर हुये और उनके पीछे दरवाजा बंद हुआ, आनंद

ने मौके का फायदा उठाना चाहा। कादिर के टखने पर उसने पूरी शक्ति से लात जमाई।

"आ... आ...!" कादिर चीखा। उसकी पकड़ ढीली पड़ गई। आनंद ने दो एक लात और जमाईं और झटक कर अपने को छुड़ाया। फिर एक विजयी चीख के साथ आनंद वहां से भाग खड़ा हुआ।

"रुको!" उसने कादिर की चीख सुनी, "बचाओ! भाग गया!" आनंद भागा। पीछे-पीछे मल्लाह के भारी पांव ढपढप करते सुन पड़े।

"क्या हुआ?" उसने सुना। कुटीर से सब व्यक्ति बाहर निकल कादिर की मदद के लिये दौड़े। आनंद ने चाल तेज की। फाटक के बाहर, दूर चिनार के वृक्षों की ओर वह बेतहाशा भाग चला।

तभी नदी की दिशा से उसे दो आदमी आते दीखे। आनंद ने चैन की सांस ली। कोई आ रहा था। वह उनकी मदद ले सकता था। वे उसे बचा लेंगे। आनंद उनकी ओर दौड़ा।

"बचाओ!" वह चीखा, "वे आदमी। वे बदमाश हैं। वे मेरा पीछा कर रहे हैं। मुझे बचाओ।"

आनंद के निकट आने पर दोनों व्यक्ति रुक गये। वे भागते लड़के के पास आने की प्रतीक्षा करने लगे। जैसे ही आनंद निकट आया, उन्होंने हाथ बढ़ा कर उसकी बांह छू ली।

'धन्यवाद भगवान का! मैं बच गया,' आनंद ने सोचा। दोनों व्यक्तियों के साथ टिकते हुये उसने ऊपर देखा। वे दो ग्रामीण थे। पर पीछा करते लोगों की ओर देख वे मुस्करा क्यों रहे थे?

"पकड़ लिया साब," एक ने अपनी तारीफ की।

"बहुत अच्छा। पकड़े रहो!" लाल बालवाले ने उत्तर दिया।

"ठीक है। अब इसे अपनी बोट में ले जाओ," स्टीफन बोला, "और ध्यान रहे ठीक से बांधना।"

कादिर और दोनों ग्रामीणों ने आनंद को घेर लिया और उसे नदी किनारे बंधे बोट की ओर ले चले।

अंधेरा कुटीर

यह सब अजीत व नीना के उधर आने से पहले की घटना थी। जब तक वे वहां पहुंचे कुटीर में फिर शांति छा चुकी थी।

अजीत फिर भी सावधान था।

"शश्श्श," वह फुसफुसाया, "हमें कोई आवाज नहीं करनी चाहिये। तुम अभी कुछ देर यहीं ठहरो। इस झाड़ी के पीछे छिपी रहना। मैं आनंद को ढूंढ़ने जाता हूं।"

वह दबे पांव कुटीर के सामने गया। कुछ समय वह झाड़ी के पीछे दुबका रहा। वह चारों ओर देख रहा था।

दाहिनी ओर कुछ दूरी पर उसे एक डूंगा नदी पर जाता दीख पड़ा। डूंगे की छत फूस की थी और वह बड़ा था और पूरे परिवार के रहने लायक था। अजीत ने उस पर एक दृष्टि डाली और फिर कुटीर की ओर ध्यान दिया। कुटीर के दरवाजे व खिड़कियां बंद थीं। अजीत का साहस बढ़ा। वह घर के और निकट गया और अपने भाई आनंद की तरह वह भी द्वार के सम्मुख जा खड़ा हुआ। कुछ क्षणों तक अंदर की आवाजें सुनने की कोशिश करता हुआ वह वहीं खड़ा रहा। शायद अंदर से किसी के उपस्थित होने की आहट आये।

कोई आहट नहीं हुई। अजीत ने धीरे से दरवाजे का हैंडल घुमाया। इस बार द्वार बंद था। लड़के ने कंधे हिलाये। वह चुपचाप घर के पिछवाड़े गया जहां उसकी बहन प्रतीक्षा में खड़ी थी।

"अजीब बात है," वह फुसफुसाया, "आनंद का कोई पता नहीं। कहां होगा वह?"

"वह जरूर इधर आया होगा," नीना बुदबुदाई, "क्या वह घर के अंदर होगा?"

"असम्भव। वह तो बंद है।"

"क्या है इस झोंपड़ी के भीतर? मुझे बड़ा रहस्यमय लगता है। कादिर वहां क्या कर रहा था? हमें पता लगाना चाहिये।"

"बंद घर में जबरदस्ती घुसना तो ठीक नहीं" अजीत ने कुछ सोचते हुए कहा। "हमें यह भी पता नहीं कि यह किसका घर है। घरवालों को हमारा छिप कर अंदर घुसना अच्छा नहीं लगेगा।"

"हमें यह तो पता करना ही चाहिये कि आनंद वहां है या नहीं," नीना ने भाई के बारे में चिन्ता प्रकट की, "क्या हम किसी तरह अंदर नहीं झांक सकते?"

"अच्छा, चलो देखो। दो खिड़कियां हैं। किसी एक से अंदर झांको।"

वे खिड़की के निकट गये। पर जैसा आनंद ने पाया था खिड़की उनकी पहुंच से बाहर थी। अजीत ने नीना को अपने कंधे पर चढ़ कर देखने को कहा।

"क्या देखा तुमने?" नीना के उतरने पर उसने उत्सुकता से पूछा।

"कुछ विशेष नहीं। अंदर इतना अंधेरा था," जवाब मिला, "फिर भी मैंने एक दरवाजा देखा जो एक दूसरे कमरे में खुलता था। और जानते हो मैंने वहां क्या देखा? कमरे में छत से लटका एक बल्ब जल रहा था। बल्ब के नीचे एक मेज थी जिस पर तीन व्यक्ति किसी चीज पर झुके हुए उसे देख रहे थे। रोशनी एक के बालों पर पड़ रही थी और उसके बाल लाल थे।"

अजीत उसकी ओर उत्तेजित होकर देखने लगा। लाल बाल? उन्हें टक्कर मारते समय शिकारे में बैठे आदमी के भी बाल लाल थे।

"क्या?" वह जोर से बोला, "तुमने ठीक से देखा है?"

"मेरे खयाल में यह वही लाल बालों वाला व्यक्ति है। मैं अंधेरे में ठीक से देख नहीं पाई, इसलिये बिलकुल ठीक से नहीं कह सकती।"

"अब तो हमें अंदर जाना ही होगा," अजीत ने निश्चय किया। "हमें पता करना होगा कि भीतर क्या हो रहा है।"

"हां, पर हम भीतर कैसे जायेंगे?"

अजीत के माथे पर बल पड़ गये, वह सोचने की कोशिश कर रहा था। आखिर वह बोला, "क्या तुम दरवाजा खटखटा सकोगी ताकि वे उसे खोलें। यदि तुम कुछ देर उनका ध्यान दूसरी ओर आकर्षित कर सको, तो शायद मैं चुपचाप भीतर घुस पाऊं।

नीना को घबराहट हुई। "अरे नहीं। मैं उनसे क्या बोलूंगी।"

"खो जाने का बहाना बनाना," अजीत ने उत्तर दिया। "तुम अपने माता-पिता के संग पिकनिक में आई थी। तुम घूमने निकलीं और रास्ता भूल गई। ऐसा ही कुछ कहना।"

"अच्छा," नीना ने हिचकते हुये कहा। धीरे-धीरे वह सामने की ओर गई। उसने अजीत को घर के एक कोने की ओट में ओझल होते हुये देखा।

नीना ने धीमे से द्वार खटखटाया। भीतर से कोई उत्तर नहीं मिला। वह लौटना चाहती थी पर उत्सुकतावश उसने एक बार और दरवाजा खटखटाया। अन्दर से चलने की आहट आई। कुछ ही क्षण पश्चात् एक नवयुवक ने किवाड़ खोला। वह विदेशी था। नवयुवक उसे देख उतना ही अचम्भित हुआ जितना नीना नवयुवक को देख कर चकित थी।

"जी। मैं आप के लिये क्या कर सकता हूं?" नवयुवक ने अंग्रेजी में पूछा। उसके बोलने का लहजा व उच्चारण नीना को कुछ भिन्न लगा। कुछ क्षण नीना को बोलने के लिये शब्द नहीं मिले। फिर उसने जल्दी-जल्दी कहा, "मैं... मैं शायद रास्ता भूल गई हूं। क्या आप यह बता सकते हैं कि मैं बाजार कैसे पहुंच सकूंगी।"

नवयुवक मुस्कराया, "मैं भी यहां अजनबी ही हूं। मगर बाजार का रास्ता मैं बता सकता हूं। आइये, मैं आपको दिखा दूं।"

वह फाटक की ओर बढ़ा और नीना को साथ आने का इशारा किया। नीना ने ध्यान से देखा, उसने किवाड़ खुले छोड़ दिये थे। वह संतुष्ट हो नवयुवक के दिये निर्देशों को बनावटी ध्यान से सुनने लगी। लेकिन उसका मन कहीं और था। क्या अजीत भीतर जाने में सफल हो गया है?

निर्देश मिल जाने पर नीना चल दी। पीले बालोंवाले नवयुवक को यह दिखाना आवश्यक था कि वह वास्तव में बाजार जाना चाहती थी।

उसने देखा नवयुवक की दृष्टि कुछ देर उस पर टिकी रही। जब वह घर से काफी आगे निकल गई तभी उसने वापस लौटने की बात सोची।

मुलाकात

अपनी बहन द्वारा दिये अवसर का अजीत ने पूरा लाभ उठाया। जब तक वह नवयुवक को फाटक के पास बातों में उलझाये रही, वह चुपचाप दरवाजे से भीतर दाखिल हो गया।

बाहर घिरे बादलों ने अंदर भी अंधेरा कर दिया था। दरवाजा खुलने पर ही कुछ प्रकाश भीतर आता। अंधकार से अजीत खुश था। वह झटपट सबसे अंधेरे कोने में छिप गया। कुछ देर बाद नवयुवक ने लौट कर दरवाजा बंद कर लिया। अंधकार और गहरा हो गया।

नवयुवक कमरे से भली-भांति परिचित था। वह बेहिचक दूसरे छोर की ओर बढ़ गया। एक दरवाजा खोल वह अगले कमरे में चला गया। दरवाजा पुनः बंद हो गया। अजीत अंधेरे में छिपा रहा। दूसरे कमरे से बातचीत के स्वर आ रहे थे। दरवाजे के निकट सरक वह सुनने का प्रयास करने लगा। स्वर अब स्पष्ट थे, परंतु अजीत को निराशा हुई कि एक भी शब्द उसके पल्ले नहीं पड़ रहा था। वे आदमी एक अपरिचित भाषा का प्रयोग कर रहे थे।

अजीत निराश था। उसने सोचा, 'क्या मैं दरवाजा थोड़ा-सा धकेल कर खोल लूं, ताकि मैं अंदर झांक सकूं?' वे किस कार्य में व्यस्त थे यह जानना आवश्यक था।

सामने के किवाड़ बंद होने से कमरे में रोशनी नहीं के बराबर थी। अजीत ने आंखें फाड़ अंधेरे में देखने का प्रयत्न किया। वह धीरे-धीरे और आगे बढ़ा।

अगले क्षण वह किसी चीज से टकरा गया। वह ठिठक कर खड़ा हो गया। आवाज धीमी ही थी, परंतु उस शांत वातावरण में बंदूक की गोली की तरह फटाक-सी लगी। धड़कता हृदय लिये वह बगल के कमरे की आवाजों को सुनने लगा। बातचीत बंद हो गई थी। अजीत को लगा जैसे घंटों बीत गये। कोई नहीं बोला वह प्रतीक्षा में खड़ा रहा, उसे हिलने का भी साहस नहीं हो रहा था।

तभी कोई हंसा और बातचीत का सिलसिला फिर आरम्भ हो गया। चैन की सांस ले अजीत वहीं ठहरा रहा। वह फिर से बातचीत शुरू होने का इंतजार कर रहा था। जब भरोसा हो गया कि वे पूरे लीन हो गये हैं, तब अजीत ने हाथ बढ़ाकर बड़ी सावधानी से दरवाजे को धक्का दिया।

"क...र...र र!" वह खुल गया। इस बार की आवाज ने पहले की तरह लोगों का ध्यान आकर्षित नहीं किया। अजीत सफल हुआ। वह खुश था कि उन लोगों ने उस आवाज के स्रोत के विषय में जानने की कोशिश नहीं की।

अब, यदि दाहिनी ओर जरा-सा सिर आगे झुका कर झांका जाये तो वह बगल वाले कमरे का भीतरी दृश्य देख सकता था।

छत से एक बल्ब लटक रहा था। उसके नीचे एक मेज थी। तीन व्यक्ति उसके सामने बैठे थे, और जैसा कि नीना ने बताया था एक के बाल लाल रंग के थे। प्रकाश एक नकशे पर पड़ रहा था जो मेज पर फैला था। वे उस पर उंगली से कुछ संकेत करते हुये गंम्भीर और उत्तेजित स्वर में बातें कर रहे थे। किसके विषय में? इतनी गम्भीरतापूर्वक, इतने ध्यान मग्न हो वे किस विवाद में व्यस्त थे? कितना अच्छा होता यदि वह उनकी भाषा समझ पाता। यदि वह पूरे ध्यान से सुने तो शायद कुछ ऐसे वाक्य या उक्तियां सुन पाये जिससे बात कुछ समझ आये।

अजीत दीवार से चिपक कर बैठ गया और उन अपरिचित शब्दों को समझने का प्रयत्न करने लगा। बातचीत उसके कानों में भनभनाती रही। अजीत की आंखें अंधकार की आदी हो रही थीं। कमरे की धुंधली आकृतियां अब पहले से अधिक साफ दीख रही थीं।

एक कोने में एक पुराना भूसा भरा सोफा पड़ा था। टूटी मेज कुर्सियां इधर-उधर बिखरी थीं। एक फटा कवर लगा दीवान, कुर्सियां जिनके बेंत टूटे थे और जिनमें

बड़े-बड़े छेद थे, अलमारियां जिनका शीशा टूटा या गायब था, इधर-उधर पड़ी हुई थीं। उन्हें देखकर अनुमान लगाया जा सकता था—इस स्थान में अब कोई रहता नहीं था। दीवारों पर तसवीरें टेढ़ी लटक रही थीं। अजीत के निकट एक ऊंची गोल मेज पड़ी थी। छूते ही वह जोर से हिल उठी। खटर-खटर सुन अजीत ने झट हाथ हटाया जैसे वह एक बम हो जो छूते ही फट पड़ेगा।

बैठे-बैठे अचानक अजीत ने किसी प्राणी को अपनी टांग पर रेंगते महसूस किया। उसे चूहे, छिपकली तथा मेंढक इत्यादि जंतु से डर नहीं लगता था। बल्कि ऐसा भी समय था जब वह उनको पकड़-पकड़ डिब्बे में बंद किया करता था, केवल इस विचार से कि वह उनका भली-भांति निरीक्षण कर सके। परन्तु इस पुराने घर में, जहां वातावरण ऐसा निस्तब्ध तथा तनावपूर्ण था, जब एक जंतु उसकी टांगों पर चढ़ने लगा तो उसके कानों में खतरे की घंटी बज उठी। इससे पहले कि वह मन पर काबू कर पाता, उसके होठों से एक हलकी चीख फूट पड़ी। घबराहट में वह ऊपर उछला, और बगल में खड़ी मेज से टकरा गया। स्पष्ट था मेज में केवल तीन ही टांगें थीं, क्योंकि मेज खड़ी नहीं रह पाई। अजीत के छूते ही मेज बुरी तरह लड़खड़ा उठी और लड़का तथा मेज दोनों साथ ही साथ पृथ्वी पर धड़ाम से गिर पड़े। फिर जो हुआ वह तो अवश्यमेव ही था। शांति इस प्रकार भंग हुई जैसे अचानक जोरदार धमाके से बम विस्फोट हो गया हो।

बाजू के कमरे से लोग चिल्लाये। कुर्सियों के पीछे धकेलने तथा बूटों के ठपठपाने की आवाजें आईं।

अजीत के पुनः उठने से पहले ही बीच का किवाड़ खींच कर खोल दिया गया। तीन व्यक्ति उस असहाय लड़के की ओर क्रोधित आंखों से घूरे रहे थे। लाल बालवाले आदमी ने हाथ बढ़ा कर अजीत की कमीज पकड़ी और उसे एक झटके से खींच कर खड़ा कर दिया।

"कौन हो?"

वह उसे खींचते हुये दूसरे कमरे में ले गया और रोशनी के नीचे खड़ा कर दिया। वे लड़के की ओर देख रहे थे और उनकी आंखें आश्चर्य से विस्फारित हो रहीं थीं।

"तुम? फिर से?" गंजे व्यक्ति ने पूछा।

"पर... पर क्या कादिर और अन्य व्यक्ति तुम्हें बोट पर नहीं ले गये?"

"बेवकूफ आदमी। लगता है उन्होंने तुम्हें ठीक से नहीं बांधा।" लाल बालोंवाले आदमी ने गुस्से से अजीत को देखा, "और तुम फिर यहां आ गये? तुम्हारी यह हिम्मत?"

"सच में, इतना दुःसाहस! पर अच्छा ही हुआ, तुम पुलिस के पास जाने के बदले यहां लौट आये। सोचा होगा और जासूसी करोगे, क्यों। बच्चू, अब तुम फिर हमारे हाथ आ गये हो। हा, हा।"

"कैसे बेवकूफ हैं। तुम्हें ठीक से कैद नहीं रख सके। कोई बात नहीं। अब हम तुम्हारी देखभाल करेंगे। उन बेवकूफों से हमारा काम अच्छा होगा।"

अजीत गहरी सोच में था। सौभाग्यवश वे उसके साथ अंग्रेजी भाषा का प्रयोग कर रहे थे यद्यपि उनका उच्चारण अनजाना था। वह जल्दी ही समझ गया। वे उसे आनंद समझ रहे हैं। मतलब यह कि आनंद पकड़ा जा चुका था। तभी आनंद अब तक उन्हें मिल नहीं पाया था। बेचारा आनंद! क्या वह किसी डूंगे में बंदी था?

अजीत ने तय किया। वह कुछ नहीं बोलेगा, पर कान व आंखें भली-भांति खुली रखेगा। अपने भाई के विषय में जानने का वह जी-तोड़ प्रयास करेगा।

बंदी

हाथापाई से कोई लाभ नहीं था। अजीत ने नवयुवक व गंजे व्यक्ति को कमरे से बाहर उसे शांतिपूर्वक खींच ले जाने दिया। लाल केशवाला व्यक्ति कमरे में रह गया। स्पष्ट था वही सब मामलों में निर्णय लेता था। अजीत ने तय किया कि वही उन लोगों का नेता था।

दोनों उसे फिर अंधेरे कमरे में खींच ले गये। फिर रुककर कुछ बातचीत करने लगे। वे पुनः अनजानी भाषा में बोल रहे थे। स्पष्ट था कि वे उसके ही विषय मे बातें कर रहे थे क्योंकि रह-रह कर वे उसकी ओर गम्भीर दृष्टि डालते।

आखिर उन्होंने तय कर लिया। गंजा व्यक्ति भीतर के कमरे में वापस लौट गया। नवयुवक उसे कमरे के पार ले चला। वह अजीत की बांह कस कर थामे था।

"मैं तुम्हें फिर नहीं भागने दूंगा," वह बोला, "मगर मैं यह जरूर कहूंगा—तुम भी बहुत हठी हो। एक बार किसी प्रकार बच निकलने पर यहां फिर आ गये। यह जरूर कहूंगा—बहुत साहसी हो। प्रशंसनीय बात है।"

अजीत मन ही मन मुस्कराया। उसने एकदम चुप्पी साध रखी थी और एक शब्द भी मुंह से नहीं बोला था। कहीं उसकी आवाज या उसकी बोली की भिन्नता से भेद न खुल जाये। अच्छा ही था कि वे उसे आनंद समझते थे।

"चलो, हमें वे सीढ़ियां चढ़नी हैं," आदमी ने उसे आगे खींचते हुये कहा।

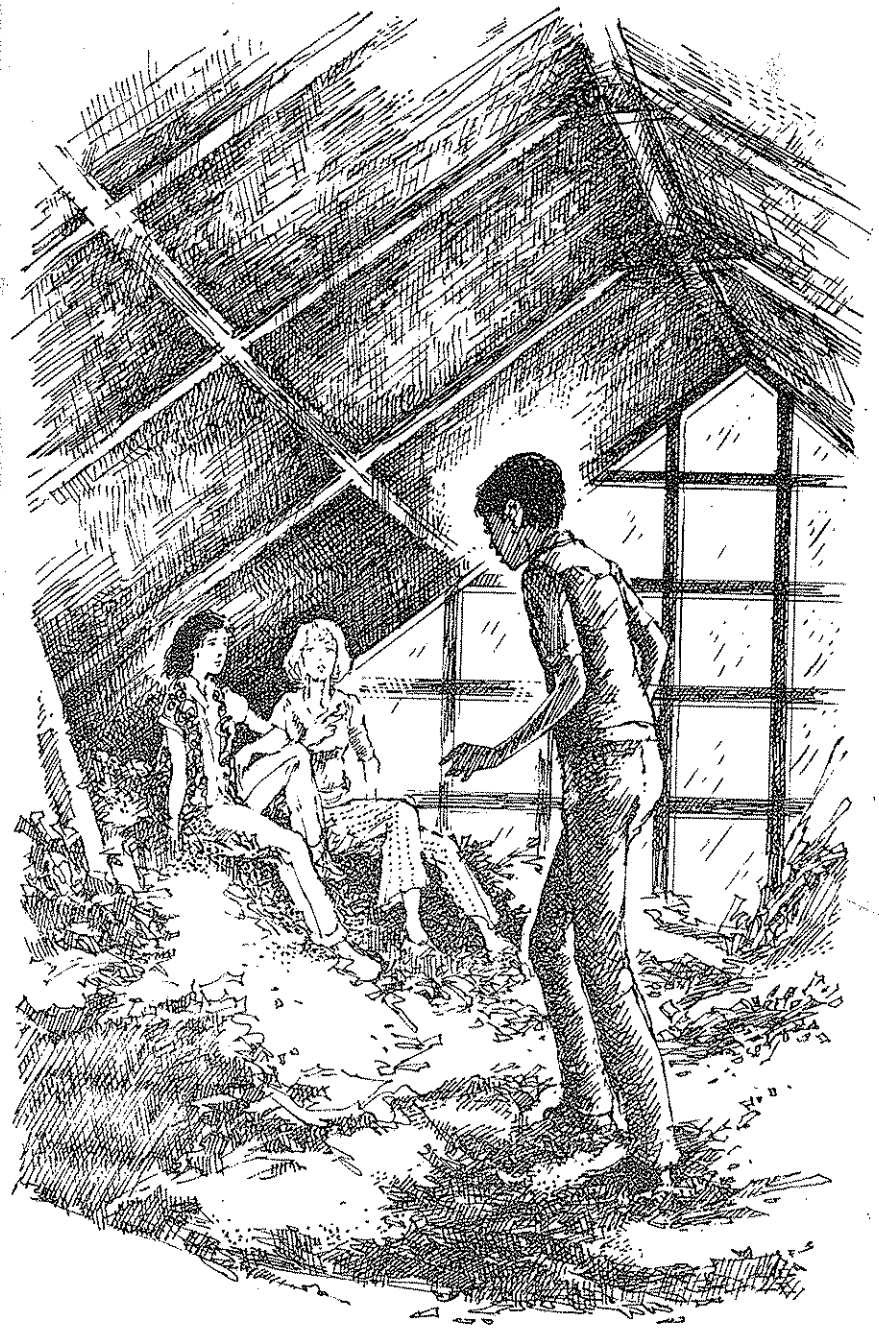

अजीत पहली सीढ़ी से टकरा गया। उसकी उंगलियों ने जंगला टटोला। फिर उसको कस कर पकड़े वह उस व्यक्ति के पीछे उन लकड़ी की टूटी सीढ़ियों पर चढ़ने लगा। हर कदम पर जोरों की चरमर्राहट होती। ठप! चर्र! जब तक वे ऊपर नहीं पहुंच गये आवाज होती गई।

वे एक पतले गलियारे से गुजरे। छत काफी नीची थी। नवयुवक को झुकना पड़ा और अजीत के बाल छत को छू रहे थे। गलियारे के अंत में लकड़ी की एक छोटी सीढ़ी थी जो छत के नीचे बनी अटारी पर जाती थी। नवयुवक ने सीढ़ी पर चढ़ ऊपर छत के फर्श पर लगा दरवाजा धकेल कर खोला।

"चलो, लड़के, अब तुम चढ़ो।" उसने आज्ञा दी और अजीत को ऊपर खींचा। उसने उसे खुले दरवाजे की ओर धक्का दिया, "आशा है तुम यहां आराम से रहोगे। कम से कम तुम्हें साथी तो अवश्य अच्छे मिलेंगे। गुडबाई। छत के फर्श का दरवाजा फिर खींच कर बंद कर दिया गया। कुछ 'खच-खच' व 'क्लिक' स्वर से अजीत ने अनुमान लगाया कि दरवाजे में बाहर से चटकनी लगा दी गई है। वह छत के नीचे के कमरे में बंद हो गया था।

इधर पर्याप्त उजाला था, क्योंकि अटारी में एक ओर एक चौड़ी खिड़की थी। दोनों ओर की दीवारें छत के ढलान से बनीं थीं।

अचानक उजाले में आकर अजीत ने पलकें झपकाईं। फिर उसका ध्यान दो नवयुवतियों पर गया, जो कोने में पड़े भूसे के ढेर पर बैठी थीं।

इनमें से एक के बाल भूसे के जैसे सुनहले थे और दूसरी के गहरे भूरे थे। ऐन तथा जेन! यहां?

"तो आप इधर हैं।" वह चकित हो कर चिल्लाया। अपना संकोच भी वह खो बैठा।

"तुम?"

"क्या तुम आ...जीत नहीं हो, जो हमें आरू में मिला था?".

अजीत ने हामी भरी।

लड़कियां कमजोर व मैली-कुचैली लग रही थीं, जैसे वे न जाने कब से स्नान न कर पाई हों। अजीत की इच्छा हुई की नीना भी वहां होती। वह झट बातों में लग जाती। यद्यपि लड़कियों को ढूंढ़ पाने से वह बहुत प्रसन्न था, फिर भी मन में उमड़ते हजारों प्रश्नों को पूछने में उसे लज्जा व संकोच अनुभव हो रहा था। वह केवल लड़कियों की ओर चुपचाप देखता रहा और भूसे के ढेर के एक ओर सावधानी से बैठ गया।

आखिर ऐन ने चुप्पी तोड़ी।

"तुम इधर कैसे आये, आ...जीत? क्या तुम भी घेरे में पकड़े गये?"

"घेरा?" अजीत कुछ समझ नहीं पाया। उसने थोड़ा हकलाते हुये पूछा, "न...नहीं, हम आपको ढूंढ़ रहे थे।"

"हमें? कैसे? क्यों?"

"तुमने हमें यहां कैसे ढूंढ़ निकाला?"

अजीत ने धीरे-धीरे, बीच-बीच में रुकते हुये सब कुछ बताया। लड़कियां सुन रही थीं। उनकी आंखों में पहले अविश्वास, कौतूहल व आश्चर्य था। धीरे-धीरे यह भाव बच्चों के साहस व निरंतर दृढ़ प्रयत्न देखकर सराहना, प्रशंसा व कृतज्ञता में बदल गये।

"वेल! मैं कहूंगी तुम बच्चे बहुत साहसी हो!" ऐन ने अंत में एक गहरी सांस लेते हुये कहा।

"तुम्हारे परिवार को तुम्हारे ऊपर गर्व होना चाहिये," जेन बोली।

अजीत सोच रहा था वह अपने प्रश्नों को किस प्रकार पूछे। पर उसे आवश्यकता नहीं पड़ी। लड़कियां अपने अजीब अनुभव सुनाने के लिये स्वयं उत्सुक थीं। इस दौरान में उनके साथ भी अनेक घटनायें घटी थीं।

गोपनीय कागज

यह सब कुछ तब आरम्भ हुआ जब वे कोलाहाई ग्लेशियर से वापस लौट रही थीं। उन्हें राह में एक अकेला यात्री मिला। साथ-साथ चलते हुए उनकी इस मनुष्य से मित्रता हो गई। वह भी विदेशी था किन्तु उनके देश का नहीं। उसका नाम था स्टीफन।

कीचड़ सने पहाड़ी पथ पर चलते-चलते स्टीफन अचानक गीली मिट्टी पर फिसल गया। गिरने से उसके टखने में मोच आ गयी। एक पग भी चलना उसे असम्भव हो गया। लड़कियों ने उस की सहायता की और उसे एक निकट के गांव में पहुंचा दिया। स्पष्ट था कि वह आगे नहीं जा सकता था। कम से कम कुछ दिनों तक तो उसे वहीं आराम करना ही पड़ेगा।

बेचारा स्टीफन बहुत चिन्तित हो गया। ऐन व जेन ने सहानुभूति जताई। वे अपनी ओर से उसकी पूरी सहायता करने के लिये तैयार थीं। स्टीफन की आंखें चमक

उठीं। उसने सोचते हुये कहा, "सच? क्या... मेरा कुछ काम... मैं बहुत आभारी रहूंगा... यदि..."।

"क्या चाहते हैं आप?"

"मेरे पास कुछ कागजात हैं। उन्हें श्रीनगर में एक मित्र को देना बहुत जरूरी है। असल में हम दोनों के मिलने का स्थान आदि सब निश्चित हो चुका है। मगर अब मेरा वहां समय पर पहुंचना असम्भव है। आप चूंकि श्रीनगर जा रही हैं, क्या आप मेरे कागजात मेरे मित्र तक पहुंचा सकती हैं?"

लड़कियों ने हामी भरी। काम कठिन नहीं था। उन्हें इस कार्य हेतु कुछ अधिक नहीं करना था।

"मेरे मित्र का नाम कार्ल है। आप उसे उसके घने लाल बालों से पहचान जायेंगी। मिलन स्थल डल झील के निकट बने परीमहल में है। परंतु..." स्टीफन ने आगे झुक कर स्वर धीमा किया, "आप को उससे मिलने हेतु कुछ गुप्त शब्दों का प्रयोग करना होगा। मेरा मतलब है... पास वर्ड (गुप्त संकेत)।" लड़कियां यह सुन चौंक गईं।

"गुप्त? पर क्यों?"

स्टीफन हंसा, "घबराइये नहीं। चिन्ता की कोई बात नहीं है। यह हमारा आपस का एक खेल है। दूसरा, मैं नहीं चाहता कि कागजात गलत आदमी के हाथों चले जायें। आपको यह कहना होगा कि आप हिमालय से पदयात्रा करके आ रही हैं। उस पर उसका उत्तर होगा, 'सुनहरी झील की ओर', और आप जान जायेंगी कि यह वही आदमी है जिसे गुप्त कागजात देने हैं। बस इतना-सा काम है। है न आसान?"

उसने उन्हें समय बताया और लड़कियों ने सब बात पुनः दोहरायी। बात पक्की हो गई।

"तब यही तय रहा।" ऐन ने उठते हुये कहा। "हम कहेंगी—हम हिमालय पदयात्रा करके आ रहे हैं।"

"और उत्तर होगा 'सुनहरी झील की ओर'।" जेन ने हंसकर बात पूरी की, "ठीक?"

"हां, मैं आपकी इस सहायता का बहुत आभारी हूं," स्टीफन ने कहा। उसने उन्हें एक लंबा व भारी लिफाफा पकड़ा दिया। उसको उन्होंने ऐन के थैले में सावधानी से रख लिया और उससे विदा ले फिर अपनी यात्रा पर निकल पड़ीं।

वे सांझ को श्रीनगर पहुंचीं। परीमहल बस अड्डे से दूर था और जब तक

वे परीमहल के खंडहर तक पहुंचीं अंधेरा हो चला था। निर्धारित समय से लगभग आधे घंटे का बिलम्ब हो गया था।

वहां लाल केशोंवाला कोई व्यक्ति नहीं दिखाई दिया। परंतु परीमहल काफी बड़ा व खुला स्थान था और उन्होंने आसपास देखने का निश्चय लिया। शायद वह कहीं मिल जाये। दोनों लड़कियां दो भिन्न दिशाओं में कार्ल को ढूंढ़ने चल दीं।

जब ऐन खंडहर की एक टूटती दीवार की बगल से निकल रही थी तो उसने किसी को धीरे-धीरे बात करते सुना।

"स्टीफन क्यों इतनी देरी कर रहा है? वह अभी तक कागजात लेकर नहीं आया।"

"क्या सोचते हो, कहीं पुलिस ने उसे कागजात समेत गिरफ्तार तो नहीं कर लिया?" दूसरे ने कुछ चिन्तित स्वर में पूछा।

"मुझे आशा तो नहीं। अगर ऐसा हुआ तो हमारी योजना पर पानी फिर जायेगा। कितनी कठिनाई से हमें वे गुप्त हिन्दुस्तानी सेना सम्बन्धी तथ्य मिले हैं। स्टीफन ने जान जोखिम में डाल कर चोरी-चोरी उन सेना स्थलों की तसवीरें खींची हैं। वह अवश्य उनके साथ पूरी सावधानी बरतेगा।"

"हां। हम उन्हें बेच कर खूब धन कमा लेंगे।" दूसरे स्वर ने स्वीकार किया। ऐन जो उनकी भाषा से परिचित थी, इस बातचीत को सुन कर भयभीत हो गई। गुप्त सैनिक तथ्य व चुराई हुई तसवीरें? वह किस घोटाले में आ फंसी थी? यह तो अपराधी थे। राष्ट्र के खिलाफ काम करने वाले चोर। वह घबरा गई क्योंकि उसे पता चल गया था कि वे भारत के खिलाफ जासूसी कर रहे थे। उसने झांककर दोनों व्यक्तियों को ध्यान से देखा। उनमें से एक के बाल लाल थे।

उसने तुरंत तय कर लिया। वह कार्ल को कागजात हर्गिज नहीं देगी। उसके बदले वह लिफाफा पुलिस को पकड़ा देगी और उन्हें पूरे मामले से अवगत करा देगी। इस जासूसी षड्यन्त्र में वह कदापि नहीं फंसेगी।

परंतु, सबसे पहले उसे जेन को जल्दी ढूंढ़ना होगा और उसे सावधान करना होगा। लेकिन! उसकी सहेली तो कहीं दिखाई नहीं दे रही थी। ऐन खंडहर का पुनः चक्कर लगाने लगी।

काफी समय पश्चात् जब उसकी दृष्टि जेन पर पड़ी तो वह यह देख घबरा गई कि उसकी साथी उन दो व्यक्तियों से पहले ही मिल चुकी है। वे कुछ दूरी पर साथ-साथ खड़े थे। ऐन समझ गई। उन्होंने गुप्त संकेत अदल -बदल लिये होंगे। अब तक कार्ल जान गया होगा कि कागजात उसके पास थे। वह उसकी प्रतीक्षा कर

रहा था। अब वह क्या करे? ऐन असमंजस में पड़ गई। उसने झटपट कुछ सोचा। इधर-उधर देखते हुये उसकी आतुर दृष्टि दीवार में एक बड़ी दरार पर पड़ी। उसने अपने थैले से झट वह भारी लिफाफा निकाला और उसे उस लंबी गहरी दरार में घुसा दिया। फिर उसने एक बड़ा पत्थर उठाया और उसे छेद में डाल दिया जिससे लिफाफा छिप जाये। फिर वह धीरे-धीरे आगे बढ़ी।

"वह रही।" जेन ने ऐन को आते देख कहा। फिर उसने बताया, "मैं इनसे पांच मिनट पहले मिली। ये निराश होकर लौट रहे थे चूंकि हमें आने में इतनी देरी हो गई थी। मैंने इन्हें स्टीफन के साथ हुई दुर्घटना के विषय में बता दिया है। चलो, अब इनके कागजात जल्दी से इनके हवाले करें। देर हो रही है।"

"हां," ऐन बुदबुदाई। थैले में हाथ डाल वह इधर-उधर टटोलने लगी। कुछ क्षण पश्चात् टटोलने के बाद वह घबराहट से चिल्ला उठी।

"अरे! यहां नहीं है!" उसने बनावटी आश्चर्य तथा घबराहट से सिर हिला कर कहा। "लिफाफा गायब है।"

अन्य तीनों ने उसे अचम्भे तथा निराशा के भावों से देखा।

"क्या मतलब?" जेन ने पूछा, "यह कैसे हो सकता है? लिफाफा जरूर वहीं होगा।"

"मगर है नहीं। क्षमा चाहती हूं।" ऐन ने कार्ल की ओर असहाय-सी दृष्टि डाली, "न जाने लिफाफा कहां गया। हम... मैं... वह जरूर कहीं गिर... भूल से... खिसक गया... था... शायद चोरी चला गया। कुछ समझ में नहीं आ रहा। मुझे खेद है," वह बोली, और चेहरे पर चकित भाव लाने की कोशिश की।

"कहां रखा था तुमने?" कार्ल ने उस पर एक प्रश्नसूचक तीव्र दृष्टि डाली।

"इसके अंदर!" जेन ने इशारे से बताया, "मैंने इसे यहां रखते देखा था। लिफाफा पूरा सुरक्षित लगता था। ज़रा मुझे देखने दो।"

ऐन ने थैला उन्हें पकड़ा दिया। दोनों ने उसे धरती पर बड़ी असभ्यता से उलट दिया और बिखरी सामग्री में लिफाफे को ढूंढ़ने लगे। उसी बीच ऐन ने जेन को चुपके से चिकोटी काटी और उसे अपनी आंखें मिचका कर इशारा किया। जेन चुप रहने का संकेत समझ गई। जब वे परीमहल से जाने लगीं तब भी कार्ल, पीले बाल वाले नवयुवक ने उन पर अपनी दृष्टि गड़ाये रखी। लिफाफे को दीवार की दरार से निकालना उनके लिये असम्भव हो गया।

"कोई बात नहीं," ऐन ने निश्चय किया, "मैं फिर कभी यहां लौटूंगी और कागजात सीधे पुलिस के हवाले कर आऊंगी। मैं उन्हें सब बता दूंगी।"

उस रात जब वे रोजबड में थीं, कादिर ने उन्हें कुछ मेहमानों के आने की सूचना दी। सुनकर उन्हें आश्चर्य हुआ। उत्सुकतापूर्वक बाहर आने पर लाल बालवाले व्यक्ति से पुनः भेंट हुई। उसे देख वे घबरा उठीं। उस व्यक्ति के स्पष्ट तौर पर कहा, "मैं जानता हूं मेरे कागजात आपके ही पास हैं, बेहतर होगा यदि आप मुझे कागज तुरन्त दे दें। यदि नहीं, तो..."

"मैंने आप को बताया था कि वे खो गये हैं?" ऐन ने उस की बात का विरोध किया, "आप क्यों नहीं मामला पुलिस में दर्ज करा देते। शायद वे चोर पकड़ सकें।"

ऐन को मालूम था वह पुलिस के पास कभी नहीं जायेगा।

"बेल, मैं एक मिनट के लिये भी आपकी कहानी पर विश्वास नहीं करता," कार्ल ने उत्तर दिया। "मेरे मित्र ने आप पर पूरा विश्वास कर के ही इतने आवश्यक कागज आपको दिये थे। आप ने उन्हें गायब कैसे होने दिया?"

"मुझे स्वयं अत्यंत खेद है। पर मैं क्या कर सकती हूं?" ऐन ने दीन भाव बनाकर कंधे उचकाये। "यह तो केवल एक संयोग है।"

"इसने जान कर तो ऐसा नहीं किया," जेन ने बात बढ़ाई, "यह दुर्घटना दुर्भाग्यवश हो गई। आप इसे क्षमा करें।"

कार्ल को गुस्सा आ गया।

"ठीक है, यदि आप यही चाहती हैं।" फुफकार कर उसने ऐन के कंधे पकड़ लिये। एक चीख के साथ ऐन पीछे हटी।

परंतु हाउसबोट के मालिक कादिर की सहायता से कार्ल ने दोनों लाचार लड़कियों पर हमला कर उन्हें पकड़ लिया। उन दोनों ने जबरदस्ती लड़कियों को एक शिकारे में बिठाया और अंधेरी रात में उन्हें कहीं ले गये। कार से उन्हें उस ध्वस्त कुटीर में लाया गया और ऊपर वाले कमरे में बंद कर दिया गया।

"उनका इरादा हमें यहीं रखने का है," ऐन ने कहानी समाप्त की। "जब तक हम उन्हें यह जानकारी न दे दें कि कागज कहां रखे हैं।"

"वे हमारी बात का मजाक उड़ाते हैं। उनका खयाल है हमने कागज छिपा दिये हैं।"

"बात सच भी है, इसमें कोई शक नहीं," ऐन हंस पड़ी।

"बाद में, जिस व्यक्ति से हम पहाड़ पर मिली थीं, यानी स्टीफन, भी कार्ल के साथ आया। वह लौट आया था। दोनों यहां अकसर आते हैं। उन्होंने हमें डांटा धमकाया भी और मनाया भी, पर अब तक हमने हार नहीं मानी। हम नहीं चाहतीं कि तुम्हारे राष्ट्र के साथ कोई विश्वासघात करे," ऐन ने समझाया, "वैसे ही जैसे

यदि कोई हमारे देश के खिलाफ जासूसी करे तो हमें बुरा लगेगा।"

"उन दोनों ने हमें लालच भी दिया। पाउंड, डॉलर या सोना इत्यादि हम जो भी धन चाहें वह देने को तैयार हैं। पर हमने सब ठुकरा दिया, क्योंकि हम सोचते हैं यह एक घिनौना काम है।"

"बेचारे। अब तक उन्होंने हमारे साथ काफी अच्छा बर्ताव किया है।" ऐन हंस दी। "वे हमें मारना कदापि नहीं चाहेंगे, क्योंकि तब कागज उन्हें कभी नहीं मिल पायेंगे। इस कारण वे हमारी अच्छी देखभाल करते हैं।"

"मगर अब हमारा धैर्य खतम हो रहा है," जेन बोली। "ये कब तक हमें यहां रखेंगे? हमने यहां से खिसक जाने का प्रयत्न किया, पर निकलना असंभव लगता है।"

अजीत मौन था। वह सहायता प्रदान करने में असमर्थ था। अखबार में छपी खबर के विषय में वह नहीं बताना चाहता था। उन्हें व्यर्थ निराशा होती।

"देखता हूं... शायद भागने का कोई तरीका निकल आये," वह बोला और उठ कर कमरे का निरीक्षण करने लगा।

सहायता

दोनों लड़के लापता थे। भय तथा चिन्ता में खोई नीना अब अकेली थी। देर तक वह भाइयों के लौटने की प्रतीक्षा करती रही। अजीत और आनंद दोनों ही गायब थे। नीना की व्याकुलता बढ़ती जा रही थी। इतनी देर वे कहां रह गये? पहले आनंद और अब अजीत—उस रहस्यमय कुटीर में जाते ही दोनों गायब हो गये। क्या वह भी वहां जाने का साहस करे?

नहीं, उसमें इतनी हिम्मत नहीं थी। दूसरी बात, वह अकेले कर भी क्या सकेगी? होशियारी इसी में थी कि वह किसी की सहायता ले। वह धीरे-धीरे वापस चल दी। अब तक वह उस छोटे कुंज से परिचित हो चुकी थी और इस बार अंदर जाते समय उसमें पूरा आत्मविश्वास था। बाजार पहुंचने पर उसे पुनः शंका ने घेर लिया। जिन सड़कों व गलियों से उसने कादिर का पीछा किया था वे अजीब और अपरिचित थे। अनेक बार उसे रुक कर रास्ता पूछना पड़ा।

एक दो बार वह राह से भटक भी गई। मगर सड़क पर राहगीरों ने मदद की और वह पुनः डल झील के परिचित क्षेत्र में पहुंचने में सफल हो गई।

अब वह फिर झील के किनारे-किनारे आत्मविश्वास के साथ चलने लगी। दूसरे किनारे पर बंधे हाउसबोट कितने रंगीन और मनोहारी लग रहे थे। मगर उसका मन प्रसन्नता से कोसों दूर था।

इतनी दूर पैदल चलते-चलते वह थक गई थी और भाइयों के विषय में चिन्तित थी। उसे घर लौटने के विचार से डर लग रहा था। माता-पिता को वह उनके विषय में क्या बतायेगी?

"नीना!"

आवाज़ ने उसे चौंका दिया। वह उछल पड़ी। उस दिशा में नजर दौड़ाने पर उसे पुराना मित्र रशीद दिखाई दिया। अपने छोटे से शिकारे में बैठा वह उसकी ओर देख कर मुस्करा रहा था।

"ओह, तुम? तुम्हें देख कर मुझे बहुत खुशी हुई," वह चिल्लाई और झटपट घाट की सीढ़ियों से नीचे उतरी। वह रशीद के शिकारे में जा बैठी।

"भाई कहां हैं?" नाविक ने पूछा।

"मैं खुद जानना चाहती हूं," नीना ने गहरी सांस ली और पूरा किस्सा सुना दिया।

"अजीब बात है। वे कहां गये?"

"मुझे भी समझ नहीं आ रहा। मुझे घर लौटने से डर लगता है। पिता घर में नहीं हैं और मां ढेर सारे प्रश्न पूछेंगी और हैरान होंगी। मैं क्या करूं, रशीद?" उसकी आवाज रुआंसी थी।

रशीद सोच में पड़ गया। "हम छोटू से पूछता," उसका सुझाव था। "वह छोटा पर होशियार। अच्छा आदमी, छोटू।"

"ठीक है, चलो उसे ढूंढ़ा जाये।"

छोटू सदैव की भांति सामने बरामदे में था। हाउसबोट भरा हुआ लगा। खुली खिड़कियों पर रंग बिरंगे पर्दे फड़फड़ा रहे थे। अंदर लोग थे। बरामदे में दो नन्हें बालक खेल रहे थे। रशीद ने छोटू को पुकारा।

नाटा मनुष्य घबरा गया। उसने मुड़कर देखा। कहीं कोई देख तो नहीं रहा था? आश्वासन मिल जाने पर कि कोई देख नहीं रहा वह सीढ़ी से कूद उनके शिकारे में आ गया। उसने रशीद को जल्दी से शिकारे को वहां से हटाने के लिये कहा।

जब शिकारा बड़े हाउसबोट की ओट में छिप गया और वे रोजबड तथा कादिर की निगाहों से दूर हो गये तब बौने की जान में जान आई। उसने निश्चित हो माथा छूआ, बाल संवारे और पूछा, "हां, तुम क्या चाहता?"

"मैं... मैं..." नीना ने बताया, "क्या कादिर लौट आया है?"

"हां, कुछ देर पहले।"

नीना ने सब बताया। किस प्रकार वह मल्लाह का पीछा करती कुटीर तक गई, कैसे देर तक वह वहां अदृश्य रहा और कादिर के जाने के पश्चात कैसे अजीत चुपके से भीतर गया।

"और वह नहीं लौटा। मैं देर तक इन्तजार करती रही। आनंद पहले ही गायब हो चुका था।" नीना ने कहानी समाप्त की।

छोटू ने सिर हिलाया पर चुप रहा। उसके नेत्र बंद थे। दोनों बच्चों को लगा जैसे वह सो गया हो।

"कादिर ठीक नहीं," बौने ने अंत में पलकें झपकाते हुये कहा, "हम जानता वह खराब आदमी। वह हमारा बांह मरोड़ता। ऐसे।" नीना की बांह पकड़ उसने धीरे से मरोड़ा। वह दर्द से चीख उठी। "देखा, दुखता है न, वह और जोर से मरोड़ता।"

अपने बलवान पड़ोसी से छोटा मानस क्यों डरता था नीना समझ गई।

"उसका दोस्त भी ठीक नहीं," छोटू ने बात जारी रखी, "वह विदेशी अकसर रोजबड पर आता। लड़की गया, तब और एक आदमी जिसका लाल बाल, हम पर हंसता। जब हमको देखता, चिढ़ाता। हमको अच्छा नहीं लगता। देखा, हमें भी बात बुरा लगता। हम छोटा आदमी, पर हम को ऐसी बात बुरा लगता।"

नीना ने सिर हिलाया। वह जानती थी किसी का मजाक उड़ाना ठीक नहीं है। विशेषकर एक वयस्क द्वारा।

"एक दोस्त और। वह गंजा। वह भी ठीक नहीं। हम देखा वह कुत्ते के पिल्ले को लात मारा। पिल्ला चिल्लाता। वह हंसता, फिर मारता। बताया ना हम, वे सब खराब हैं।"

नीना भी सोचने लगी। बेचारे छोटे से असहाय पिल्ले को लात मारे, कितना दुष्ट होगा ऐसा मनुष्य।

"एक विदेशी और, लंबा पीले बालवाला। वह नहीं खराब। हमको देखता, मुस्कराता, हॅलो बोलता। हम उसे भी कादिर के साथ देखता। तीनों अकसर रोजबड पर आता। जो रात लड़की गायब हुआ लाल बालवाला आया। थोड़ी देर बाद कादिर और लड़की के साथ हम उसे शिकारे में देखा। वह रात को शिकारा ले जाता, सब जाता।"

"हां, सब मिले हुये हैं," नीना ने हां में हां मिलायी। "लेकिन वे किस काम में लगे हुए हैं?"

"ठीक नहीं, ठीक नहीं," छोटू तोते की तरह दुहराता रहा, "वह ठीक नहीं, हम

जानता। सब बदमाश।"

उसके शब्दों तथा चेहरे के भाव ने नीना को और डरा दिया। "हम कुछ करें।" वह आतंकित स्वर में बोली, "यहां बैठकर उन्हें बुरा-भला कहने से कैसे काम चलेगा। अगर उन्होंने लड़कियों को गायब कर दिया, तो मेरे भाइयों के साथ तो वे न जाने क्या करेंगे। भगवान जाने दोनों जुड़वां भाई उस डरावनी जगह में किन खतरों का सामना कर रहे होंगे। तुम्हें मेरी मदद करनी ही होगी।"

"तुम मेहता साब को क्यों नहीं बोलता?" रशीद ने सुझाव दिया।

"मगर इस समय वे घर पर नहीं हैं," नीना ने समझाया, "उन्हें काम पर लौटना पड़ा। काम श्रीनगर में ही है, जिसमें हम छुट्टीभर यहां रह सकें, और मां अच्छी हो जायें। मां को बताने से कोई फायदा नहीं। वह बेहद परेशान हो जायेगीं।"

"फिर हम पुलिस को बताता," रशीद ने तय किया, परंतु इस बार छोटू ने कहा, "नहीं।"

"तब हम कुछ नहीं करता," छोटू ने बात समाप्त की। सिर हिलाते हुये वह दृढ़ स्वर में बोला, "नीना ठीक बोला। बदमाश आदमी के पास हम दो लड़का नहीं छोड़ेगा। चलो, हम चलेगा। अच्छा है, कादिर हाउसबोट में है। रशीद, चलो।"

नीना ने चिनार के कुंज तथा नदी तीर का विवरण दोनों मल्लाहों को दिया। श्रीनगर तथा आसपास क्षेत्र से छोटू भली-भांति परिचित था। वह कुटीर का अता पता समझ गया।

"हां, हां, हम जानता। हम शिकारे में जाता। नीना, बैठो और आराम करो। रशीद और हम शिकारा खेता।"

इस प्रस्ताव से नीना खुश थी। दिनभर की दौड़धूप से उसके पांव दुख रहे थे। अब छोटू ही मामला सम्भाले। दोनों मल्लाहों ने चप्पू उठाये। नाव धीमी गति से झील के शांत जल पर सरक चली। नहर पर बंधे शिकारों की पंक्तियों, डूंगों, तथा अन्य छोटे बड़े शिकारों के बीच से होते हुये वे पुल के नीचे से निकले और एक अंधेरी, संकरी नहर में घुस गये।

शिकारा प्राचीन इमारतों की टूटती दीवारों, छायादार गलियों तथा खुली दुकानों की बाजू से निकला। प्राचीन शहर कितना आकर्षक था। अपनी चिन्ता व आशंका भूल नीना उन मनमोहक दृश्यों में खो गई। वह कमरों व घरों के अंदर झांकती रही। छोटी-छोटी दुकानें सीधे नहर पर खुलती थीं। भीतर कलाकार व शिल्पकार अपनी कृतियों पर झुके उन्हें गढ़ने में मग्न थे। दुकानें सुन्दर वस्तुओं से भरी पड़ी थीं। दुकानों में हर प्रकार की सजावट की वस्तु, जैसे अखरोट के नक्काशीदार मेज-कुर्सी,

दरी व कालीन, रंगीन पेपरमैशी की कृतियां बिखरी पड़ी थीं।

पतली नहर से होते हुए वे भीड़भाड़ के इलाके से आ गये। अब आड़ू और सेब के बागों से घिरे बड़े-बड़े मकान नजर आने लगे। फिर वे भी छूट गये। ऊंचे, शानदार पॉपलर के वृक्षों से घिरे खेत सामने थे। नदी के दोनों किनारों पर नरकट, सरहरी की लंबी घास और सरपतों की झुकती डालियां थीं।

"वह रहा।" नीना चिल्लाई। वे पूर्वपरिचित स्थान में पहुंच गये थे। "इसी जगह दोनों लड़के गायब हुये थे।"

कैद से छुटकारा

जिस समय अजीत कुटीर में था तथा नीना, रशीद और छोटू के साथ शिकारे में थी। बंदी आनंद मुसीबतों से लड़ रहा था।

टूटे कुटीर से भागते समय उसे दो आदमियों ने पकड़ लिया था। लड़ते-झगड़ते आनंद को वे किसी तरह डूंगे में खींच ले गये। आनंद ने मारपीट जारी रखी। हाथ-पांव बांधते समय और शरीर के चारों और मोटी रस्सी लपेटते समय उसे स्थिर रखना अत्यन्त कठिन था।

चंचल,बेचैन आनंद को रस्सी से पंछी की तरह बांध दिया गया। उसे एक कोने में डाल दिया गया। खिड़कियां सरका कर बंद कर दी गईं। और फिर वे चले गये।

आनंद असहाय व मौन पड़ा रहा, क्योंकि उसका मुंह भी रुमाल ठूंस कर बांध दिया गया था। गुस्से से वह फूस की छत को घूरता रहा। उन आदमियों को उसने तरह-तरह के गंदे नाम बके और बदले की हजारों योजनायें बना डालीं—जलती आग में उन दुष्टों को धकेलने से लेकर गहरे से गहरे सागर में उन्हें डुबो देने की बात उसने सोची। खीज व झुंझलाहट से भर उसने बार-बार मुट्ठी भींची और दांत किटकिटाये इससे अधिक वह कुछ कर भी नहीं सकता था।

इस सब से उसे थोड़ी शांति मिली। अब आसपास के क्षेत्र पर उसने गौर किया। बाहर से आती आवाजों ने उसे सचेत किया। वह समझ गया। डूंगा तट छोड़ रहा था। हिचकोले खाते डूंगे ने उसके शक को पुष्ट किया। कहां जा रहे थे वे? बाहर झांक कर उसने देखना चाहा।

मगर कुछ समय बाद डूंगे का डोलना बंद हो गया। अब डूंगा स्थिर था, शायद उसे बांध दिया गया था। कुछ समय तक लोगों की बातचीत की भनभन कानों में

पड़ी। फिर वह भी शांत हो गई। आनंद वहां पड़े-पड़े सोचते हुये सो गया।

ऐसा लगा जैसे वह घंटों सोता रहा हो। आंख खुलते ही वह पूर्णरूप से सतर्क हो गया। तभी अचानक याद आया कि वह घर से दूर एक डूंगे पर कैद था। उसे अजीत व नीना की याद आई। वे उसके विषय में सोच कर चिन्तित और आशंकित होंगे। जैसे भी हो उसे डूंगे से भाग निकलना होगा। बाहर की आहट पाने के लिये उसने अपना ध्यान केन्द्रित किया। मल्लाह कहां थे? अब उनकी कोई भनक नहीं आ रही थी। क्या वे डूंगे में नहीं थे?

तब तो बच भागने का यही अवसर है। पर कैसे? शरीर पर लिपटी रस्सियों से कसे हुए उसे ऐसा लग रहा था मानों अजायबघर में रखा मिस्र के किसी प्राचीन राजा का शव (ममी) हो।

यदि रस्सी काटने के लिये कुछ मिल जाये... उसने गौर से आसपास देखा। दृष्टि सामने कोने में रखी टोकरी पर पड़ी। उसे देख उसे बहुत खुशी हुई।

स्पष्ट था मल्लाह भोजन इसी स्थान में तैयार करते थे। कुछ पीतल व अलुमिनियम के पतीले, तसला, टीन, शीशियां इत्यादि एवं पकाने की सामग्री बेतरतीब इधर-उधर पड़ी थी। एक कोने में चौड़ी परंतु छिछली टोकरी थी। उसमें प्याज तथा आलू भरे थे। ढेर पर एक लंबी सब्जी काटने की छुरी रखी थी। आनंद ने प्रसन्न होकर रुमाल से बंधे होठों से सीटी बजाई। आह! यह तो उसके बड़े काम की चीज थी।

परंतु टोकरी पहुंच से दूर, कमरे के दूसरे छोर पर थी। उसके निकट पहुंचने के लिये उसे रेंगना होगा। वह अपने आप को घुमाता, मोड़ता एक-एक इंच, करके आगे बढ़ा। मगर थकान से चूर वह ज्यादा आगे नहीं बढ़ पाया, कुछ देर वहीं पड़ा रहा। उसने सतर्क होकर सुनना चाहा कि वे उसकी आहट तो नहीं सुन रहे हैं?

सब पहले की ही तरह था। बाहर गौरैया अब भी प्रफुल्लित स्वर में चहक रही थी। डूंगे की बाजू की दीवारों से जल अब भी धीमे-धीमे टकरा रहा था। बाहर सब जगह अब भी शांति थी।

'कहीं यह शांति भंग न हो जाये।' आनंद ने सोचा। टोकरी उलटने के लिये उसने बंधी टांगों द्वारा उसे एक लात लगाई। टोकरी केवल एक ओर खिसक गई।

'धत!' आनंद ने सोचा। टोकरी उलटाना भी इतना कठिन होगा उसने सोचा नहीं था। देखने में काम आसान लगता था। उसने अनेक प्रयास किये। कभी पांव से धकेला तो कभी कंधों से।

टोकरी केवल आगे-पीछे सरकती रही।

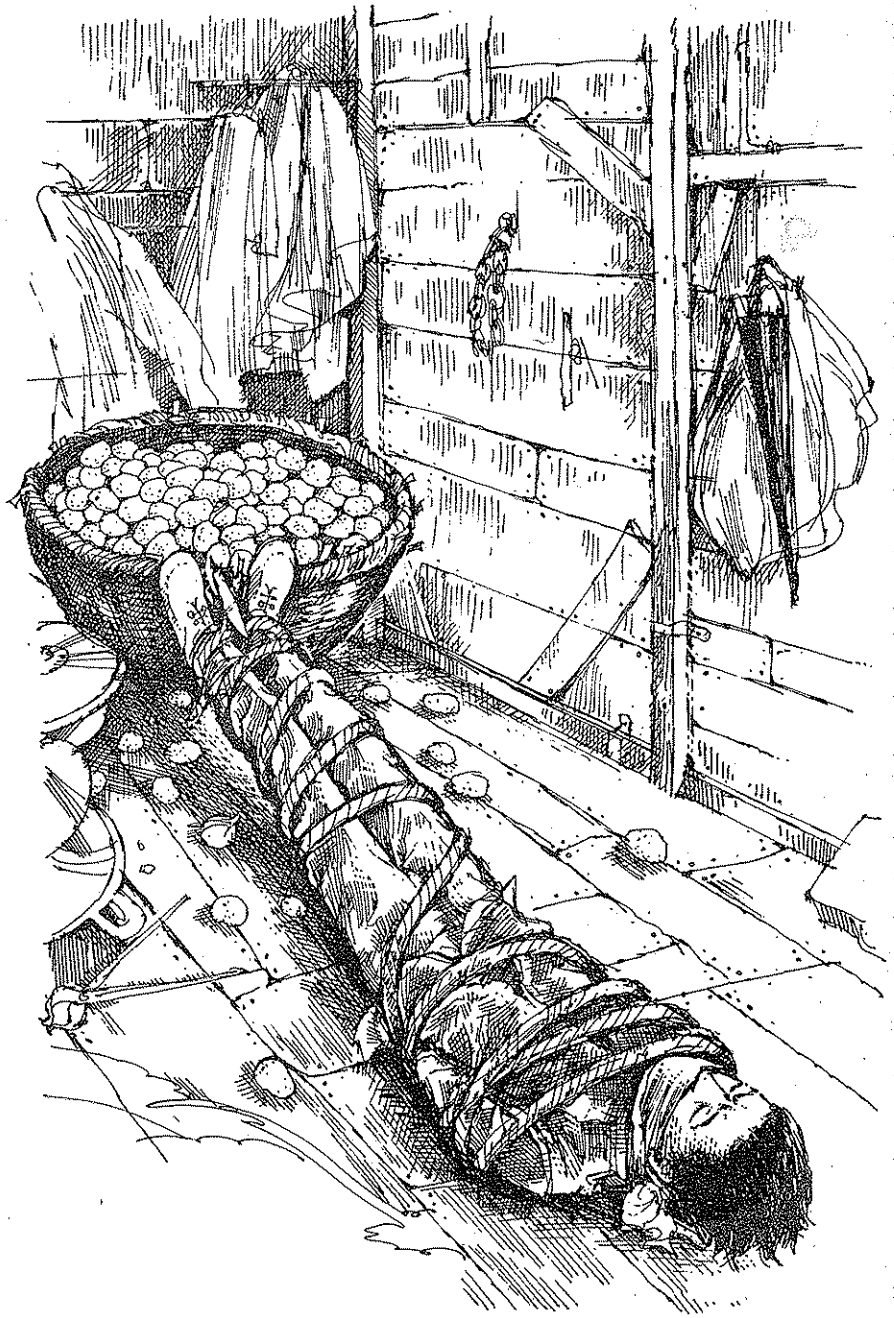

आखिर क्रोध और आवेश में भर, आनंद ने बंधे पांव ऊपर उठाये। फिर टोकरी पर जोरों से दे मारे। यहीं अंतिम प्रहार था। अभी तक उस पुरानी टोकरी ने उसके सब वार साहस से झेले थे। लेकिन वह यह वार न सह सकी और टूट गई। प्याज और आलू लकड़ी के फर्श पर चारों दिशाओं में लुढ़क चले।

आनंद निराश हुआ पर अगले ही क्षण उसके नेत्रों में खुशी की चमक आ गई। छुरी टूटी टोकरी में से एक ओर खिसक आई थी। धारवाला भाग टोकरी की बुनाई से बाहर झांक रहा था। चाकू की मूठ आलुओं के ढेर में दबी थी।

"वाह रे मेरी किस्मत! अब मैं बाजी जीत जाऊंगा। यदि मैं इस रस्सी को छुरी की धार पर रगड़ूं..."

लेकिन काम उतना आसान नहीं था जितना आनंद ने सोचा था। उसे अपने शरीर को ऐसी स्थिति में रखना था जिसमें छुरी की धार रस्सी को छू सके। आनंद ने अलग-अलग तरह से शरीर को मोड़ा। मगर हर बार वह चाकू से एकाध इंच दूर रह जाता।

बेचारा आनंद। वह प्रयत्न करता रहा मगर सफल न हो पाया। वह निराश हो चला। फिर उसे झील में लगी डुबकी याद आई। उस कठिन परिस्थिति से बच निकलने के बाद वह इस समस्या से भी जूझ सकता था। हार मानना कायरता होगी। जाल में फंसी मकड़ी की भांति वह भी बारंबार प्रयास करता रहा।

उसने पुनः विचार किया। शायद टांगें पूरी फैला कर टखनों को छुरी से रगड़ना अधिक संभव हो। यदि वह टखनों को एक विशेष दिशा में मोड़े तो काम अवश्य बन जायेगा। अत्यंत सावधानी से उसने शरीर को और निकट खिसकाया। फिर उसने टांगें फैलाईं, अरे! इस बार वह सफल हुआ। उसके पांव ठीक स्थान पर पड़े थे।

उसने छुरी की धार पर रस्सी को धीरे-धीरे दृढ़तापूर्वक रगड़ा। अत्यन्त सावधानी से वह ठीक-ठीक दबाव डालने का प्रयास कर रहा था। तनिक-सा भी अधिक दबाव पड़ने से काटना तो दूर, छुरी पुनः टोकरी में धंस जाती। चंचल आनंद को धीरता व एकाग्रता की सीख पाने के लिये यह एक अच्छा तरीका था।

मोटी रस्सी के विभिन्न धागे घिसकर टूटने लगे। कई मिनटों के अथक परिश्रम के पश्चात् आनंद ने तनाव कुछ कम होता अनुभव किया। और अंत में रस्सी खिसक कर गिरने लगी।

"छूट गया मैं।" आनंद ने सोचा। वह उछलकर खड़ा हुआ। शरीर के चारों ओर लिपटी रस्सी को उसने हिला कर दूर फेंका। अंत में उसने विजय पा ही ली। वह स्वतंत्र था।

वह नाव के भीतर दौड़ा। शायद बाहर झांककर वह किसी से सहायता मांग सके। संभव था किसी की निगाह उस पर पड़ जाये और वह उसकी रक्षा हेतु दौड़ा आये। लकड़ियों की तख्तियों से बनी दीवार में एक पतली दरार थी। एक नेत्र दरार में सटा आनंद ने बाहरी जग की झलक देखी। कितना आकर्षक दृश्य था।

"यह क्या सरकती खिड़की है? शायद मैं खोल पाऊं?" आनंद ने विचार किया। पैर का अंगूठा दरार में डाल उसने तख्ती सरकायी। दरार फैली और आनंद के सिर निकालने लायक जगह हो गई।

डूंगे के बाहर का दृश्य कितना सुहावना था। काले बादल उड़ गये थे और आकाश पुनः नीला दिखाई दे रहा था। दूर हरी-हरी घास थी। फूलों से लदी आड़ू की डालियां शीतल समीर में मस्ती से इठला रही थीं।

दूर नदी के उस पार, पुराने कुटीर के निकट एक शिकारा किनारे लगा हुआ था। उसमें बैठी आकृतियां कुछ परिचित सी जान पड़ीं। आनंद ने ध्यानपूर्वक देखा। उसका दिल बांसों उछला। वह उनको पहचान गया था। छोटे से शिकारे में बैठी तीन आकृतियां दूसरों की नहीं थी। वे थे नीना, रशीद और छोटू।

नदी पर

आनंद को अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हुआ। उसने पलक झपका कर देखा कि कहीं वह सपना तो नहीं देख रहा था? वे यहां कैसे पहुंचे, वह भी शिकारे में?

आनंद उत्तेजित हो चिल्लाया। "अरे! मैं यहां हूं।" कम से कम उसने यही बोलने की कोशिश की थी। लेकिन मुंह से निकला कुछ और। "हर...ग। बलग...ग्लग। हंफ।" क्योंकि उसके मुंह में अब भी कपड़ा ठूंसा हुआ था और रुमाल बंधा था। उसे निकालना भी असंभव था। हाथ तो पीछे बंधे थे। केवल पांव स्वतंत्र थे। आनंद ने गुस्से में डूंगे की दीवार पर एक लात मारी।

"मुझे उनका ध्यान अपनी ओर खींचने के लिये कोई दूसरा रास्ता खोजना होगा," उसने सोचा। वह वापस कमरे में लौटा। आसपास बिखरी वस्तुओं पर उसने नजर दौड़ाई।

एक बड़ी पीतल की हांडी कोने में चमक रही थी। आनंद को उपाय सूझा। उसको लकड़ी से पीटा जाये तो अवश्य शोर मचेगा। लकड़ी? नहीं, एक बेलन ढूंढ़ना आसान होगा और बेहतर भी। आनंद ने पैर से चीजें इधर-उधर हटाईं। बेलन

अलुमिनियम के बर्तनों के निकट पड़ा था।

किन्तु हाथ तो बंधे थे। बेलन को पैरों से कैसे उठाया जाये? असम्भव। अंगूठा भी कितना बेकार अंग था। उससे कुछ काम नहीं लिया जा सकता था। आनंद सोचने लगा। भला अंगूठे का क्या काम? किसी तरह झुक कर बंधे हाथों से उठाने के सिवाय और कोई चारा न था। बेलन उसकी टटोलती उंगलियों से दूर लुढ़क गया। जैसे ही उसे लगता कि वह उस लकड़ी के टुकड़े को पकड़ने ही वाला है। वह फिर आगे लुढ़क जाता।

"ग्लग-ग्लग (पकड़ लिया!)" वह चिल्लाया। दूसरे क्षण वह पुनः फर्श पर फिसला और बेलन फिर छूट गया।

"यह मत समझो तुम बच निकलोगे!" आनंद ने बेलन पर कठोर दृष्टि डाली। एक दो बार के प्रयास से बेलन पकड़ा गया। विजेता विजयी मुस्कान लिये उसे खिड़की के पास पीतल के बर्तन के निकट ले चला।

दूर नाव में अब भी लोग बैठे थे। आनंद का चेहरा खिल गया। अब वह उन्हें एक खुशी की बात से चौंका देगा। झुक कर उसने खाली बर्तन को बेलन से जोर से मारा।

'टंग।'

आवाज काफी ऊंची थी। आनंद आशंकित हो देखता रहा। नाव में बैठे लोगों को संदेश नहीं मिला, वे अब भी वैसे ही स्थिर थे। कहीं मल्लाहों ने तो आवाज नहीं सुनी? बाहर से चीख-पुकार तथा पांवों की आहट के लिये वह रुका रहा। पर कोई शब्द नहीं हुआ।

आनंद का साहस बढ़ा। उसने बर्तन पर फिर वार किया।

"टंग-टंग"।

उसने कई और वार किये।

अब रशीद ने सिर ऊपर उठाया। नीना व छोटू ने भी ऊपर देखा। आनंद लपक कर खिड़की के पास खड़ा हो गया। अपना सिर वह जोर से हिला रहा था। और शरीर को ऐसे झटके दे रहा था जैसे वह 'टिवस्ट' नाच कर रहा हो। ऐसा वह अपनी ओर ध्यान आकर्षित करने के उद्देश्य से कर रहा था। छोटू और रशीद ने एक-दूसरे को देखा और चप्पू उठाये। शिकारा चल दिया। नीना खुशी से ताली बजा रही थी और हाथ हिला रही थी।

"वह!" आनंद भी खुश हो चिल्लाया। उन्होंने उसे देख लिया था। वे आ रहे थे। फिर उसके चेहरे पर निराशा छा गई। उसने अन्य आवाजें भी सुनीं। शोर से

मल्लाह सतर्क हो गये थे। शायद वे कुछ समय के लिये डूंगे से बाहर चले गये थे और अब शोरगुल सुन लौट रहे थे।

आनंद ने प्रार्थना की। हे भगवान, छोटा शिकारा शीघ्र आये। अब वह अधिक दूर नहीं था, पर वह चाहता था वे और तेज आयें। जल्दी-जल्दी चलाने के लिये उसने हड़बड़ाते हुये इशारा किया।

उधर मल्लाह निकट आ रहे थे। उनके स्वर उसे साफ सुनाई दिये। वे डूंगे पर चढ़ने ही लगे थे।

आनंद घबराहट में संतुलन खो बैठा। वह खिड़की की ओर दौड़ा, पर हाथ बंधे होने से निकल नहीं पाया। वह उस पतली खिड़की में फंस गया। पैरों की धपधप और नाव के डगमगाने से वह जान गया कि मल्लाह डूंगे में आ पहुंचे थे। आनंद की व्याकुलता बढ़ गई। क्या वह फिर पकड़ा जायेगा?

अचानक रशीद की नाव डूंगे से टकराई।

"चलो!" छोटू कूद कर पटरी पर आया। वह आनंद की सहायता करने के लिये आगे लपका। उसने किसी प्रकार आनंद को खिड़की के बाहर खींच निकाला। फिर नाव में कूदने में मदद की। आखिर वह एक हंसी के साथ शिकारे को अलग खींच ले चला।

रशीद और छोटू भी जी जान लगा कर खेने लगे। कुछ ही क्षणों में उन्होंने दोनों नावों के बीच की दूरी बढ़ा ली।

"हम कहां चलें?" छोटू ने पूछा।

"अभी तो हमने एक को ही बचाया है," नीना प्रसन्न थी, "मगर दूसरा अब भी बंदी है।"

आनंद की आंखों में प्रश्न था। रुमाल अब भी मुंह पर बंधा था। "ग्लग-ग्लथ?" उसने पूछा।

"ओह! बेचारा!" नीना बोली, "इधर आना, मैं निकाल दूंगी।"

आनंद उसकी तरफ झुक गया। नीना की उंगलियां रुमाल की गांठों से जूझने लगीं। उसने जल्दी ही उन्हें खोल लिया। अब कहीं आनंद अपने भावों को शब्दों में प्रकट कर पाया।

"जानवर कहीं के! जंगली बदमाश!" देर से दबाई खीज चीखों में निकली, "पाजी कहीं के! मुझे बांध दिया! जाने क्या समझते हैं अपने को! मैं...मैं दिखा दूंगा उनको।"

"ठीक है, ठीक है।" नीना ने सान्त्वना दी। वह आनंद के पीठ पीछे बंधे हाथों

की गांठों से उलझ रही थी। गांठें मजबूत थीं। चाकू होता तो काम आसान हो जाता। "हिलो मत आनंद। इतना हिलोगे तो मैं कैसे खोलूंगी?"

आनंद ने हिलना बंद किया। "वह देखो," वह चिल्लाया, "वे लोग! हमारा पीछा कर रहे हैं?"

दोनों मल्लाह पानी में एक नाव उतार तेजी से चप्पू चलाते निकट आ रहे थे।

"अब क्या होगा?" नीना घबरा गई, "वे हमें पकड़ लेंगे।"

"फिक्र नहीं," छोटू ने आत्मविश्वास से कहा, "वह नहीं पकड़ेगा। चलाओ रशीद तेज!"

"मेरा हाथ जल्दी छुड़ाओ नीना," आनंद ने कहा, "और घबराओ नहीं, इससे काम और गड़बड़ होगा।"

नीना की उंगलियां झटपट काम कर रही थीं।

"अजीत कहां है?" आनंद ने पूछा।

"मालूम नहीं। पर हमें शक है वह कुटीर में है। शायद वह भी तुम्हारी तरह बंदी हो गया है। मैं खुश हूं..."

"क्या?" आनंद ने आग-बबूला होते हुये बीच में ही टोका, "अजीत? पकड़ा गया?" उसने शरीर घुमा कर कुटीर की ओर क्रोधित निगाहें डाली। "दुष्ट कहीं के। चलो! जल्दी से उसे बचाया जाय। बेचारा अजीत।"

"ओह आनंद। गांठ खुलने ही लगी थी और तुमने उसे मेरे हाथों से खिसका दिया। उधर घूमो।" नीना खिन्न होकर बोली।

मल्लाह निकट पहुंच रहे थे। छोटू और रशीद दूरी रखने के प्रयास में लगे थे। छोटू के झुर्रीदार माथे पर पसीने की बूंदें झलक रही थीं। रशीद का चेहरा एकाग्र था। अब वे नदी-तट के निकट थे। दूसरी नाव अब भी मंझधार में थी।

नीना अपने प्रयास में सफल हो रही थी। अंतिम गांठ भी खुल गई। "यह लो।" उसने रस्सी खोलते हुये खुशी से कहा।

"अहा!" आनंद चिल्लाया। अपनी बांहों को तान वह बड़ी प्रसन्नतापूर्वक उन्हें हिलाने लगा। फिर मुट्ठी बांध उसने पीछा करते मल्लाहों को मुक्का दिखाया, "धूर्तों। अब देखना हम क्या कर सकते हैं। अभी मैंने हार नहीं मानी।"

"क्यों व्यर्थ चिल्ला रहे हो?" नीना बोली, "देखो, हम आ पहुंचे। अब हमें क्या करना चाहिये?"

"कुटीर में जाकर अजीत की रक्षा।" कहते हुये आनंद किनारे पर कूदा।

"पर... पर कैसे?"

"देखा जायेगा। तुम सब मेरे पीछे आओ।" और सदा की भांति अब भी अधीर तथा लापरवाह, आनंद तेजी से कुटीर की ओर लपका।

उसके पीछे दौड़े नीना, रशीद और अंत में छोटू जो किसी भी बात में उनसे पीछे नहीं रहना चाहता था।

बचाव

"जल्दी!" आनंद चिल्लाया, "नहीं तो वे मल्लाह भी यहां आ जायेंगे।"

"मगर तुम्हारा इरादा क्या है?" हांफती तथा आशंकित नीना ने प्रश्न किया।

उसके भाई ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह सामने के द्वार तक पहुंच उस पर घूंसों और लातों की वर्षा कर रहा था। जब तक अन्य लोग आते उसने इतना शोर मचा दिया था कि आसपास मीलभर तक के लोग सतर्क हो जायें।

"खोलो!" वह चिल्लाया, "नहीं तो मैं इस पुराने दरवाजे को तोड़ डालूंगा। खोलो, बेवकूफो।"

दरवाजा अचानक खुल गया। आनंद अंदर दौड़ा। पीछे-पीछे रशीद, छोटू और नीना अंदर गये।

कमरा पूर्व की भाति अब भी अंधकार में था। पर अंधेरे में भी सामने खड़े पीले बालोंवाले नवयुवक को आनंद ने देख लिया। दरवाजा खुला और प्रकाश उसके चेहरे पर पड़ा। वह मुंह बाये हक्काबक्का देख रहा था। उस गुप्त स्थान में यह अजब टोली अचानक कैसे आ पहुंची?

अंदर आते ही छोटू ने लपक कर बाहरी दरवाजा भीतर से बंद कर लिया।

"अब मल्लाह नहीं पकड़ता।" उसका स्वर संतुष्ट था। वह दरवाजे के सामने खड़ा हो गया ताकि नवयुवक खोल न सके।

लेकिन नवयुवक का ऐसा कोई इरादा नहीं था। उसकी दृष्टि अंदर घुसते आनंद के चेहरे पर गई थी। और वहीं पर वह अब भी जमी थी।

"पर...पर..." देर तक चकित दृष्टि से घूरने के पश्चात् उसने पूछा, "तुम्हें क्या मैंने अभी-अभी छत पर अटारी में बंद नहीं किया था? तुम यहां कैसे आये। क्या तुम फिर भाग निकले?"

आनंद समझ गया। उसका मतलब अजीत से था। मुस्कराते हुये वह बोला, "और क्या? मैं फिर बच निकला। तुमने क्या सोचा—मुझे बांध कर रख सकोगे?"

उसके स्वर में तिरस्कार था। भाई के विषय में पूछते-पूछते वह चुप रह गया।

"वाह, तुम तो कमाल के तिलस्मी लड़के हो।" नवयुवक ने विस्मित स्वर में कहा, "यह तीसरी बार तुम निकल भागे हो, क्यों? आखिर तुम हो कौन, भाई? सुपर बॉय?"

'अच्छी उलझन में फंसा है।' आनंद ने सोचा, 'मैं तो पहली बार ही आया हूं। मगर मैं क्यों बताऊं सच्ची बात?' और वह चुप रहा।

"हां, हां, मैं सुपर बॉय हूं।" उसने शान से डींग हांकी और तुम मेरे रास्ते से हट जाओ, वरना देख लेना। तुम्हारे दूसरे साथी कहां हैं?"

"वे चले गये," उस व्यक्ति ने दबे स्वर में स्वीकार किया, "सच कहता हूं, तुम अद्भुत और महान हो। तुम्हारी हिम्मत की मैं दाद देता हूं। कैसे करते हो तुम यह चमत्कार?" उसका स्वर नरम और दबा था, मगर आनंद ने उसकी आंखों से झांकती धूर्तता पहचान ली। अपनी ओर बढ़ते कदम भी उसने देख लिये।

"खबरदार, जो आगे बढ़े," वह चिल्लाया। जैसे ही नवयुवक ने आगे लपक उसका कंधा पकड़ना चाहा, वह झट समय पर पीछे हट गया। "चलो लोगो।" वह चीखा, "पकड़ लो इसे। अभी यह अकेला है।"

छोटू नवयुवक की पीठ पर झपटा। उसने गर्दन कस कर जकड़ी। युवक उन चारों के हमले से बच नहीं पाया। बच्चों ने उसे दूसरे कमरे में धकेल दिया। आनंद ने कहा सब किवाड़ व खिड़कियां देख लो जिससे बंदी भाग न पाये। उन लोगों ने झट दरवाजा बंद कर के उसे बंदी बना दिया।

"वाह। हमने कितनी सफाई से अपना काम किया।" आनंद ने आह भरी।

"अटारी।" नीना को याद आई "उसने छत के कमरे के विषय में कहा था। वहीं होगा अजीत।"

"चलो, उसे ढूंढ़ा जाये," आनंद चिल्लाया। चारों गिरते-पड़ते, ठोकर खाते, हंसते-खिलखिलाते, एक-दूसरे को पुकारते अंधेरी सीढ़ी पर चढ़ने लगे।

नीचे बंद कमरे से युवक का स्वर सुन पड़ा, "अब मैं मान गया, श्रीमान! आप सचमुच सुपर बॉय हैं। नमस्कार सुपर बॉय, आपको मेरा शत-शत प्रणाम!" साथ ही एक मजेदार हंसी से कमरा गूंज उठा।

सब बच्चे, विशेषकर आनंद, खिलखिला उठा। सच, आदमी अत्यन्त विनोदी था।

वे शोर मचाते ऊपर के अंधेरे गलियारे में जा पहुंचे। आनंद का सिर छत को स्पर्श कर रहा था। वह सिर झुकाकर राह दिखाता आगे चल रहा था, अन्य बच्चे

पीछे-पीछे राह टटोलते आ रहे थे। अंत में वह उस छोटी सीढ़ी के निकट पहुंचा जो गलियारे को छत पर लगे दरवाजे से जोड़ती थी।

दरवाजा साधारण चटकनी से बंद था। आनंद ने झटपट खोला। दरवाजा खोल छत के छेद से वह ऊपर गया। अगले क्षण वह अटारी के फर्श पर खड़ा था।

सामने चकित मुद्रा में खड़ा था अजीत। सीढ़ी से आते आनंद पर दृष्टि पड़ते ही वह हर्ष से झूम उठा। अजीत के पीछे खड़ी थी दोनों युवतियां, ऐन व जेन, जिन्हें लापता माना जा रहा था और जिनको वे अब तक ढूंढ़ रहे थे।

आनंद ने एक लम्बी, धीमी सीटी बजाई।

"देखो, कौन है यहां।" वह चिल्लाया। "सब इकट्ठे मिल गये।"

"कौन?" नीना की आवाज आई, "मुझे देखने दो। हटो ना आनंद। तुम मेरा रास्ता रोके हो।"

आनंद ने बहन के ऊपर आने के लिये रास्ता छोड़ा। अजीत मदद करने दौड़ा।

"नीना! कितनी खुशी हुई है, तुम्हें देख!" वह बोला।

"अजीत! हमें शक था तुम यहां होंगे।" नीना का चेहरा खिल गया, "पर सबके सब यहीं मिलेंगे मैंने कभी नहीं सोचा था।" यात्रियों की ओर देख वह बोली, "आखिर हमने आपको ढूंढ़ ही लिया। मैं जानती थी आप जीवित होंगी। मगर उन्होंने क्यों पकड़ा आपको? क्या रहस्य है?"

ऐन ने मुस्करा कर उंगलियों से अपने सुनहले केश संवारे, "हम सब बतायेंगे, लेकिन सबसे पहले हम तुम्हें धन्यवाद देंगे। अब सर्वप्रथम हमें एक काम करना है।"

"वह क्या?" आनंद ने पूछा।

"कुछ कागजात पुलिस को देने हैं," जेन ने उत्तर दिया, "वह बहुत आवश्यक है। कागजातों में ऐसी गुप्त सैनिक जानकारी हैं जो दुश्मन के हाथ नहीं पड़नी चाहिये।"

"अरे, क्या वे बदमाश यही चाहते थे?" नीना ने पूछा, "क्या वे कागजात लेना चाहते थे?"

ऐन तथा जेन ने चुपचाप सिर हिलाया, मगर आनंद से रहा न गया, "देशद्रोही, राष्ट्रविरोधी। उन्हें किसी तरह पकड़ना होगा। अच्छा हुआ हमने उस आदमी को बंद कर दिया।"

अब नीना को मल्लाहों की याद आई। वे बाहर ताक में बैठे होंगे, उसने औरों को बताया।

"पर अब हम सात जने हैं। वे हमारा क्या बिगाड़ लेंगे?"

"फिर भी," अजीत ने समझाया, "हममें से कोई भी यदि पकड़ा गया तो ठीक नहीं होगा। मान लो नीना या रशीद कोई उनके हाथ आ जाये तो हम भागना नहीं चाहेंगे।"

"ठीक कहा," ऐन ने माना, "इधर से निकलने का कोई अन्य उपाय ढूंढ़ा जाये।"

"झटपट सोचो। अन्यथा लोग लौट आयेंगे। या नीचे बंद युवक निकल आयेगा या बाहर ताक लगाये दोनों व्यक्ति दरवाजा तोड़ अंदर घुस आयेंगे। कुछ भी हो सकता है।" जेन ने चेतावनी दी।

अजीत को एक उपाय सूझा। निकट बुला उसने जो बात सुझाई वह सब ने मान ली। सातों चुपचाप नीचे उतरे। अजीत ने एकाएक जल्दी से किवाड़ खोला। वह बाहर भागा। दरवाजा अंदर से झटपट बंद कर लिया गया।

"वह रहा!" एक मल्लाह ने पुकारा। भागते लड़के के पीछे वह दौड़ा। दूसरे व्यक्ति ने भी लड़के का पीछा किया। जब दोनों कुटीर से दूर हो गये, दरवाजा एक बार पुनः खुला। अन्य लोग भी निकले, और भिन्न-भिन्न दिशाओं में दौड़ पड़े। जब तक उन दो व्यक्तियों ने किसी एक का पीछा करना चाहा, सब उनकी पकड़ से बाहर थे।

उधर अजीत ने शिकारे की दिशा में कदम बढ़ाये। बीच राह में वह दूसरी ओर मुड़ गया। उनको चकमा देते हुये वह चिनार उपवन की ओर दौड़ा। दोनों व्यक्तियों ने उसका पीछा करने का प्रयास किया पर उनके भारी बूढ़े पांव अजीत की बराबरी नहीं कर पाये। हांफते, दम भरते उन्होंने हार मान ली। कुछ देर एक अनमना-सा नीना के पीछे दौड़ा, मगर वह कुछ ही क्षणों में आगे निकल गई और पेड़ की ओट में ओझल हो गई। आदमी ने हार मान ली। कुछ समय पश्चात् सातों बाजार के निकट चौराहे पर मिले।

"हमने हरा दिया उन्हें।" आनंद विजय की उमंग से भरा था, "तुम्हारी योजना कमाल की थी, अजीत।"

अजीत संकोच से मुस्कराया।

"अब हम टैक्सी में परीमहल चलें," ऐन ने कहा, "मैं लिफाफा निकाल लूंगी। आखिर मैं इस कार्य से छुटकारा पाऊंगी।"

परीमहल

बच्चे एक बात भूल गये। दोनों मल्लाह अब बंद कमरे से बंदी युवक को छुड़ाने में समर्थ थे। एक व्यक्ति ने जब तक अजीत व नीना का पीछा किया, दूसरा कुटीर लौट आया। दरवाजा पीटने का स्वर सुन वह खुले किवाड़ से कुटीर में गया। बंद युवक को उसने दरवाजा खोल कर निकाला।

"कहां हैं वे?" बाहर आते ही युवक ने पूछा।

जिस दिशा में अजीत भागा था मल्लाह ने इशारे से बताया। युवक बाहर दौड़ा। वह चतुर था। वह सीधा बाजार की ओर गया। वहां पूछताछ की। क्या किसी ने बच्चों की एक टोली, एक बौने और दो विदेशी नवयुवतियों को देखा था?

लोगों ने हामी भरी। एक ने यह भी बताया कि तथाकथित व्यक्तियों ने परीमहल के लिये टैक्सी ली थी। युवक खुश था। उसने पांच रुपये पुरस्कार स्वरूप उस आदमी को पकड़ा दिये। उसे महत्वपूर्ण सुराग मिल गया था।

उधर किराये पर ली टैक्सी में सब बीच शहर से निकल रहे थे। उन्हें पीले बालोंवाले युवक के पीछा करने का कुछ भी पता न था। वे हंसते बातचीत करते खुशी-खुशी परीमहल जा रहे थे। कुछ देर में उन्होंने पुल पार किया। अब डल झील पुनः सामने थी।

दिन ढलने को था। झील के जल में डूबते सूर्य की हलकी पीली परछाई पड़ रही थी। झील के सुनहले रूप को देख नीना ने एक ठंडी सांस ली। कितना अद्भुत सौन्दर्य था।

वे झील के झिलमिल शांत जल के बाजू से गुजरे। घाट और दुकानें पीछे छूट गईं। टैक्सी मुड़ कर वृक्षों से लदी पर्वतीय ढलान पर चढ़ने लगी। परीमहल झील के निकट पहाड़ी पर था। वह चश्माशाही तथा उनके घर से बहुत दूर नहीं था।

टैक्सी स्मारक के बाहर रुक गई।

"सबके अंदर जाने की आवश्यकता नहीं है," ऐन ने कहा, "मैं जाकर लिफाफा ले आऊंगी। आशा है वह अभी भी वहीं होगा। किसी बदमाश ने उसे खोज कर निकाल न लिया हो।"

"मैं भी चलूंगा," आनंद बोला।

"चलो। मुझे ढूंढ़ने में समय लगेगा। मुझे ठीक से याद नहीं है मैंने लिफाफा कहां छिपाया था। तब तक चाहो तो इधर-उधर घूम लो।"

ऐन, जेन तथा आनंद अंदर गये। स्थान दिलचस्प था परन्तु लड़के घूमना नहीं चाहते थे। नीना थकी थी। वह रशीद तथा छोटू के साथ बाहर बैठी रही।

बाकी लोग पत्थर के मुख्य द्वार से अन्दर गये। नीना ने एक अच्छा स्थान ढूंढ़ा। वहां से झील का दृश्य दिखता था। वह घास पर बैठ सुनहले ताल तथा उसके उस पार खड़े पर्वतों का मनमोहक दृश्य देखने लगी। बादलों की छोटी-छोटी स्वर्णिम टुकड़ियों ने आकाश को ढांप लिया था। बीच-बीच से छनती सुनहली किरणें धरती पर तिरछी पड़ रही थीं। सब कितना आकर्षक तथा स्वप्निला लगता था।

शायद लिफाफा ढूंढ़ना कठिन था। ऐन को काफी समय लग रहा था। लेकिन नीना को इस पर आपत्ति नहीं थी। आकाश के बदलते रंग, और दूर झील में पड़ती परछाइयों को देख वह मुग्ध थी। स्वर्ण आभा अब लाल व नारंगी रंग में परिवर्तित हो गई थी। उधर पर्वतों के पीछे से स्याह परछाइयां बढ़ती आ रहीं थीं। कुछ ही क्षणों में अंधेरा घना हो जायेगा और समूचा दृश्य एक काली स्याही से पुत जायेगा। और फिर नभ में नन्हें-नन्हें चमकते सितारे छिटक जायेंगे।

रशीद की पुकार ने नीना का ध्यान तोड़ा।

"नीना देखो! कौन आता।"

चौंक कर नीना पीछे मुड़ी। एक टैक्सी शोर करती कुछ दूरी पर रुक रही थी। उसमें से उतरे—पीले केश वाला एक युवक, एक गंजा व्यक्ति और एक मनुष्य जिसके बाल लाल थे। सबसे पीछे था कादिर।

नीना उछल कर खड़ी हुई। दुष्ट व्यक्ति यहां? पर कैसे? सोचने का समय नहीं था। उसे झट पट कुछ करना होगा।

"हम छिप जायें।" वह फुसफुसाई।

तीनों झटपट एक चट्टान के पीछे छिप गये।

"अब क्या होगा?" वह फुसफुसाई," हमें बाकी लोगों को सावधान करना होगा।"

"हम जाता।" रशीद ने स्वेच्छा से कहा, "हम चट्टान फांद अंदर का रास्ता निकालेगा। हम उन आदमी से पहले पहुंच जायेगा।"

"मैं भी चलूंगी।" नीना खड़ी हो गई।

"नहीं, तुम यहां रहेगा। तुम अंधेरे में गिरेगा। हम अकेले जाता।"

पर नीना ने हठ किया। छोटू चट्टान के पीछे दुबका रहा। कादिर के सामने उसे बाहर निकलने का साहस नहीं था। रशीद व नीना स्मारक में प्रवेश का दूसरा रास्ता खोजते, छिपते हुये, नीचे दौड़े।

रशीद फुर्ती और चुस्ती से पत्थर व चट्टान के पीछे छिप, कंटीली झाड़ियों को हटा,भागा। पीछे-पीछे नीना हड़बड़ाई हुई भागी।

वह एक प्रकार का चमत्कार ही था, परंतु वे पहले पहुंचने में सफल हो गये। वे व्यक्ति अभी ऊपर चढ़ रहे थे और द्वार तक नहीं पहुंच पाये थे। कहां थी लड़कियां?

चारों एक पत्थर की दीवार के निकट खड़े थे। दीवार में छोटे-छोटे प्रकोष्ठ बने थे। अजीत जेब में रखी मार्गदर्शिका निकाल कुछ पढ़ रहा था। और लोग चाव से देख रहे थे और उसकी बातें सुन रहे थे।

"परीमहल एक बौद्ध मठ के रूप में निर्मित हुआ।" अजीत ने जानकारी दी, "बाद में शाहजहां के बेटे दारा शिकोह ने इसे ज्योतिष विद्या के विद्यालय में बदल दिया। उसने यहां एक विशाल पुस्तकालय बनाया। वह..."

"अजीत!" नीना ने पुकारा।

"अरे, तुम भी आ गई?" अजीत ने पढ़ना बंद किया, "मैंने तो सोचा..."

"कागजात मिल गये?" नीना ने टोका।

"हां। क्यों?"

"वे यहां आ गये। कादिर तथा दूसरे सब।"

ऐन ने बात संभाली। "सुनो," उसने फुर्ती से आज्ञा दी, "घबराने की बात नहीं है। अब हम सब अपने बल पर हैं। सब छिप जायें। यहां कई छिपने लायक स्थान हैं। दस मिनट बाद हम टैक्सी के निकट मिलें। सावधानी बरतना। जाओ। भाग्य साथ देगा।"

पलक झपकते छः जने खंडहर के अंधेरे में अदृश्य हो गये। जब तक वे व्यक्ति भीतर आये छः आकृतियों में से एक भी दृष्टिगोचर नहीं थी।

प्रत्येक व्यक्ति लुका-छिपी का अपना खेल, खेल रहा था। नीना को लुका-छिपी का खेल खेले अनेक वर्ष हो चुके थे। पर उसे नियम अभी भी याद थे। ढूंढ़ने वाला देख न पाये और छिपने वाला बीच स्थल पहुंच जाये।

वह एक पतले गलियारे में छिपी थी। एक मिनट पश्चात् उसने झांक कर देखा। रास्ता साफ है या नहीं सामने की दीवार के सम्मुख एक गंजा व्यक्ति टहल रहा था। वह झट गलियारे में खुलते एक छोटे प्रकोष्ठ के भीतर घुस गई। कितना अंधेरा था वहां। ऊपर छत पर कुछ फड़फड़ाती आहट हुई। नीना ने भयभीत दृष्टि घुमाई। उसके मुंह से चीख निकली। एक काला घिनौना चमगादड़ कोने में लटका अपनी पीली मोती-रूपी आंखों से उसे घूर रहा था। वह चीखती चिल्लाती बाहर भागना चाहती थी पर बड़ी कठिनाई से उसने इस इच्छा को दबाकर, फिर बाहर झांका।

सामने कादिर था। वह इसी तरफ आ रहा था। बेचारी नीना। उसे दो चीजों में से एक को चुनना था। उसने प्रकोष्ठ और उसमें लटके चमगादड़ को चुना। वह

वापस अंधेरे में लौट गई। पर वह छत से निगाह चुराती रही, क्योंकि उन पीली आंखों से नजर मिलाने की उसकी कतई इच्छा नहीं थी।

एक मिनट बाद, उसने पुनः बाहर झांकने का साहस किया। तीनों दूसरी तरफ टहलते जा रहे थे। एक दीर्घ श्वास ले वह बाहर लपकी। हरी घास को उसने झट पार किया और बाहर जाने के द्वार की ओर दौड़ी। दूसरे क्षण वह बाहर थी, और निकट खड़ी टैक्सी की ओर भाग रही थी। अब तक उसे किसी ने देखा नहीं था। एक खिलखिलाहट के साथ वह टैक्सी की पिछली सीट पर जा गिरी। अजीत ने उसके लिये टैक्सी का दरवाजा खोल दिया था।

तब वह भी आ गया था। और कौन आया?

"तुम्हारा नंबर चौथा है।" आनंद ने सामने की सीट पर से मुस्कराते हुये बताया, "मैं सबसे पहले पहुंचा।"

"क्या?" उसके भाई ने रुष्ट स्वर में कहा, "तुम कैसे प्रथम थे? मैं तुमसे पहले आया था।"

"फिर उलटी बात की। याद नहीं, मैं अपना दरवाजा फटाक से बंद कर चुका था, जब तुम अपना खोल ही रहे थे?"

"क्या बकवास करते हो? वह तो..."

"ओह चुप भी रहो।" नीना ने टोका, "और लोग कहां हैं?"

रशीद का स्थान तीसरे नंबर पर था। नीना ने उसे खुशी-खुशी सामने की सीट पर से मुस्कराते देखा।

"कहीं वे लड़कियां फिर न पकड़ी जायें...नहीं, वह रहीं।" आनंद चिल्लाया। नीना ने दोनों लड़कियों को द्वार से बाहर भागते देखा। वे दौड़ के टैक्सी तक आईं और हांफते हुये अंदर जा बैठीं।

"मेरा खयाल है उन्होंने मुझे देख लिया है।" ऐन ने दरवाजा बंद करते हुये कहा। "हमें जल्दी से चलना चाहिए। झटपट टैक्सी स्टार्ट करो। सब आ गये?"

"हां...एक, दो, तीन... अरे। केवल छः हैं।"

"कौन गायब है?"

सब एक-दूसरे का मुंह देखने लगे।

"छोटू। कहां है वह?" अजीत चिल्लाया।

नीना द्वार पर टकटकी लगाये थी।

"वह देखो, वह रहा कादिर।" वह घबरा कर चिल्लाई, "उसने हमें देख लिया। चलो चलें।"

"बिलकुल नहीं, बेचारे छोटू को हम कैसे छोड़ दें? कादिर उसकी चटनी बना देगा," आनंद ने विरोध किया।

"मगर कहां गायब हो गया वह? उसे यहीं रहना था," जेन बोली, "हमें चलना चाहिये।"

"नहीं।" सब बच्चों ने एक स्वर में कहा।

भाग्यवश तभी छोटू वृक्षों की ओट से बाहर निकला। अपनी अजीब टेढ़ी चाल और भारी कदमों से वह धीरे-धीरे आ रहा था।

"हम आता," उसने उन्हें शांत स्वर में बताया।

"जल्दी।" आनंद चिल्लाया।

और तभी छोटू ने एक दृष्टि पीछे डाली। उसकी नजर जैसे ही द्वार पर खड़े कादिर के दोहरे शरीर पर पड़ी, छोटू दुगनी गति से आगे दौड़ा।

"हम आता! रुको!" वह घबराकर चिल्लाया। अगले ही क्षण टैक्सी स्टार्ट हो चुकी थी।

ड्राइवर ने गाड़ी को जल्दी से घुमाया। जोर की कर्कश आवाज हुई। नीना ने मुड़ कर तीनों आदमियों को देखा। वे तेजी से अपनी कार की ओर भाग रहे थे।

बच्चों की बहादुरी

"अब कहां चलें?" नीना ने पूछा।

"पुलिस स्टेशन," ऐन का उत्तर था, "सबसे पहले मैं इन कागजों से छुटकारा पाना चाहती हूं।"

उसने चालक को निकट के पुलिस चौकी ले जाने को कहा। टैक्सी की गति तेज हो गई परंतु अंदर बैठे आशंकित यात्रियों के लिये गति अब भी पर्याप्त नहीं थी।

"ओह कृपया तेज चलायें," नीना ने मिन्नत की, "नहीं तो वे पकड़ लेंगे।"

टैक्सी ढलान पर तीव्रता से उतरी। नीना ने पुनः पीछे देखा। दूर दो बत्तियों का धुंधला प्रकाश दिखाई दिया जिनका आकार बढ़ता जा रहा था। दूसरी गाड़ी अंधाधुंध गति से निकट आ रही थी।

"तेज, ड्राइवर!" सामने की सीट पर बैठे आनंद ने जोर से कहा।

"क्या तुम दुर्घटनाग्रस्त होना चाहते हो?" चालक भुनभुनाया, "लगता है मेरी टैक्सी में कुछ गुंडे आ बैठे हैं। क्या है? चोरों की टोली है क्या?"

"क्या मतलब?" आनंद ने रुष्ट स्वर में कहा, "गुंडे और जासूस तो उस गाड़ी में हैं। हम उन्हें कुछ महत्वपूर्ण कागजात चुराने से रोक रहे हैं। याद नहीं, पुलिस चौकी हम जाना चाहते हैं वे नहीं।"

इस क्रुद्ध भाषण का कुछ असर हुआ। चालक शांत होकर गाड़ी चलाने की ओर ध्यान देने लगा।

अब वे मुख्य सड़क पर आ गये थे। यहां भीड़भाड़ थी। गति धीमी कर चालक सावधानी से चलाने लगा। परंतु दूसरी गाड़ी उसी गति से चली आ रही थी। कुछ ही देर में वह उनके निकट आ पहुंची। फिर वह आगे लपकी और उनके ठीक सामने जा कर रुक गई। उनका चालक भी कुछ कम नहीं था। टकराने से बचने के लिये उसने गाड़ी तेजी से मोड़ी। गाड़ी पुनः पीछे हटी और अगले क्षण वे फिर दौड़ रहे थे। टैक्सी दायें-बायें दिशा बदलती चली। भीड़ से बचते इधर-उधर से रास्ता निकालते वे आगे बढ़े।

सातों यात्री सीट थामे सांस रोके बैठे रहे। दूसरी गाड़ी फिर निकट आ पहुंची। इस तनाव और भयपूर्ण वातावरण में पीछा होता रहा। सड़क पर लोग ठहर कर घूरने लगे। कारें जल्दी से एक तरफ कर ली गईं।

नीना अपनी सीट पर पीछे लुढ़क गई और क्षीण स्वर में बोली, "अब कितनी दूर है?"

"बस पहुंच गये।" टैक्सी चालक ने विजयी स्वर में घोषणा की। एक तेज कर्कश आवाज के साथ गाड़ी घूमी और पुलिस चौकी के फाटक के अंदर घुस गई।

"पर वे लोग कहां हैं?" नीना ने पूछा।

"वे भला इस फाटक के अंदर क्योंकर आयेंगे?" आनंद हंसा, "वे भाग गये।"

"उन्होंने देखा कि हम उनकी सारी कोशिशों के बाद भी सफल हो गये," अजीत ने खुश होकर कहा।

"पर...पर वे तो बच निकले," नीना निराश थी।

"कोई चिन्ता की बात नहीं। मैंने उनकी कार का नंबर नोट कर लिया है। अब जल्दी से पुलिस को चल कर सब बात की जानकारी दें। अब हमारा काम तो पूरा हो गया," अजीत बोला।

"और कितनी अच्छी तरह," जेन ने प्रशंसा की, "तुम बच्चे अद्भुत हो। तुम्हारे देशवासियों को तुम पर गर्व होना चाहिये।"

"उस भयानक जेल से हमारा छुटकारा कराने के लिये हम तुम्हारे कृतज्ञ हैं," ऐन ने मुस्कराकर कृतज्ञता प्रकट की।

"नहीं, प्रशंसा योग्य तो आप हैं," आनंद ने शरमा कर उत्तर दिया," "आपने उन आदमियों का विरोध किया और कागजात देने से इनकार कर दिया।"

उन्होंने पुलिस इन्सपेक्टर के दफ्तर में प्रवेश किया।

तेजी से भागती कार जल्दी ही रोक ली गई। अंदर बैठे व्यक्तियों को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। उनके पास पाये गये जरूरी कागजात व प्रलेख भी जब्त कर लिये गये।

पुलिस ने कुटीर पर छापा मार कर नकशे, चित्र तथा जासूसों द्वारा प्रयोग में लाई जाने वाली अन्य सामग्री जब्त कर ली। गिरोह के अन्य सदस्य भी बड़ी शीघ्रता व दक्षता से बंदी बना लिये गये। सरकार ने बहादुरी के पुरस्कार के लिये न केवल मेहता बच्चों के लिये बल्कि रशीद तथा नन्हें छोटू के लिये भी सिफारिश की।

अंग्रेजी पदयात्री, ऐन ब्राउन तथा जेन फिलिप्स को इस मामले में किये कार्य के लिये विशेष धन्यवाद दिया गया।

आगे यात्रा करने से पूर्व लड़कियों ने एक रात्रि मेहता परिवार के साथ उनके अतिथि के रूप में बिताई।

दूसरे दिन सवेरे ही अपना बैग उठा वे चलने को तैयार हुईं।

"अब कहां जायेंगी आप?" आनंद ने ईर्ष्यालु स्वर में पूछा।

"अब हम लेह की ओर प्रस्थान करेंगे। परंतु हमें अपनी यात्रा को जल्दी ही खतम कर देना पड़ेगा क्योंकि छुट्टियां समाप्त होने वाली हैं," ऐन ने उत्तर दिया।

"सब घटनाओं के बाद भी हमारी यात्रा अद्भुत व आनंददायक रही," जेन बोली। "हम फिर भारत लौटना चाहेंगी—हिमालय में पदयात्रा करने के लिये।"

"और फिर 'सुनहली झील की ओर' जायेंगी? है न," अजीत, आनंद तथा नीना एक साथ हंस पड़े।